Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये हाथ

विनोद रस्तोगी

८.२
३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 8.2/30 RA
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या 26,680

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
भूतपूर्व उपकुलपति द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को दो हजार पुस्तकें सप्रेम भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

36,660
7-62

संख्याक प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

CHECKED 1973
Initial

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रोचक नाट्य-साहित्य

विष-पान	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
उद्धार	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
शपथ	(सांस्कृतिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
छाया	(सामाजिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.००
शतरंज के खिलाड़ी	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
समर्पण	(सामाजिक)	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२.००
शक-विजय	(ऐतिहासिक)	उदयशंकर भट्ट	१.७५
उर्मिला	(ऐतिहासिक)	पृथ्वीनाथ शर्मा	१.००
सुभद्रा-परिणय	(पौराणिक)	वीरेन्द्रकुमार गुप्त	२.५०
शक्ति-पूजा	(पौराणिक)	बां० मुखर्जी 'गुंजन'	१.५०
शान्ति-दूत	(पौराणिक)	देवदत्त 'अटल'	१.५०
मानव प्रताप	(ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
यशस्वी भोज	(ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
हर्षवर्धन	(ऐतिहासिक)	वैकुण्ठनाथ दुग्गल	१.००
समुद्रगुप्त	(ऐतिहासिक)	वैकुण्ठनाथ दुग्गल	२.००
पग-ध्वनि		आचार्य चतुरसेन शास्त्री	१.५०
वितस्ता की लहरें	(ऐतिहासिक)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
बहू-बेटी	(पारिवारिक)	श्रीकृष्ण	०.७५
समाज के स्तम्भ	(अनूदित)	सीताचरण दीक्षित	२.५०
भमि कन्या सीता	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
कला के लिए	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
अ-पूर्व बंगाल	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
कोरी करामात	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	२.००
रेलगाड़ी के डिब्बे	(एकांकी)	अरुण, एम० ए०	२.००
बादलों के पार	(एकांकी)	हरिकृष्ण प्रेमी'	३.००
आदिम-युग और अन्य नाटक	(एकांकी)	उदयशंकर भट्ट	४.००
सफ़र की साथिन	(एकांकी)	रामशरण शर्मा	२.००
एकांकी समुच्चय	(एकांकी)	जयनाथ 'नलिन'	३.००
भगवान मनु तथा अन्य एकांकी	(एकांकी)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०
विश्वामित्र और दो भाव-नाट्य		उदयशंकर भट्ट	३.००
आनन्द का राजपथ		सीताचरण दीक्षित	२.२५
नए हाथ	(सामाजिक)	विनोद रस्तोगी	३.००
उधार का पति	(हास्य)	वनमाला भवालकर	१.००
अभिज्ञान शाकुन्तल	(अनूदित)	इन्दुशेखर	३.००

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

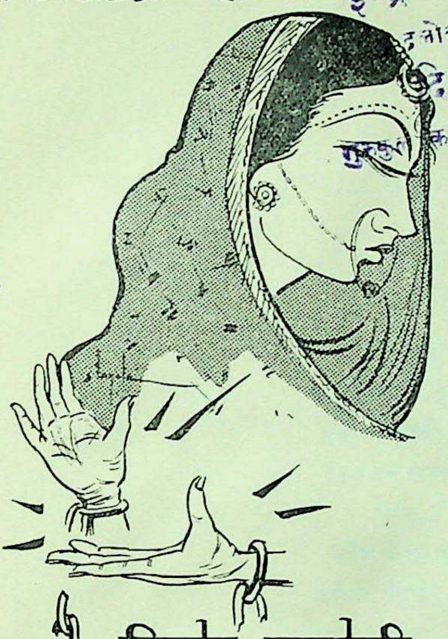

हाय हाथ

विनोद रस्तोगी

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक
रामलाल पुरी
संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीर गेट
दिल्ली-६

सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य दो रुपए

पुस्तक सं०
आगत सं०

मुद्रक
मूवीज़ प्रेस
चावड़ी बाज़ार
दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नये हाथ'
समर्पित है
उन नये हाथों को
जिन पर समाज,
राष्ट्र,
और विश्व का
भविष्य निर्भर है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

नाटक जन-जीवन को प्रभावित एवं आन्दोलित करने का सबलतम साधन है। साहित्य के इस सशक्त अंग का विकास जिस रूप में और जिस गति से होना चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है। हिन्दी नाटक की प्रगति को सन्तोषप्रद मानना अपने को धोखा देना है। इसके विकास की मन्द गति का प्रमुख कारण यह है कि कहानी, कविता और उपन्यास की भाँति नाटक की पूर्णता लिखित रूप में नहीं, वरन् अभिनीत होने में है। नाटक का लिखित रूप तो एक ढाँचा मात्र होता है; उसे रूप, रंग और आकार मंच पर ही मिलता है। नाटक की उपयोगिता प्रकाशित होने में उतनी नहीं, जितनी उसके अभिनीत होने में है। इसीलिए कहानीकार, कवि या उपन्यासकार की भाँति नाटककार को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं होती। नाट्य-कला तो सामूहिक कला है। निर्देशक, अभिनेता और नाटककार के पारस्परिक सहयोग के बिना अच्छे नाटक की सृष्टि नहीं हो सकती। नाटककार की कल्पना को साकार करनेवाले निर्देशक और अभिनेता ही होते हैं। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि नाटककार और नाट्य-मंडलियों में सक्रिय सम्पर्क हो।

विदेश में इस सम्पर्क और सहयोग की पूर्ण सुविधायें हैं। उन्नत रंगमंच होने के कारण वहाँ अधिकांश नाटक पहले खेले जाते हैं और बाद में प्रकाशित होते हैं। निर्देशक और नाटककार के बीच पूर्ण सहयोग की भावना है। नाटककार रिहर्सल में उपस्थित रहता है और निर्देशक के सुझाव पर अपने नाटक में आवश्यक संशोधन करने में संकोच अथवा अपमान को अनुभव नहीं करता। निर्देशक भी नाटककार की भावना का मान करता है और कभी भी उसके भावों की हत्या करने का दुस्साहस नहीं करता। इस प्रकार नाटककार, निर्देशक और अभिनेताओं के सामूहिक प्रयास से जो कृति सामने आती है वह सर्वांग सुन्दर और सफल होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे नाटककारों को यह सुविधा प्राप्त नहीं है। हिन्दी का कोई सुव्यवस्थित रंगमंच न होने के कारण नाटककार निर्देशकों के सम्पर्क में नहीं आ पाते। अधिकांश नाटक ड्राइंग-रूम में बैठकर, प्रकाशित कराने और किसी तिकड़म से कोर्स में लगवाने के उद्देश्य से ही लिखे जाते हैं। बहुत कम नाटककारों को रंगमंच का ज्ञान है। फलस्वरूप उनके नाटकों में लम्बे सम्वादों और जटिल दृश्यावलियों की भरमार रहती है। वे कृतियाँ तथा-कथित साहित्यिक भले हों, पर रंगमंचीय नहीं होतीं। अव्यवसायिक कलाकार उन्हें काफी काट-छाँट और परेशानियों के पश्चात् ही मंच पर प्रस्तुत कर पाते हैं। ऐसे नाटककारों के कारण ही हमें यह सुनना पड़ता है कि हिन्दी में रंगमंच के योग्य नाटकों का अभाव है।

हिन्दी नाट्य-साहित्य का विकास तभी सम्भव हो सकता है जब हमारे नाटककार निर्देशकों और नाट्य-मंडलियों के सम्पर्क में आयें। निर्देशक के सुझावों का मूल्य समझना बहुत आवश्यक है। अभी तो हमारे नाटककार अपनी लेखनी से लिखे हर वाक्य को ब्रह्म-वाक्य समझते हैं। निर्देशक द्वारा एक शब्द के उलट-फेर करने पर उन की भौंहों में बल पड़ जाते हैं। जब हमने पश्चिम से आधुनिक नाट्य-कला सीखने में किसी संकोच का अनुभव नहीं किया तो फिर हम पाश्चात्य नाटककारों से निर्देशकों के सहयोग का मूल्य क्यों नहीं समझते? निर्देशक के सुझावों पर नाटक में परिवर्तन करना अपमान की बात नहीं है।

नाटककारों के साथ-साथ निर्देशकों का भी कुछ कर्त्तव्य है। उन्हें नाटककारों की भावनाओं का मान करना सीखना चाहिए। ऐसी काट-छांट जिससे मूल कृति का रूप ही बदल जाये सर्वथा अवांछनीय है। यदि निर्देशक अपनी सीमा-रेखा को लाँघता है तो अनर्थ होने की सम्भावना है। हर निर्देशक नाटककार नहीं हो सकता। नाटककार की कृति में थोड़ा हेर-फेर करके यदि निर्देशक चाहे कि नाटककार उसे भी उस कृति का लेखक मान ले और कृति के लेखक के स्थान पर दोनों के नाम जायें, तो यह उस की दुराशा है। कोई भी स्वाभिमानी नाटककार इसके लिए सहमत नहीं होगा। निर्देशक और अभिनेता यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न भूलें कि नाटककार का स्थान उनसे ऊँचा—बहुत ऊँचा है। कालिदास अपनी कृतियों के बल पर अमर है, पर उसके नाटकों को अभिनीत करनेवाले कलाकारों और निर्देशकों को कोई नहीं जानता !

वैसे तो आये दिन स्कूल-कालेजों या सांस्कृतिक संस्थाओं में नाटक होते रहते हैं, पर हिन्दी का कोई उन्नत और सुव्यवस्थित रंगमंच नहीं है। राष्ट्रीय रंगमंच की स्थापना आज की सब से बड़ी आवश्यकता है। इसका दायित्व केवल सरकार पर ही नहीं, नाटककारों और कलाकारों पर भी है। राष्ट्रीय रंगमंच के साथ-साथ व्यवसायिक मंडलियों को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए। यह समझना भूल है कि फिल्म ने लोगों की रुचि को विकृत कर दिया है। लोगों में अच्छे नाटक देखने की भूख है। 'पृथ्वी-थियेटर्स' का हर नाटक लोग चाव से देखते हैं। टिकट की दर काफी ऊँची होने पर भी हॉल दर्शकों से भर जाता है। हर नगर में अव्यवसायिक कलाकार नाटक खेलते रहते हैं और दर्शक उन नाटकों को रुचि से देखते हैं।

सच बात तो यह है कि आज हमें नाट्य-कला की जो उन्नति दिखाई दे रही है उसके पीछे अव्यवसायिक मंडलियों का ही हाथ है। उपयुक्त साधन और सुविधाओं के अभाव में भी अव्यवसायिक मंच कुछ न कुछ कर अवश्य रहा है। इन कलाकारों के सामने अनेक कठिनाइयाँ रहती हैं। यदि इन्हें उचित मार्ग-दर्शन, प्रोत्साहन, प्रश्रय और साधन मिलें तो नाट्य-कला का विकास बहुत शीघ्र हो सकता है। अव्यवसायिक कलाकारों के लिए ऐसे केन्द्रों की व्यवस्था होनी चाहिए जहाँ वे अभिनय, निर्देशन आदि का नियमित अध्ययन कर सकें। इस दिशा में बम्बई के श्री अलकाजी का प्रयास स्तुत्य है। इधर कुछ दिनों से भारत-सरकार भी अभिनय-कला सीखने के लिए छात्र-वृतियाँ देने लगी है, पर यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरे के ही समान है। राज्य-सरकारों को इस दिशा में कदम उठाना चाहिए। रंगमंच सम्बन्धी शिक्षा देने के केन्द्रों की स्थापना के बाद ही हिन्दी के सुव्यवस्थित रंगमंच की स्थापना का स्वप्न पूरा हो सकता है।

कुछ स्थानों को छोड़कर शेष स्थानों में अव्यवसायिक मंडलियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने सब से बड़ी समस्या होती है नारी-पात्रों को जुटाने की । संगीत और नृत्य में तो युवतियाँ रुचि लेने लगी हैं और वे मंच पर अपनी कलाओं का प्रदर्शन भी करती हैं । पर अभी अभिनय के प्रति आस्था और रुचि न तो उनमें ही है और न उनके माता-पिता ही उन्हें युवकों के साथ अभिनय करने की अनुमति देते हैं । फलस्वरूप इस उन्नत युग में भी लड़कों को लड़कियाँ बनाकर मंच पर उतारा जाता है । यह हमारे लिए लज्जा की बात है । हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि लोगों में अभिनय-कला के प्रति आदर-भाव जागे । इसके लिए उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण की सृष्टि होना आवश्यक है । यदि हमारे युवक कलाकार संयत रहकर कला की पवित्रता को समझें तो कोई कारण नहीं कि नारी-पात्रों की भूमिकायें करने के लिए युवतियाँ आगे न आयें ।

अन्त में मैं 'नये हाथ' के विषय में कुछ शब्द कहना चाहता हूँ । इस नाटक की रचना रंगमंच की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर की गयी है । रंगमंच से मेरा सक्रिय सम्पर्क सन् १९३८ से है और रंगमंच सम्बन्धी विस्तृत जानकारी से मुझे नाटक-लेखन में यथेष्ट सहायता मिली है । यह नाटक प्रकाशन के पूर्व कलकत्ता में दो बार अभिनीत और 'थियेटर सेन्टर', कलकत्ता द्वारा पुरस्कृत भी हो चुका है । इस का अभिनय अत्यन्त सरलता से किया जा सकता है । सम्पूर्ण नाटक में एक ही सेट है । बार-बार सेट बदलने या पर्दा उठाने-गिराने का झंझट नहीं । मंच-सज्जा साधन और सुविधा के अनुसार की जा सकती है । निर्देशक और कलाकारों के लिए नाटक में आवश्यक संकेत दे दिये गये हैं ।

आशा है, पाठक मेरी अन्य कृतियों की तरह 'नये हाथ' को भी अपनायेंगे ।

७/१४०, स्वरूपनगर
कानपुर

—विनोद रस्तोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थियेटर सेन्टर, कलकत्ता, द्वारा आयोजित
अखिल भारतीय हिन्दी नाटक प्रतियोगिता
में पुरस्कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थियेटर सेन्टर तथा हुमाऊँ थियेटर्स, कलकत्ता, द्वारा आयोजित नाट्य-महोत्सव के अवसर पर **'नये हाथ'** का अभिनय सर्वप्रथम 'अनामिका' द्वारा 'न्यू एम्पायर' के हॉल में २२ अप्रैल, १९५७ को हुआ। भाग लेने वाले कलाकार इस प्रकार थे—

ठाकुर अजयप्रताप	:	भँवरमल सिंघी
माधुरी	:	प्रतिभा अग्रवाल
माला	:	सुनीता रेलिन
शीतल	:	नरेन्द्र अग्रवाल
बालो	:	प्रतिभा भारतीय
नवाब यूसुफ	:	हरीश मदन
सतीश	:	रामगोपाल अग्रवाल
विजयप्रताप	:	बद्रीप्रसाद तिवारी
शालिनी	:	ज्योति आहूजा
कुंवर महेन्द्रपाल	:	श्यामानन्द जालान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये हाथों की सुनो पुकार !
गहरी नदिया, नाव पुरानी;
नाविक ! तेरी थकी जवानी;
पार लगा देंगे हम नैया—
सौंप हमें पतवार !
रहे हैं नये हाथ ललकार !!
नये हाथों की सुनो पुकार !!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

अजयप्रताप

भूतपूर्व ताल्लुकेदार, अवस्था ५० वर्ष

विजयप्रताप

अजयप्रताप का छोटा भाई, अवस्था ३५ वर्ष

महेन्द्रपाल

राजा नरेन्द्रपाल का पुत्र, अवस्था ३० वर्ष

सतीश

माला का सहपाठी, अवस्था २४ वर्ष

नवाब यूसुफ

बिगड़े रईस, अवस्था ५० वर्ष

शीतल

अजयप्रताप का माली, अवस्था ४५ वर्ष

स्त्री-पात्र

माधुरी

अजयप्रताप की पत्नी, अवस्था ४५ वर्ष

माला

माधुरी की पुत्री, अवस्था २० वर्ष

शालिनी

महेन्द्रपाल की बहन, अवस्था २४ वर्ष

बालो—

नौकरानी, अवस्था १९ वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अंक

स्थान----अजयप्रताप की भव्य कोठी का गोल कमरा।

समय—दिन का तीसरा प्रहर।

[कमरा आयताकार है। दीवारें हल्के नीले रंग से पुती हैं। सामने की दीवार में कार्निस है जिसके बीच में भगवान बुद्ध की ताम्र-मूर्ति रखी है। उसके इधर-उधर महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू की प्लास्टर ऑफ पेरिस की श्वेत मूर्तियाँ हैं। दोनों किनारों पर चीनी के रंग-बिरंगे फूलदान हैं। दीवार पर तीन तैल-चित्र टंगे हैं। बीच वाला चित्र अजयप्रताप का है और आस-पास वाले चित्र क्रमशः उनके पिता अभयप्रताप और पितामह भानुप्रताप के हैं। अजयप्रताप के चित्र के नीचे दीवार-घड़ी लगी है जिसमें चार बजकर पाँच मिनट हुए हैं।

दाहिने कोने में पिआनो है। उसके पास ही गद्दीदार छोटा स्टूल है। कमरे के मध्य में सोफा-सेट है। गोल मेज पर स्वच्छ मेजपोश है। समीप ही एक रैक पर फोन रखा है। आगे की ओर बायें कोने में तख्त है जिस पर गद्दा, चादर और कई गावदार मोटे तकिये हैं। फर्श पर दरी बिछी है।

कमरे में दो द्वार हैं। बायीं ओर का द्वार अन्दर जाने के लिये है। दाहिनी ओर का द्वार बाहर बरामदे में खुलता है। दोनों पर जालीदार नीले पर्दे पड़े हैं। द्वार के ऊपर दीवार में बारह-सिंगा के सींग लगे हैं।

पर्दा उठने पर अजयप्रताप सोफे पर बैठे दिखाई देते हैं। उनका मुख दर्शकों की ओर है। मुँह में फर्शी हुक्के की निगाली दबी है। सिल्क का कुर्ता और पाजामा पहने हैं। रंग गोरा है, भरे हुए चेहरे पर नुकीली मूंछें हैं, शरीर गठा हुआ है, सिर के बाल कुछ-कुछ पक चले हैं। फिर भी अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था से बहुत कम लगते हैं। मेज पर शतरंज बिछी है। पास ही एक डिब्बा रखा है। अजयप्रताप का ध्यान शतरंज में है। वे हुक्के का कश लेते जाते हैं, और कभी-कभी एकाध चाल चल देते हैं। सहसा फोन की घंटी बज उठती है। अजयप्रताप चौंक पड़ते हैं। अप्रसन्न भाव से फोन का चोंगा उठाते हैं।]

अजयप्रताप—हलो, ठाकुर अजयप्रताप स्पीकिंग। (प्रसन्न भाव से) ओह, नवाब साहब ! आज तो वहुत इन्तजार कराया आपने। क्या कहा…? ख़ैर तो है ? हाँ…हाँ…जरूर तशरीफ लाइये। अभी तो अकेले ही बिछाये बैठा हूँ। जी हाँ, बहुत आलीशान नक्शा सोचा है। हाँ-हाँ, ठीक है। अच्छा, आदाब अर्ज !

[अजयप्रताप चोंगा रखकर फिर खेल में डूब जाते हैं। अन्दर से माधुरी आती है। चिकन की साड़ी और ब्लाउज पहने है। स्वास्थ्य अच्छा है। शरीर में फुर्ती और जुबान में तेजी है। वह अजयप्रताप के पास जाकर खड़ी हो जाती है, किन्तु उन्हें कुछ पता नहीं चलता।]

अजयप्रताप—ओह, यह रहा हाथी। (चाल चलकर) अब घोड़ा कहाँ जायेगा ?

माधुरी—(चिढ़ कर) मैं तुम्हारे हाथी-घोड़ों से तंग आ गयी हूँ। यह शतरंज मुई जी का जंजाल हो गयी।

अजयप्रताप—(शतरंज पर दृष्टि जमाये हुए) भगवान के लिए चुप भी रहो। हाँ, अब कहाँ जायेगा घोड़ा ?

माधुरी—(डिब्बे में मोहरे रखती हुई) डिब्बे में !

अजयप्रताप—अरे, यह क्या कर दिया, माला की माँ ? कितना बढ़िया नक्शा बना था। सब चौपट कर दिया।

माधुरी—भाड़ में जाए तुम्हारा नक्शा। मैं कहती हूँ, कुछ घर द्वार की भी खबर है कि दिन-रात…(दूसरे कोच पर बैठ जाती है)।

अजयप्रताप—(बीच में ही) कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा है, माला की माँ ? जरा मैं भी तो सुनूं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को

माधुरी—घर में सयानी बेटी बैठी है और तुम पूछते हो कि कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा है ? बलिहारी है ! जमींदारी चली गयी, मगर अभी आँखें नहीं खुलीं !

अजयप्रताप—(**दुःखी स्वर में**) क्यों दुखती रग छेड़ रही हो, माला की माँ ?

माधुरी—दुखती रग न छेड़ूँ तो क्या करूँ ? तुम्हें तो जैसे घर-गृहस्थी से कुछ मतलब ही नहीं है। मेरे जी से पूछो। खर्च वैसे ही अनाप-शनाप हैं, और आमदनी के नाम पर कुछ नहीं। (**दुःखी स्वर में**) आखिर इस तरह कब तक काम चलेगा ?

अजयप्रताप—जमींदारी छीन कर तो इस सरकार ने अपंग ही कर दिया। तुम ही बताओ, क्या करूँ ?

माधुरी—कोई धन्धा करो।

अजयप्रताप—राम···राम···! धन्धा और मैं ? यह क्या कहती हो तुम ? ठाकुर का बच्चा बनियागीरी करे ? नहीं, मुझसे नहीं होगा धन्धा-वन्धा !

माधुरी—तो फिर धीरे-धीरे खर्च कम करो।

अजयप्रताप—ऐसा कौन-सा फिजूल खर्च है जिसे कम करूँ ?

माधुरी—तीन प्राणियों की गृहस्थी में दर्जन भर नौकरों की क्या जरूरत है ?

अजयप्रताप—मगर किसे जवाब दूँ, माला की माँ ? शीतल को, जिसका परदादा हमारा माली था, दादा हमारा माली था, बाप हमारा माली था ? चौकीदार को, जिसने हमारी सेवा में जिन्दगी काट दी ? महराज को, जो हमारा तीस साल से रसोइया है ? बालो को, जो हमारे लिए माला की तरह है ? नहीं, मैं किसी को भी नहीं निकाल सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—न कमा सकते हो और न खर्च कम कर सकते हो ? फिर यह छकड़ा कैसे चलेगा ?

अजयप्रताप—जैसे अभी तक चला है, माला की माँ !

माधुरी—कर्ज लेकर शान दिखाने से क्या लाभ ? जमींदारी के साथ-साथ आन-बान भी चली गयी। दिन बदल गये हैं, दुनिया बदल गयी है। हमें भी समय के साथ बदलना चाहिए।

अजयप्रताप—(**मूँछों पर ताव देकर**) अजयप्रताप की शान में कभी फर्क नहीं आ सकता, माला की माँ ! गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले कोई और होंगे। मैं ठाकुर हूँ—हाँ ! मर जाऊँगा पर मूँछ नीची नहीं करूँगा।

माधुरी—राजा नरेन्द्रपाल के बल पर फूल रहे हो। मगर याद रखना, एक दिन वे भी कर्ज देने से इन्कार कर देंगे। तब क्या करोगे ?

अजयप्रताप—तब की तब देखी जायेगी। रही राजा साहब के कर्ज की बात, सो कौन बड़ी रकम है उनकी ? चार-पाँच लाख रुपये तो चुटकियों में अदा कर दूँगा।

माधुरी—हाँ, रुपये पेड़ में लगते हैं जो तोड़कर अदा कर दोगे। खैर, मेरा क्या, तुम जानो तुम्हारा काम जाने। समझाना मेरा धर्म था। जब मेरी सुनते ही नहीं तो क्या करूँ ? (**दुःखी स्वर में**) तुम तो समझते हो कि पगली बक रही है।

अजयप्रताप—अरे, कैसी बातें करती हो, माला की माँ ?

माधुरी—मैं माँ हूँ यही तो मेरा दोष है। तुम्हारी तरह पिता होती तो मुझे भी न बेटी की चिन्ता होती और न घर-गृहस्थी की।

अजयप्रताप—मुझे बेटी की चिन्ता नहीं है। यह क्या कहती हो तुम ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[बाहर से माला का प्रवेश। गौर वर्ण की सुन्दर तथा स्वस्थ युवती है। लम्बी नाक, बड़ी आँखें, कुन्चित केश। रेशमी साड़ी तथा ब्लाउज पहने है। कलाई में छोटी घड़ी है, पैरों में आधुनिक फैशन की सैण्डिल हैं। बगल में दो पुस्तकें तथा एक नोट-बुक दबाये है।]

अजयप्रताप—कॉलेज से आ गयी, बेटी !

माला—हाँ, बाबू जी ! (अजयप्रताप के समीप बैठकर) आज नवाब साहब नहीं आये ?

अजयप्रताप—(हँसकर) फँस गये होंगे किसी झंझट में ! पुराने रईस हैं, जी को सैंकड़ों जंजाल हैं। (रुककर) मन बहलाने के लिए अकेले ही बैठ गया था, मगर तुम्हारी माँ ने बाजी पलट दी।

माला—आप इन्हें भी खेलना सिखा दीजिए न, बाबू जी !

अजयप्रताप—इन्हें सिखा कर बला कौन मोल ले, बेटी ? बिना सीखे ही अच्छों-अच्छों को मात देती हैं।

[अजयप्रताप हँसते हैं। माला दृष्टि घुमाकर मन्द-मन्द मुस्कराती है]

माधुरी—तू अन्दर जा, माला। (अजयप्रताप से) तुमने बहुत सिर चढ़ा रक्खा है अपनी लाड़ली को।

अजयप्रताप—अभी तो कह रही थीं कि मैं अपनी बेटी को चाहता नहीं और अब कहने लगीं कि सिर पर चढ़ा रक्खा है। भई वाह, तुम कमाल करती हो कभी-कभी।

माधुरी—(माला से) सुना नहीं तू ने ? जा, अन्दर जा कर कपड़े बदल। मैं भी आती हूँ अभी।

[माला हँसती हुई अन्दर चली जाती है]

माधुरी—(धीमे स्वर में) क्यों जी, तुम्हें सयानी बेटी के सामने ऐसी-वैसी बातें करते शर्म नहीं आती ?

अजयप्रताप—(भोलेपन से) कैसी बातें ?

माधुरी—आ हा हा...! कैसे भोले बन रहे हो, जैसे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते ही नहीं। (कुछ देर रुक कर) अच्छा, अब यह बताओ—बेटी बीस साल की हो गयी है। उसके लिए कुछ सोचा है या नहीं ?

अजयप्रताप—सोचा क्यों नहीं है। इस साल बी० ए० कर लेगी। उसके बाद एम० ए० करेगी, फिर एल० टी० करेगी, उसके बाद एल-एल० बी० और फिर पी-एच० डी०…

माधुरी—(चिढ़कर बीच में ही) क्या उम्र भर पढ़ती ही रहेगी ? मैं कहे देती हूँ, इस साल के बाद पढ़ना बन्द ! उसके हाथ पीले करने की फिकर करो।

अजयप्रताप—हाथ भी पीले हो जायेंगे। अभी जल्दी क्या है, माला की माँ ?

माधुरी—(तेज स्वर में) तुम तो पैर पसार कर सोते हो, तुम्हें क्या ? मेरे कलेजे से पूछो। रात को नींद नहीं आती। (मंद और भीगे स्वर में) भगवान के लिए जल्दी ही कोई लड़का देखो। घर में सयानी लड़की ज्वालामुखी की तरह होती है, न जाने कब फूट पड़े। कहीं कुछ ऊँच-नीच बात हो गयी तो……

अजयप्रताप—(व्यग्रता से) ऐसा न कहो, माला की माँ ! मुझे अपनी बेटी पर पूरा भरोसा है। वह कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगी जिससे वंश के नाम पर बट्टा लगे।

माधुरी—जवानी अन्धी होती है।

[अजयप्रताप उठकर टहलने लगते हैं। उनके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आती हैं।]

अजयप्रताप—यह न समझो, माला की माँ कि मुझे माला की चिन्ता नहीं है। कई जगह बात चला चुका हूँ, मगर…

माधुरी—(उठकर) मगर क्या…?

अजयप्रताप—वे चाहते हैं कि हम माला की शादी भी शान्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह खूब धूमधाम से करें। (गम्भीर स्वर में) वे यह नहीं देखते कि तब और अब में जमीन-आसमान का फर्क है। तब जमींदारी थी, शान-बान थी, और अब… (निःश्वास छोड़कर) अब कुछ भी नहीं।

[अजयप्रताप उदास मुद्रा में कोच पर बैठ जाते हैं। माधुरी उनकी ओर देखती रहती है और फिर दाहिने हाथ से उसका मस्तक दाबने लगती है। अन्दर से माला आती है। वह बम्बई की छपी हुई धोती और गुलाबी ब्लाउज पहने है।]

माला—(अजयप्रताप के निकट जाकर) बाबू जी…

अजयप्रताप—(चौंक कर) क्या है बेटी ?

माला—बाबू जी, फीस के रुपये…

अजयप्रताप—कल ही तो दिये थे।

माला—वे…वे…तो…

अजयप्रताप—(हँस कर) कहीं गिरा दिये ?

माला—नहीं बाबू जी, वह जो सतीश है न…

अजयप्रताप—सतीश…? ओह, वह लड़का जो कभी-कभी यहाँ आता है ?

माला—हाँ, बाबू जी ! बेचारे के पास रुपये नहीं थे। अगर फीस न दे पाता तो परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। मैंने सोचा…

माधुरी—(बीच में ही कड़े स्वर में) तू भी बाप की तरह घर लुटाने पर तुली है। हमने दुनिया भर का ठेका ले रखा है ?

अजयप्रताप—क्यों डाँटती हो बेचारी को ? दीन-दुखियों पर दया करना बुरी बात नहीं है। (माला से) कोई बात नहीं, बेटी ! कल और रुपये ले लेना।

[माला प्रसन्न भाव से अन्दर चली जाती है]

माधुरी—मैं तो ऊब गयी हूँ इस जिन्दगी से। सोचती हूँ…।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[माधुरी का वाक्य अधूरा रह जाता है । बाहर से शीतल का प्रवेश । वह साँवले रंग का नाटा-सा व्यक्ति है । घुटनों तक धोती तथा बण्डी पहने है । उसके हाथ में लिफाफा, कागज और पैंसिल है ।]

शीतल—सरकार, तार···

अजयप्रताप—कहाँ से आया है ?

शीतल—हमका का मालूम, सरकार ! मुला, ई लिफाफा माँ है ।

[अजयप्रताप शीतल से लिफाफा, कागज तथा पैंसिल लेते हैं । कागज पर हस्ताक्षर करके कागज-पैंसिल लौटा देते हैं । शीतल बाहर चला जाता है । अजयप्रताप लिफाफा फाड़ कर तार पढ़ते हैं ।]

माधुरी—किसका तार है ?

अजयप्रताप—राजा साहब का ।

माधुरी—क्या लिखा है ?

अजयप्रताप—कुँवर महेन्द्रपाल आ रहे हैं ।

माधुरी—कुँवर महेन्द्रपाल आ रहे हैं ? क्यों ?

अजयप्रताप—(चिढ़कर) मुझे क्या मालूम ? जहाँ तुम हो, वहीं मैं हूँ ।

माधुरी—(चिन्तित स्वर में) कहीं कर्ज वसूलने के लिए···

अजयप्रताप—हो सकता है । (निःश्वास छोड़कर) साल भर से राजा साहब के बार-बार तकाजे आ रहे हैं ।

माधुरी—(घबरा कर) अब क्या होगा ?

अजयप्रताप—कुछ समझ में नहीं आता । (उठकर टहलते हुए) अगर कुँवर साहब ने कर्ज फौरन अदा करने के लिए जोर दिया तो···

माधुरी—न हो तो यह कोठी उनके नाम···

अजयप्रताप—(बीच में ही कठोर स्वर में) माला की माँ ! खबरदार जो ऐसी बात फिर कभी मुँह से निकाली । यही कोठी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्राचीन गौरव की आखिरी निशानी है। (दृढ़ता से) जान चली जाये, मगर इसे नहीं जाने दूँगा। (भावावेश में) इसकी ईंट-ईंट से हमारा नाता है।

[अजयप्रताप विचारमग्न होकर टहलने लगते हैं। माधुरी भी ध्यान-मग्न हो जाती है।]

माधुरी—(सहसा उठकर) सुनो, अभी-अभी एक बात मेरे मन में आयी है।

अजयप्रताप—फिर कोई ऐसी ही बेहूदी बात सोची होगी।

माधुरी—नहीं जी। मुझे मूरख समझ रक्खा है क्या? (अजय-प्रताप को कोच पर बिठाकर उनके पास बैठती हुई) कुँवर साहब की शादी हो गयी?

अजयप्रताप—नहीं।

माधुरी—क्या उम्र है उनकी?

अजयप्रताप—यही करीब तीस की होगी।

माधुरी—(प्रसन्नता से) तब ठीक है।

अजयप्रताप—क्या ठीक है?

माधुरी—(धीमे स्वर में) अगर कुँवर साहब से अपनी माला का रिश्ता हो जाये तो कैसा रहे?

अजयप्रताप—लेकिन……

माधुरी—लेकिन-वेकिन क्या? दान-दहेज और कर्ज दोनों से छुटकारा मिल जाये।

अजयप्रताप—मगर…मगर…यह कैसे सम्भव है?

माधुरी—यह मुझ पर छोड़ो। दो-चार दिन तो रुकेंगे?

अजयप्रताप—हाँ-हाँ! क्यों नहीं?

माधुरी—माला और उन्हें खूब घुलने-मिलने का मौका दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाये। अपनी माला गोरी-चिट्टी है, पढ़ी-लिखी है, और क्या चाहिए ? मैं माला को समझा दूँगी। तुम फिकर न करो। कुँवर साहब के स्वागत की तैयारी करो।

अजयप्रताप—अच्छी बात है। मै अभी लॉन वगैरह ठीक कराता हूँ। तुम कुँवर साहब के लिए कमरा ठीक कराओ।

[अजयप्रताप उठकर बाहर चले जाते हैं]

माधुरी—(ऊँचे स्वर में) बालो, अरी ओ बालो !

बालो—(अन्दर से) आयी, मालकिन !

[बालो का प्रवेश। वह गेहुँआ रंग की युवती है। चेहरे पर आकर्षण है। शरीर गठा हुआ है। बड़ी-बड़ी काली आँखों में काजल की महीन रेखायें हैं। अंग-अंग में शोखी और चंचलता है। चलती है तो थिरकती हुई, बात करती है तो मुस्कराती हुई। वह लहँगा-ब्लाउज पहने है। ओढ़नी लापरवाही से कन्धे और सीने पर पड़ी है। सिर खुला है।]

माधुरी—थोड़ी देर में मेहमान आने वाले हैं। माला के पास वाला कमरा जल्दी ठीक कर दे।

बालो—अभी ठीक करती हूँ, मालकिन !

माधुरी—और देख, अगर जरा भी कमी रही तो अच्छा न होगा। (गोल कमरे पर अलोचनात्मक दृष्टि डालकर) यह कमरा तो ठीक है। जा !

[बालो शीघ्रता से अन्दर चली जाती है। माधुरी उठकर तख्त की चादर ठीक करती है। शतरंज का बोर्ड और मोहरे तख्त के एक किनारे रखकर तकिये ठीक से रख देती है। फिर मेज का मेजपोश ठीक करती है।]

अजयप्रताप—(बरामदे से) अबे शीतल के बच्चे ! यहाँ फ़ूल वाले गमले रख। हाँ, अब ठीक है और देख, लॉन में छिड़काव कर देना। गोल कमरे के गुलदस्ते बदल दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीतल—(बरामदे से) अबै लैउ, एक मिनट माँ सब करै देत हौं, सरकार !

अजयप्रताप—(अन्दर आकर) अजब नामाकूलों से पाला पड़ा है। सब हरामखोर हैं, पक्के हरामखोर !

माधुरी—क्यों चीख रहे हो बेकार में ?

अजयप्रताप—इन नौकरों ने तो परेशान कर रक्खा है। काम के नाम पर नानी मर जाती है ससुरों की।

[शीतल दो ताजे गुलदस्ते लेकर अन्दर आता है। कार्निस पर रक्खे फूलदानों से बासी गुलदस्ते निकाल कर ताजे लगा देता है। बासी गुलदस्ते लेकर चुपचाप बाहर चला जाता है।]

अजयप्रताप—कुँवर साहब की खातिरदारी में कमी न रहने पाये, माला की माँ ! तुम इस कमरे की भी सफाई करा लो। मैं तब तक कपड़े बदल लूँ।

[अजयप्रताप अन्दर जाते हैं। माधुरी फिर कमरे पर सरसरी दृष्टि डालती है। उसे स्वच्छ और ठीक पाकर सन्तोष की साँस लेती है। तभी अन्दर से बालो आती है। ओढ़नी कमर में बँधी है।]

माधुरी—कमरा ठीक हो गया ?

बालो—एकदम ठीक कर दिया है, मालकिन ! अगर मेहमान खुश न हो जायें तो नाम बदल दूँ।

माधुरी—तुझसे लाख बार कह चुकी हूँ कि ज्यादा बात न बनाया कर, काम से मतलब रक्खा कर। मगर तेरे कानों में जूँ ही नहीं रेंगती।

बालो—(सहम कर) भूल हो गयी, मालकिन ! क्या करूँ, मुई जीभ······

माधुरी—अगर मेहमानों के सामने तेरी जीभ खुली तो काट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर फेंक दूँगी, हाँ !

बालो—उई राम···! (**कान पकड़ कर**) सौगन्ध भगवान की जो मेहमानों के सामने जीभ खोलूँ······

माधुरी—झाड़न लेकर जरा कोच साफ कर दे। कहीं भी गन्दगी नहीं रहनी चाहिए।

बालो—(**कमर से ओढ़नी खोलकर कोच साफ करती हुई**) मालकिन, कोई बड़े मेहमान आ रहे हैं ?

माधुरी—तू अपना काम कर !

[**बालो कोच साफ करती रहती है**]

माधुरी—राजा नरेन्द्रपाल के पुत्र कुँवर महेन्द्रपाल आ रहे हैं। बहुत बड़े आदमी हैं।

बालो—(**काम बन्द करके**) अपने मालिक से भी बड़े ?

माधुरी—अरे, वे राजा आदमी हैं। देख, सेवा-सत्कार में कमी न हो। हमारी माला का नाता होने वाला है उनसे।

बालो—(**आश्चर्य से**) अच्छा···! तब तो माला बीबी रानी बनेंगी।

माधुरी—हाँ, मेरी माला राजरानी बनेगी। (**धीमे स्वर में**) देख, किसी और से न कहना।

बालो—(**कान पकड़कर**) कान पकड़ती हूँ, मालकिन ! (**कोच साफ करती हुई**) बड़े भाग हैं बीबी जी के।

माधुरी—अच्छा, अच्छा ! जल्दी-जल्दी हाथ चला। तब तक मैं भी कपड़े बदल कर तैयार हो लूँ। मैं मेहमानों का कमरा भी देखूँगी जाकर ! अगर जरा भी कमी रही तो तेरी खाल···

[**माधुरी अपनी बात अपूर्ण छोड़कर अन्दर चली जाती है। बालो कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है, परन्तु दूसरे ही क्षण बन्द कर लेती है। फिर कान पकड़ कर उठती-बैठती है। अन्दर से अजयप्रताप आते हैं। वे सफेद चूड़ी-**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार पाजामा, काली शेरवानी. काली टोपी और काले जूते पहने हैं ।]

अजयप्रताप—(बालो को उठता-बैठता देखकर) यह क्या हो रहा है ?

बालो—(सहम कर) पैर की नस चढ़ गयी थी, मालिक !

अजयप्रताप—(हँस कर) अच्छा, अच्छा ! अपना काम कर ।

[बालो कोच साफ करने लगती है]

अजयप्रताप—जरा पिआनो भी साफ कर दे ।

[बालो पिआनो साफ करने लगती है । धोखे में उसका हाथ की-बोर्ड पर पड़ जाता है । पिआनो बज उठता है ।]

अजयप्रताप—अरे, सम्भाल कर, अभी माला सुनेगी तो कान गरम कर देगी । (रुक कर) हो गया साफ ! जा, अन्दर जा ! हाँ, हुक्का भी लेती जा ।

[बालो हुक्का अन्दर ले जाती है]

अजयप्रताप—(ऊँचे स्वर में) शीतल, ओ शीतल के बच्चे !

शीतल—(बाहर से) आया सरकार !

[शीतल अन्दर आकर खड़ा हो जाता है]

अजयप्रताप—लॉन साफ हो गया ?

शीतल—हाँ, सरकार !

अजयप्रताप—शोफर ने कार धो दी ?

शीतल—धोवत है, सरकार !

अजयप्रताप—जमादार ने सड़कें साफ कर दीं ?

शीतल—करत है, सरकार !

अजयप्रताप—चौकीदार ने कोठी का फाटक साफ कर दिया ?

शीतल—हाँ, सरकार !

अजयप्रताप—अच्छा, देखो ! तुम लोग भी हाथ-मुँह धोकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े बदल लो। बहुत बड़े मेहमान आ रहे हैं। हमारी शान में बट्टा न लगने पाये।

शीतल—कैसी बातें करत हौ, सरकार ! जब लाट साहब आये रहेन तब तौ……

अजयप्रताप—(**हँसकर बीच में ही**) अच्छा, अच्छा ! देख, मेहमानों का सामान पीछे की तरफ से अन्दर ले जाना। समझा ? अब जा।

[**शीतल बाहर जाता है। अन्दर से माधुरी आती है। वह रेशमी साड़ी-ब्लाउज पहने है। हाथ और गले में आभूषण हैं।**]

अजयप्रताप—तुमने तो सोलह शृंगार कर लिए, माला की माँ !

माधुरी—(**कृत्रिम रोष से**) तुम्हें तो हर समय मसखरी सूझती है।

अजयप्रताप—महराज से कह दिया……

माधुरी—(**बीच में ही**) कह दिया है बढ़िया से बढ़िया पकवान बना रहा है।

अजयप्रताप—(**सन्तुष्ट होकर**) ठीक है ! भगवान करे, कुँवर साहब और माला……

माधुरी—सब ठीक हो जायेगा।

अजयप्रताप—अगर ऐसा हो जाये तो छाती का बोझ हट जाये, माला की माँ !

माधुरी—यह रिश्ता होकर रहेगा। बिना 'हाँ' किये कुँवर साहब को छुटकारा नहीं मिलेगा।

अजयप्रताप—कुँवर साहब यूरोप से पिछले महीने ही लौटे हैं। नये विचारों के आदमी हैं। जरा माला को समझा देना।

माधुरी—मैं सब समझा दूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अन्दर से बालो आती है]

बालो—और कोई काम है, मालकिन ?

अजयप्रताप—(हँसकर) तू मेहमानों के सामने इसी पोशाक में रहेगी ?

बालो—नया लँहगा पहन लूँगी, मालिक !

अजयप्रताप—धोती क्यों नहीं पहनती ?

बालो—धोती अटपटी-सी लगती है ।

माधुरी—देख तो, माला क्या कर रही है ?

[बालो अन्दर जाती है]

अजयप्रताप—कुँवर साहब के लिए माला के पास वाला कमरा ठीक कराया, यह अच्छा किया ।

माधुरी—कुछ सोच-समझ कर ही कराया है ।

अजयप्रताप—(हँसकर) तभी तो कहता हूँ कि तुम अच्छों-अच्छों के कान काट सकती हो ।

माधुरी—फिर ऐसी-वैसी बातें करने लगे ।

[अन्दर से माला आती है]

माला—आपने बुलाया था, माँ ?

माधुरी—बुलाया तो नहीं था । ओह, मैं तो इस बालो की बच्ची से तंग आ गयी हूँ ।

[माला अन्दर जाने के लिए मुड़ती है]

माधुरी—सुन, बेटी !

[माला माधुरी के पास जाती है]

माधुरी—तुझे मालूम है, कुँवर महेन्द्रपाल आ रहे हैं ?

माला—(दृष्टि नीची करके) मालूम है ।

माधुरी—बहुत नेक और मिलनसार आदमी हैं । अभी-अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूरोप से लौटे हैं।

[माला मौन रहती है]

माधुरी—उनसे किसी तरह का संकोच न करना, बेटी! घर के आदमी हैं।

माला—जी……

माधुरी—उनसे यूरोप के बारे में पूछना, हँसना-बोलना, उन्हें यहाँ के प्रसिद्ध स्थान दिखाना।

माला—(अजयप्रताप की ओर देखकर) जी…बाबू जी!

अजयप्रताप—तुम्हारी माँ ठीक कह रही हैं, बेटी! कुँवर साहब जवान हैं। हम बूढ़ों के साथ उनका मन कैसे लगेगा? उनका मन लगाने का जिम्मा तेरे ऊपर है। अगर वे यहाँ से खुश होकर न गये तो हमारी नाक कट जायेगी। (माधुरी से) माला की माँ, तुम समझा दो इसे सब कुछ।

माला—(विरोध के स्वर में) लेकिन माँ, यह कैसे हो सकता है? पहले का कोई परिचय नहीं! उनसे एकदम कैसे घुल-मिल सकती हूँ?

माधुरी—तू दूध-पीती बच्ची नहीं है जो सब बातें सिखानी पड़ेंगी। राजा नरेन्द्रपाल का हम पर कई लाख का कर्ज है। कुँवर साहब कर्ज वसूलने आ रहे हैं। कर्ज अदा करने के लिए हमारे पास है क्या? (आर्द्र कण्ठ से) हमारी पूँजी तो तू ही है, बेटी! इसीलिए हमने तय किया है कि तेरी शादी कुँवर साहब से कर दी जाये।

माला—(भीगे स्वर में) माँ……।

माधुरी—कर्ज से छुटकारा पाने का यही रास्ता है। बाप की चिन्ता दूर हो जायेगी। तू राजरानी बन जायेगी, मेरी बेटी! इसी-लिए कहती हूँ कि कुँवर साहब का मन जीतने की कोशिश करना। अगर यह रिश्ता न हुआ तो हम बरबाद हो जायेंगे, कहीं के न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेंगे ।

माला—माँ, यह मुझसे नहीं हो सकता...नहीं हो सकता। बलपूर्वक मैं अपने को किसी के ऊपर कैसे लाद सकती हूँ? अगर वे......

माधुरी—इतनी समझदार होकर भी ऐसा सवाल करती है? क्या तू चाहती है कि माँ-बाप की इज्जत धूल में मिल जाये?

[माला मौन रहती है । उसकी दृष्टि कार्निस पर रक्खे फूलदान की ओर है ।]

माधुरी—जा तू, अन्दर जाकर कपड़े बदल! जैसा कहती हूँ, अगर वैसा न किया तो अच्छा न होगा।

[माला द्वार की ओर बढ़ती है]

माधुरी—और वह मोतियों की माला पहनना न भूलना।

[माला अन्दर जाती है]

अजयप्रताप—माला की माँ, माला इस रिश्ते से खुश नहीं लगती।

माधुरी—लड़की को जात की खुशी-नाखुशी का क्या ठीक? आने दो कुँवर साहब को। सब ठीक हो जायेगा।

अजयप्रताप—कहीं ऐसा न हो कि हमारा यह फैसला उसकी जिन्दगी खराब कर दे?

माधुरी—कैसी बातें करते हो? कुँवर साहब सुन्दर हैं, जवान हैं, और क्या चाहिए? अच्छा घर और वर बड़े भाग्य से मिलता है।

अजयप्रताप—माला की आँखों में आज एक अजीब उदासी देखी। माला की माँ, मुझे डर है कि कहीं कॉलेज के किसी छोकरे...

माधुरी—(बीच में ही) कुछ तो शरम करो।

अजयप्रताप—आज की दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला की माँ !

माधुरी—अपनी माला और लड़कियों की तरह नहीं है। वह तो किसी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखती।

अजयप्रताप—वह लड़का है न, क्या नाम है उसका ? सतीश···हाँ···

माधुरी—वह तो कभी-कभी किताबें लेने आ जाता है। गरीब और अनाथ लड़का है।

अजयप्रताप—(**कुछ सोचते हुए**) हूँ···

माधुरी—हूँ-हूँ क्या कर रहे हो ? तुम्हें तो हर बात में शक होता है। क्या माला को भी अपने भाई की तरह समझ रक्खा है ?

अजयप्रताप—(**चिढ़ कर**) माला की माँ·····

माधुरी—मैं तो खरी बात कहती हूँ। तुम समझते हो कि जिस तरह विजय ने कुल की मान-मर्यादा भूलकर तुम्हारे नाम पर बट्टा लगाया, उसी तरह हर कोई लगायेगा। (**रुक कर**) माला में हमारा खून है। वह किसी आवारा छोकरे की तरफ देखने से पहले मर जाना पसन्द करेगी।

अजयप्रताप—(**बेबसी के स्वर में**) तुम तो बात का बतंगड़ करने लगती हो।

माधुरी—तुम भी तो बिना सोचे-समझे मुँह से ऐसी-वैसी बात निकाल देते हो। (**अन्दर वाले द्वार की ओर मुंह करके ऊँचे स्वर में**) बालो, अरे कहाँ मर गयी जाकर ?

बालो—(**अन्दर से**) अभी मरी नहीं, जिन्दा हूँ, मालकिन ! (**प्रवेश करके**) क्या हुकुम है ?

माधुरी—तुझसे कहा था कि बड़े कमरे से छोटे सरकार की तस्वीर उतार दे। उतार दी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—हाँ, मालकिन !

माधुरी—मालकिन की बच्ची ! कहाँ है ?

बालो—बीबी जी ने ले ली ।

माधुरी—माला ने ले ली ? क्यों ?

बालो—यह तो उन्हीं से पूछो, मालकिन !

माधुरी—(घूरकर उसकी ओर देखती हुई) अच्छा, जा ! और हाँ, माला से कह देना कि तस्वीर छिपाकर रक्खे । कुँवर साहब की नजर न पड़ने पाये ।

[बालो ओढ़नी का छोर अंगुली में लपेटती हुई अन्दर जाती है]

अजयप्रताप—(दुखी स्वर में) विजय की तस्वीर क्यों हटवा दी, माला की माँ ?

माधुरी—(झुंझलाकर) तुम्हारी नाक ऊँची रखने के लिये । अगर कुँवर साहब पूछ बैठते कि यह किसकी तस्वीर है तो क्या जवाब देते ?

अजयप्रताप—कह देता, छोटे भाई की है ।

माधुरी—और अगर वे पूछते कि आजकल कहाँ हैं तो ?

[अजयप्रताप कोई उत्तर नहीं देते । गर्दन झुकाकर कोच पर बैठ जाते हैं ।]

माधुरी—(अजयप्रताप के पास बैठकर) तो क्या कह देते कि जेल में है ?

अजयप्रताप—(तेज स्वर में) माला की माँ···!

माधुरी—इसमें चीखने की क्या बात है ? अगर वे जेल जाने का कारण पूछते तो क्या बता देते कि एक नीच जाति की छोकरी से उसका लगाव था और जब पाप का बीज फलने-फूलने लगा तो बदनामी के डर से उसने उसका गला घोंट दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजयप्रताप—(बेचैनी से दोनों हाथ मलते हुए) मैं तुमसे हजार बार कह चुका हूँ कि यह सब झूठ है । विजय निर्दोष था ।

माधुरी—अच्छा जी ! भाई की सफाई देने लगे । अगर वह निर्दोष था तो भागा क्यों ? और जब पकड़ा गया तो उसने भरी कचहरी में अपना जुर्म कबूल क्यों कर लिया ?

[अजयप्रताप हाथ मलते रहते हैं । उत्तर नहीं देते]

माधुरी—अगर तुम पैसा पानी की तरह न बहाते और कलकत्ते से नामी वकील न लाते तो फाँसी ही होती । गनीमत है, दस साल की ही कैद हुई ।

अजयप्रताप—भगवान के लिए अब चुप भी रहो । जाओ, अन्दर जाकर अपना काम देखो ।

माधुरी—(उठकर द्वार की ओर अग्रसर होती हुई) सच्ची बात सभी को बुरी लगती है ।

शीतल—(प्रवेश करके) सरकार, नवाब साहब आइन हैं ।

अजयप्रताप—भेज दो ।

[माधुरी अन्दर जाती है । शीतल बाहर जाता है । अजयप्रताप उठकर टहलने लगते हैं । स्पष्ट है कि माधुरी की बातों से उनके हृदय को दुख पहुँचा है । एक क्षण बाद ही बाहर से नवाब यूसुफ आते हैं । वे सफेद शेरवानी और ढीला पाजामा पहने हैं । हाथ में पतली छड़ी, सिर पर पल्लेदार टोपी और पैर में पम्प-शू हैं । आँखों में सुर्मा और मुँह में पान है ।]

अजयप्रताप—आइये, नवाब साहब ! तशरीफ रखिये । आज दोपहर भर इन्तजार करता रहा ।

[दोनों कोच पर बैठ जाते हैं]

नवाब यूसुफ—न आ सकने की माफी चाहता हूँ, ठाकुर साहब ! क्या अर्ज करूँ, एक अहम मसला पेश हो गया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RO ८.२/१० २६७६०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजयप्रताप——खैरियत तो है, नवाब साहब ?

नवाब यूसुफ——खैरियत क्या, ठाकुर साहब, मैं तो इस नई तालीम और नई रोशनी से तंग आ गया हूँ । एक मेरे मामूजात भाई जान हैं—नवाब बन्ने मियाँ ! नाम सुना होगा…?

अजयप्रताप——अमाँ, नवाव बन्ने मियाँ का नाम कौन नहीं जानता ? खानदानी रईस हैं ।

नवाब यूसुफ——जनाब, नवाब वाजिदअली शाह के खास खानदान के हैं ।

अजयप्रताप——(आश्चर्य से) अच्छा…?

नवाब यूसुफ——जी हाँ ! क्या रुतबा पाया है, भई वाह ! नूर बरसता है चेहरे पर ! हाँ साहब, तो उनकी दुख्तर है नूरजहाँ…!

अजयप्रताप——(बीच में ही) क्या उसकी तबीयत खराब हो गई थी ?

नवाब यूसुफ——अमाँ, तबीयत अलील हो उसके दुश्मनों की । मैं तो यह अर्ज कर रहा था कि नयी तालीम ने उसका दिमाग खराब कर दिया है । भाई जान ने जब एक ऊँचे खानदान में रिश्ते की बात चलायी तो उसने साफ इन्कार कर दी ।

अजयप्रताप——(न समझने के ढंग से) इन्कार कर दी ?

नवाब यूसुफ——जी, हाँ ! कहने लगी, मुझे हफीज से मोहब्बत है, शादी करूँगी तो उसी से, नहीं तो उम्र भर क्वाँरी रहूँगी ।

अजयप्रताप——यह हफीज साहब कौन हैं ?

नवाब यूसुफ——मोहल्ले का ही छोकरा है । अब आप ही बताइये, ठाकुर साहब, कहाँ एक नवाबजादी और कहाँ आवारा हफीज ! अमाँ, लाख समझाया, मगर वह अपनी जिद पर अड़ी है ।

अजयप्रताप——यह तो बहुत बुरा है । नवाब बन्ने मियाँ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इज्जत का सवाल है ।

नवाब यूसुफ——जब उसे खानदान की इज्जत का वास्ता दिया तो कहने लगी, खुदा की निगाह में सब बराबर हैं । अब आप जरा गौर कीजिये, ठाकुर साहब ! भला नवाबों और कुँजड़ों में कैसी बराबरी···?

अजयप्रताप——आप बजा फरमाते हैं, नवाब साहब ! (**रुक कर**) आखिर क्या फैसला किया नवाब बन्ने मियाँ ने ?

नवाब यूसुफ——उन्हें बेटी की जिद के सामने झुकना पड़ा, ठाकुर साहब !

अजयप्रताप——(**जोश में आकर**) यह उनकी कमज़ोरी है। खानदान की इज्जत के सामने औलाद कुछ भी नहीं । सच कहता हूँ, नवाब साहब, अगर मेरी बेटी ऐसी हरकत करे तो उसे गोली से उड़ा दूँ ।

नवाब यूसुफ——खुदा न करे आपको ऐसा दिन देखना पड़े । किसी ने ठीक कहा है, ठाकुर साहब ! नालायक औलाद से तो औलाद का न होना ही अच्छा है । मुझे तरस आता है भाई-जान के हाल पर ! (**रुक कर**) खैर, यह दुनियादारी तो लगी ही रहती है । आइये, एक बाजी हो जाये ।

अजयप्रताप——इस वक्त तो माफी चाहता हूँ, नवाब साहब ! कुछ देर में ही मेहमान आने वाले हैं । अभी-अभी तार आया है ।

नवाब यूसुफ——समझा ! मैं भी इसी पशोपेश में था कि आखिर यह सफाई वगैरह क्यों हो रही है । कौन साहब आ रहे हैं ?

अजयप्रताप——राजा नरेन्द्रपाल का नाम सुना होगा ?

नवाब यूसुफ——क्यों नहीं ? वे तो मेरे जिगरी दोस्त हैं । क्या······

अजयप्रताप——(**बीच में ही**) उनका लड़का आ रहा है——कुँवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल ! **(धीमे स्वर में)** कुँवर साहब से माला के रिश्ते की बात चल रही है।

नवाब यूसुफ—मुबारक हो, ठाकुर साहब ! वाकई बहुत अच्छा घर देखा है। खुदा चाहेगा तो रिश्ता जरूर तय हो जायेगा। (उठकर) अच्छा, अब इजाजत दीजिये।

अजयप्रताप—(उठकर) कल तशरीफ लाइयेगा ?

नवाब यूसुफ—इन्शाअल्ला···! आदाब अर्ज !

अजयप्रताप—आदाब अर्ज······!

[नवाब यूसुफ छड़ी टेकते हुए बाहर आते हैं । अजयप्रताप कमरे को निरीक्षक की दृष्टि से देखते हैं। तख्त पर शतरंज रक्खी देखकर तख्त की ओर बढ़ते हैं और शतरंज का बोर्ड तथा मोहरों का डिब्बा कार्निस पर रख देते हैं। उसी समय बाहर से सतीश आता है। वह धोती-कुर्ता और चप्पल पहने है। गेहुँआ रंग है। बाल रूखे हैं। चेहर पर प्रतिभा के चिन्ह हैं।]

अजयप्रताप—क्या है ?

सतीश—जी···मैं······

अजयप्रताप—(बीच में ही) माला ने तुम्हें फीस के लिये रुपये दिये थे ?

[सतीश सिर हिलाता है]

अजयप्रताप—अब क्या चाहते हो ?

सतीश—जी, एक किताब लेनी है।

अजयप्रताप—**(कड़े स्वर में)** क्या हमने यहाँ पुस्तकालय खोल रक्खा है जो जब देखो तब किताबें लेने चले आते हो ?

सतीश—**(सहम कर)** जी······

अजयप्रताप—**(उसी कठोरता से)** जाओ, अगर किताबें खरीद नहीं सकते तो पढ़ना छोड़ कर कहीं नौकरी कर लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश—(**मन्द स्वर में**) जी, क्षमा चाहता हूँ। अब कभी नहीं आऊँगा।

[**सतीश बाहर जाने के लिए द्वार की ओर मुड़ता है। तभी अन्दर से माला आती है। वह रेशमी साड़ी और ब्लाउज पहने है। गले में मोतियों की माला है।**]

माला—क्यों, कैसे आये थे सतीश ?

सतीश—(**रुक कर सहमे हुए स्वर में**) एक किताब लेनी थी।

माला—कौन सी किताब चाहिये ?

सतीश—रहने दीजिए। किसी पुस्तकालय में बैठकर पढ़ लूँगा।

अजयप्रताप—खैर, किताब दे दो बेटी ! मगर मुझे इस तरह किताबें लेना-देना पसन्द नहीं। हाँ !

माधुरी—(**अन्दर से**) अरे, जरा यहाँ तो आओ।

अजयप्रताप—आता हूँ !

[**सतीश की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखकर अजयप्रताप अन्दर चले जाते हैं।**]

माला—(**धीमे स्वर में**) कौन सी किताब चाहिये ?

सतीश—(**दृष्टि नीची करके**) समाज-शास्त्र के मूल सिद्धान्त।

माला—अभी मँगाती हूँ। बैठो। (**ऊँचे स्वर में**) बालो, ओ बालो !

बालो—(**अन्दर से**) आयी, बीबी जी !

[**माला और सतीश बैठ जाते हैं। अन्दर से बालो आती हैं**]

माला—देख, मेरे कमरे से एक किताब ले आ। नाम है—समाज-शास्त्र के मूल सिद्धान्त।

बालो—अभी लायी एक मिनट में।

[**बालो का प्रस्थान**]

माला—(**हँसकर**) मेरी नौकरानी बहुत होशियार है। हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंग्रेजी मैंने ही पढ़ायी है।

[सतीश मौन रहता है]

माला—क्या बाबू जी ने कुछ कह दिया है? (रुक कर) मैं उनकी तरफ से माफी माँगती हूँ, सतीश !

सतीश—(रूखे स्वर में) माफी माँगने की क्या जरूरत है? छोटों को डाँटना बड़ों का अधिकार है।

माला—जरूर तुम बाबू जी की किसी बात का बुरा मान गये हो।

सतीश—हम गरीब छोटी-छोटी बातों का बुरा मानने लगें तो जीना दूभर हो जाये।

[बालो अन्दर से किताब लेकर आती है। किताब माला को थमाकर वह विचित्र दृष्टि से सतीश की ओर देखती है और फिर अन्दर चली जाती है।]

माला—यह लो किताब !

सतीश—(पुस्तक लेकर) धन्यवाद ! (उठकर) कल कॉलेज में लौटा दूँगा।

माला—मुझे कोई जल्दी नहीं है। (उठकर) जब काम पूरा हो जाये, लौटा देना।

सतीश—आपके उपकारों का बदला कभी नहीं चुका सकता। अच्छा अब......

माला—(बीच में ही) तुम्हें आज क्या हो गया है, सतीश ?

सतीश—आँखें खुल गयी हैं।

माला—मैं वैसे ही बहुत दुःखी हूँ, मेरे दिल को और न दुखाओ, सतीश !

सतीश—झोंपड़ी का रहने वाला महलों के वासी का दिल कैसे दुखा सकता है? (द्वार की ओर बढ़कर) दिल तो हम गरीबों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखता है……।

माला—(आगे बढ़कर) सुनो, मुझे तुमसे जरूरी बातें करनी हैं।

[सतीश तेजी से बाहर चला जाता है। माला पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ी रहती है और निर्निमेष दृष्टि से द्वार की ओर देखती रहती है। आँखों में आँसू की बूँदें हैं। एक क्षण बाद अजयप्रताप अन्दर से आते हैं।]

अजयप्रताप—(क्रुद्ध मुद्रा में) गया ? मुझे इन लफंगों का आना-जाना कतई पसन्द नहीं। आज से इस सतीश के बच्चे को कोठी में न देखूँ। मिलना-जुलना बराबर वालों से ठीक होता है। हमारा उसका क्या साथ……?

[माला चुपचाप अन्दर चली जाती है। अजयप्रताप क्रुद्ध मुद्रा में टहलने लगते हैं। बाहर से शीतल आता है और उन्हें गम्भीर देखकर चुपचाप लौट जाता है। कुछ देर बाद अन्दर से माधुरी आती है।]

माधुरी—क्यों जी, क्यों डाँट दिया माला को ? बेचारी रो रही है।

अजयप्रताप—रो रही है तो मैं क्या करूँ ? मुझे औलाद से ज्यादा प्यारी अपनी इज्जत है।

माधुरी—कौन सा डाका पड़ गया है तुम्हारी इज्जत पर, जरा मैं भी तो सुनूँ ?

[अजयप्रताप उत्तर देने के लिये मुँह खोलते हैं। तभी बाहर से पाजामा-कुर्त्ता और चप्पल पहने हुए विजयप्रताप आता है। बाल रूखे और दाढ़ी बढ़ी हुई है।]

अजयप्रताप—(आगे बढ़कर) विजय……!

[विजयप्रताप झुक कर उनके पैर छूता है। वे उसे छाती से लगा लेते हैं। फिर वह माधुरी के पैर छूने के लिये झुकता है मगर माधुरी उपेक्षा से पीछे हट जाती है। स्पष्ट है कि वह विजयप्रताप के आने से सन्तुष्ट नहीं है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयप्रताप—(**अजयप्रताप से**) दादा, सरकार ने मुझे तीन साल पहले ही छोड़ दिया।

अजयप्रताप—अगर मुझे पता होता तो कार लेकर खुद जेल तक आता। खैर, तुम आ गये। मैं बहुत खुश हूँ, विजय।

विजयप्रताप—मेरी भाभी तो ज्योतिषी मालूम होती हैं। शायद इन्हें मालूम हो गया था कि मैं आज ही जेल से छूटकर आने वाला हूँ। कितना शानदार स्वागत हुआ। (**हँसकर**) फाटक पर वर्दी पहने हुए बन्दूकधारी चौकीदार ने सलाम ठोंका, पोर्टिको में शोफर ने सेल्यूट दिया और फिर शीतल ने रामजुहार की।

[माधुरी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। वह मुँह दूसरी ओर कर लेती है।]

अजयप्रताप—अभी-अभी कुँवर महेन्द्रपाल आने वाले हैं। अन्दर जाकर आदमी बन जाओ। तुम्हारे कमरे की चाभी माला के पास है।

विजयप्रताप—माला तो अब बहुत बड़ी हो गयी होगी। क्या अब भी दिन भर ऊधम मचाया करती है? और वह शैतान बालो…? वह भी बड़ी हो गयी होगी? क्या वह भी पहले की तरह शैतानी करती है, भाभी?

[माधुरी उत्तर नहीं देती। मुँह दूसरी ओर कर लेती है]

विजयप्रताप—भाभी कुछ नाराज मालूम होती हैं?

अजयप्रताप—इनकी नाराजी की चिन्ता न करो। जल्दी से नहा-धोकर कपड़े बदल डालो।

[विजयप्रताप हँसकर अन्दर वाले द्वार की ओर बढ़ता है]

माधुरी—(**रूखे और तेज स्वर में**) ठहरो!

[विजयप्रताप रुक जाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—(**विजयप्रताव के पास जाकर**) तुम्हारा विचार ठीक है। तुम्हारे आने से मैं खुश नहीं हूँ। कारण जानना चाहते हो ?

[**विजयप्रताप अजयप्रताप की ओर देखता है**]

माधुरी—इन्होंने तुम्हारे साथ जो उपकार किये हैं, उनकी दुहाई देकर कहती हूँ कि तुम यहाँ से फौरन चले जाओ।

विजयप्रताप—भाभी……!

माधुरी—(**उसी कठोरता से**) कुँवर साहब के आने से पहले ही कहीं और चले जाओ। उनसे माला के सम्बन्ध की बात चल रही है। अगर उन्हें मालूम हो गया कि लड़की का चाचा जेल काटकर आया है तो यह रिश्ता नहीं हो सकेगा।

विजयप्रताप—(**बेबसी से अजयप्रताप की ओर देखकर**) आप भी यही चाहते हैं, दादा ?

[**अजयप्रताप कुछ कहने के लिए मुँह खोलते हैं, मगर माधुरी उन्हें रोक देती है।**]

माधुरी—इनसे क्या पूछते हो ? क्या तुम्हें माला के सुख का ध्यान नहीं ? क्या तुम नहीं चाहते कि माला का नाता अच्छे घर में हो ?

विजयप्रताप—(**सिर नीचा करके**) अगर मेरे रहने से माला का अहित होता है, तो मैं चला जाऊँगा, अभी चला जाऊंगा। (**अजयप्रताप की ओर मुड़कर**) दादा, मेरे माथे पर लगा कलंक का टीका क्या जीवन भर न छूटेगा ?

अजयप्रताप—(**आर्द्र स्वर में**) ऐसा न कहो, विजय ! ऐसा न कहो।

विजयप्रताप—(**निःश्वास छोड़कर**) अच्छा, अब चलता हूँ, दादा ! (**रुद्ध कण्ठ से माधुरी की ओर मुड़कर**) जाने से पहले एक बार माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देखना चाहता हूँ।

माधुरी—(ऊँचे स्वर में) माला, जरा यहाँ तो आ। (विजय प्रताप से) मेरी बातों का बुरा न मानना। मैं तो माला की भलाई के लिये ही जाने को कह रही हूँ। दस-पाँच दिन बाद चले आना। तुम्हारा घर है।

[विजयप्रताप मौन रहता है। अन्दर से माला आती है। वह उदास है। वह विजयप्रताप की ओर क्षण भर देखती है। फिर पहचान लेती है और 'चाचा जी' कहकर उसकी ओर दौड़ती है। विजयप्रताप उसे सीने से लगा लेता है।]

विजयप्रताप—(सिर पर हाथ फेरता हुआ) अरे, तू तो बहुत बड़ी हो गयी, बेटी !

माला—(हाथ पकड़कर अन्दर की ओर घसीटती हुई) यह क्या रूप बना रक्खा है, चाचा जी ? अन्दर चलिये। रोज आपका कमरा खुद साफ करती थी और (भीगे स्वर में) रोज आपकी राह देखती थी।

विजयप्रताप—बेटी, मुझे अभी जरूरी काम से जाना है।

माला—मैं अब कहीं नहीं जाने दूंगी।

माधुरी—(कठोर स्वर में आदेश देती हुई) हाथ छोड़ दे, माला।

माला—(जिद्द के स्वर में) मैं अब चाचा जी को कहीं नहीं जाने दूंगी ! माँ, आप क्यों नहीं रोकतीं ? बाबू जी, आप समझाइये न चाचा जी को !

माधुरी—विजय का जाना जरूरी है।

माला—(वास्तविकता समझ कर) ओह, समझी ! तो आप चाहती हैं कि चाचा जी चले जायें। मगर आपको इनसे इतनी घृणा क्यों है ? (रुद्ध कण्ठ से) आपने बड़े कमरे से इनकी तस्वीर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरवा दी । क्यों……?

[माला सिसकने लगती है]

माधुरी—तेरी समझ में ये बातें नहीं आयेंगी । हम जो कुछ कर रहे हैं, तेरी भलाई के लिये ही कर रहे हैं । तू जा अन्दर !

विजयप्रताप—भाभी ठीक कह रही हैं, बेटी ! मेरा यहाँ ठहरना ठीक नहीं ।

माला—(सिसक कर) क्यों ठीक नहीं ?

विजयप्रताप—(बेबसी से) अब तुझे कैसे समझाऊँ, बेटी ? कुँवर साहब आ रहे हैं ना ! मेरा उनके सामने पड़ना तेरे लिये अहितकर होगा । समझी ?

माला—मेरा हित आपके रहने में है, चाचा जी ! अगर आप को मुझ से जरा भी स्नेह है तो कहीं न जायें ।

माधुरी—(डांट कर) माला !

अजयप्रताप—(धीमे स्वर में) हर बात की जिद्द अच्छी नहीं होती, बेटी !

विजयप्रताप—मुझे जाने दे, बेटी ! मेरी शुभकामनायें तेरे साथ हैं । बेटी, मेरे माथे पर बदनामी का टीका लगा है । मैं अभी-अभी जेल से आ रहा हूँ । अगर कुँवर साहब को यह सब मालूम होगा तो………

माला—तो क्या होगा ? मैं जानती हूँ आप निर्दोष हैं ।

अजयप्रताप—तू……तू……कैसे जानती है ?

माला—(अजीब स्वर में) मुझे सात-आठ साल पहले की वह रात अच्छी तरह याद है जब चाचा जी घर से भागे थे ।

माधुरी—अगर विजय निर्दोष होता तो क्यों भागता ?

माला—चाचा जी, आप बता क्यों नहीं देते ? आप कह क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देते कि किसी दूसरे को बदनामी से बचाने के लिये आपने ऐसा किया था ?

अजयप्रताप—(चीख कर) माला……

माधुरी—तेरा दिमाग खराब हो गया है क्या ?

माला—(अनुनय के स्वर में) चाचा जी, आप कब तक दूसरे के पाप का बोझ अपने सिर पर लिये रहेंगे ?

विजयप्रताप—मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है, बेटी ! पापी मैं हूँ, और मैं ही उसका दण्ड भोग रहा हूँ।

माला—यह झूठ है। (आवेश में) सरासर झूठ है। मैं जानती हूँ, सच क्या है ! बाबू जी, चाचा जी को जाने से रोकिये । अगर वे चले गये तो……तो मेरा मुँह बन्द नहीं रह सकेगा……हाँ……!

[माला तेजी से अन्दर चली जाती है]

माधुरी—(विजयप्रताप से) माला का दिमाग फिर गया है। तुम उसकी बातों पर ध्यान न दो। (व्यग्रता से) कुँवर साहब किसी भी समय आ सकते हैं। भगवान के लिये फौरन चले जाओ।

[विजयप्रताप अजयप्रताप की ओर देखता है और फिर मन्द गति से बाहर जाने के लिये द्वार की ओर बढ़ता है। अजयप्रताप के चेहरे पर भाँति-भाँति के भाव आ-जा रहे हैं। सहसा निर्णय और निश्चय की दृढ़ता उभरती है।]

अजयप्रताप—ठहरो, विजय ! तुम्हारे जाने की जरूरत नहीं है। अन्दर जाकर फौरन तैयार हो जाओ।

विजयप्रताप—(मुड़कर) जी……!

माधुरी—माला के साथ-साथ क्या तुम्हारा भी सिर फिर गया है ?

अजयप्रताप—(डाँट कर) चुप रहो। मेरी बातों में दखल दिया तो ठीक नहीं होगा। (विजयप्रताप से) यहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ? अन्दर जाओ ।

[विजयप्रताप आज्ञाकारी बालक की भाँति अन्दर चला जाता है]

माधुरी—(असन्तोष से) यह क्या पागलपन कर रहे हो ?

अजयप्रताप—मैं कहता हूँ, चुप रहो !

माधुरी—चुप कैसे रहूँ ?

अजयप्रताप—चुप नहीं रह सकतीं तो अन्दर चली जाओ ।

माधुरी—अन्दर क्यों जाऊँ ? (आगे बढ़कर) तुम्हें तो भाई के मोह ने अन्धा कर दिया है । देख लेना, कुँवर साहब······

अजयप्रताप—(बीच में ही झल्लाकर) भगवान के लिये मेरे कान न खाओ । मैं जो कुछ कर रहा हूँ, सोच समझकर कर रहा हूँ ।

माधुरी—सोच-समझकर मेरा सिर कर रहे हो······। मैं कहती हूँ······

अजयप्रताप—(डाँटकर) मैं पूछता हूँ, चुप रहोगी या नहीं ? कान खोलकर सुन लो, घर का मालिक मैं हूँ, और······

माधुरी—(चुनौती के स्वर में) और······?

अजयप्रताप—और इस घर में वही होगा जो मैं चाहूँगा। समझीं ?

माधुरी—(झल्लाकर) मुझे क्या, जो मर्जी आये सो करो । फिर दोष मुझे न देना । हाँ······

[माधुरी असन्तोष की मुद्रा से पति की ओर देखती है । अजयप्रताप मौन हैं । तभी बाहर से कार के हार्न की आवाज आती है ।]

माधुरी—कुँवर साहब आ गये ! जाओ बाहर ! जल्दी जाओ !

[अजयप्रताप शीघ्रता से बाहर जाते हैं । माधुरी अपने वस्त्र ठीक करती है । चेहरे पर प्रसन्नता का भाव लाकर स्वागत की मुद्रा में द्वार के पास खड़ी हो जाती है । बाहर से अजयप्रताप के साथ महेन्द्रपाल तथा शालिनी का प्रवेश । महेन्द्रपाल गोरे रंग का युवक, फ्रेंचकट दाढ़ी, चेहरे पर मस्ती का भाव, अधरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मध्य पाइप दबा हुआ, बायें हाथ में तम्बाकू का डिब्बा और दियासलाई, दाहिने हाथ में रायफल, कन्धे में जनेऊ की तरह पड़ी हुई कारतूसों की पेटी, खाकी ब्रिचेस, चारखानेदार हंटिंग-कोट, सिर पर शिकारी टोपी। यह है उसकी वेश-भूषा। शालिनी इकहरे बदन की गौर-वर्ण युवती है। साड़ी रेशमी, ब्लाउज नये फेशन का, सैन्डिल ऊँची एड़ी की, बाल कन्धे तक, कलाई पर बंधी हुई घड़ी सुन्दर और कीमती। महेन्द्रपाल रायफल पिआनो के सहारे टिका देता है। कारतूसों की पेटी लापरवाही से तख्त पर फेंक कर उसके ऊपर टोपी रख देता है। अजयप्रताप और महेन्द्रपाल एक सोफे पर तथा माधुरी और शालिनी दूसरे सोफे पर बैठतीं हैं। महेन्द्रपाल तम्बाकू का डिब्बा और दियासलाई मेज पर रख देता है।]

अजयप्रताप—राजा साहब मजे में हैं ?

महेन्द्रपाल—सब आपकी कृपा है। आप लोग तो आनन्दपूर्वक हैं, ठाकुर साहब ?

अजयप्रताप—(निःश्वास छोड़कर) बस जिन्दा हैं—यही समझ लीजिये, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—यही क्या कम है, ठाकुर साहब ? बहुत से लोग तो जिन्दा रहना चाहकर भी जी नहीं पाते।

अजयप्रताप—(हँसकर) हाँ, हाँ······! सो तो है ही······सो तो है ही।

माधुरी—(वातावरण की गम्भीरता कम करने के उद्देश्य से) आने में बहुत देर कर दी, कुँवर साहब ! हम तो बहुत देर से राह देख रहे हैं।

महेन्द्रपाल—(शालिनी की ओर संकेत करके) इसके मारे देर हो गयी। ऐन वक्त पर कहने लगी—मैं भी चलूँगी।

माधुरी—यह तो बहुत अच्छा रहा। (शालिनी से) क्या नाम है, बेटी ?

शालिनी—शालिनी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—बड़ा अच्छा नाम है।

महेन्द्रपाल—नाम अच्छा है, मगर काम अच्छे नहीं। बड़ी नटखट है हमारी बहन। (**अजयप्रताप से**) पिछले साल ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से समाज-शास्त्र में एम० ए० किया है।

माधुरी—अच्छा······! हमारी माला भी बी० ए० में है।

शालिनी—कहाँ हैं माला बहन ? बुलाइये न······।

माधुरी—(**ऊँचे स्वर में**) माला बेटी ! मेहमान आ गये। (**शालिनी से**) बहुत शर्मीली लड़की है।

महेन्द्रपाल—(**हँसकर**) मगर हमारी बहन तो जानती ही नहीं कि शरम किस चिड़िया का नाम है। चलिये, अब सीख लेगी।

[शालिनी रोष-भरी दृष्टि से महेन्द्रपाल की ओर देखती है। अजयप्रताप और माधुरी हँस पड़ते हैं। अन्दर से माला और विजयप्रताप आते हैं। विजयप्रताप की हुलिया एकदम बदली हुई है। क्लीन शेव, सँवारे हुए बाल, स्वच्छ पाजामा-कुर्ता। दोनों तीसरे कोच पर बैठ जाते हैं।]

माधुरी—(**शालिनी से**) यह है हमारी बेटी, माला !

[माला हाथ जोड़ कर अभिवादन करती है। प्रत्युत्तर में शालिनी भी हाथ जोड़ देती है। फिर वह विजयप्रताप की ओर देखने लगती है।]

महेन्द्रपाल—(**अजयप्रताप की ओर संकेत करके**) और इनका परिचय······?

अजयप्रताप—मेरा छोटा भाई······विजयप्रताप !

महेन्द्रपाल—आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

[महेन्द्रपाल हाथ आगे बढ़ाता है, मगर विजयप्रताप अपने दोनों हाथ जोड़ कर अभिवादन करता है। महेन्द्रपाल झेंप जाता है। शालिनी खिलखिला कर हँस पड़ती है। महेन्द्रपाल उसकी ओर घूरता है।]

शालिनी—चलिये, अब हमारे भैया भारतीय शिष्टाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीख लेंगे ।

अजयप्रताप—(हँसकर) बहन ने बदला ले लिया, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—मैं पहले कह चुका हूँ, बहुत शैतान लड़की है। ऑक्सफोर्ड में यही सब तो सीखा है इसने ।

माधुरी—अभी हँसने-खेलने की उमर है, कुँवर साहब ! (प्रसन्नता से) मुझे तो ऐसी लड़कियाँ बहुत अच्छी लगती हैं ।

[अन्दर से बालो आती है । वह नया लहँगा, जम्फर और नयी ओढ़नी धारण किये है । महेन्द्रपाल उसे सिर से पैर तक देखता है ।]

बालो—मालकिन······

माधुरी—(कड़े स्वर में) क्या है ?

बालो—मेहमानों का सामान अन्दर पहुँचा दिया है, मालकिन !

शालिनी—मेरा सामान भैया के साथ न रखना । मैं नहीं रहूँगी इनके साथ ।

माला—(धीमे स्वर में) आपका सामान मैंने अपने कमरे में रखवा लिया है ।

शालिनी—ओह, धन्यवाद ! (सहसा विजयप्रताप की ओर मुड़कर) आप कुछ नहीं बोल रहे हैं ?

विजयप्रताप—आप लोग तो बोल ही रहे हैं, मैं क्या बोलूँ ?

माधुरी—(विजयप्रताप को टालने के उद्देश्य से) तुम्हें तो अपने दोस्त के यहाँ जाना था, विजय ! कब जाओगे ?

विजयप्रताप—(संकेत समझकर) ओह, मैं तो भूल ही गया था । (उठकर) आपने खूब याद दिला दी, भाभी ! (महेन्द्रपाल से) कुँवर साहब, मैं आज्ञा चाहता हूँ······।

महेन्द्रपाल—मुझे तो कोई एतराज नहीं । मगर हमारी बहन इन बातों का बहुत ध्यान रखती है, उससे पूछ लीजिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[विजयप्रताप शालिनी की ओर देखता है]

शालिनी—दोस्तों से मिलना-जुलना रोज होता है, मेहमान कभी-कभी आते हैं।

विजयप्रताप—(बेबसी से) जी......

शालिनी—मेहमानों को अकेले छोड़कर जाना शिष्टाचार के विरुद्ध है।

महेन्द्रपाल—हमारी बहन का फैसला सुन लिया ? बैठ जाइये, मिस्टर !

[विजयप्रताप माधुरी की ओर देखकर अपनी बेबसी व्यक्त करता है, और फिर अपने स्थान पर बैठ जाता है। माला प्रस्तर-प्रतिमा की भाँति चुपचाप बैठी है। उसकी दृष्टि फर्श पर जमी है।]

माधुरी—(अपना क्रोध बालो पर उतारती हुई) तू अभी तक यहीं खड़ी है ? देख, नाश्ते में क्या देर है ?

[बालो हड़बड़ा कर अन्दर जाती है]

अजयप्रताप—नाश्ता तैयार ही होगा। अगर हाथ-मुँह धोना चाहें......

महेन्द्रपाल—जरूर ! (उठकर) किधर जाना है ?

माधुरी—माला बेटी, कुँवर साहब को अन्दर ले जा।

महेन्द्रपाल—जी, इन्हें तकलीफ देने की क्या जरूरत है ? (विजयप्रताप से) आइये मिस्टर, हम दोनों चलें।

विजयप्रताप—(उठकर) जो आज्ञा।

[माधुरी क्रुद्ध दृष्टि से विजयप्रताप की ओर देखती है। विजयप्रताप दूसरी ओर देखने लगता है।]

शालिनी—(उठकर) हाथ-मुँह तो मैं भी धोना चाहती हूँ।

महेन्द्रपाल—(चिढ़ाने के स्वर में) घर में तो महीनों नहीं धोती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, यहाँ किसे दिखाने के लिये धोयेगी ?

शालिनी—(गम्भीरता से) हर बात में हँसी अच्छी नहीं होती, भैया ! (विजयप्रताप से) चलिये ।

[तीनों अन्दर जाते हैं]

माधुरी—(क्रुद्ध स्वर में अजयप्रताप से) और रोक लो अपने लाड़ले को ! देख लेना वह सब गुड़ गोबर कर देगा । (माला से) और तू तो ऐसे बैठी है जैसे कपड़े की गुड़िया हो !

माला—माँ······

माधुरी—माँ की बच्ची ! कुँवर साहब के सामने मुँह पर ताला पड़ गया । विजय को रोकने के लिए जीभ कतरनी की तरह चल रही थी ।

अजयप्रताप—क्यों आसमान सिर पर उठा रही हो ? कुँवर साहब सुनेंगे तो···

माधुरी—(बीच में ही) तुम्हारे लाड़ ने ही इसे खराब कर दिया है । मैं कहे देती हूँ···

[बालो और शीतल अन्दर आते हैं । बालो के हाथों में चाय और शीतल के हाथों में नाश्ते की ट्रे है ।]

माधुरी—(डाँटकर) यहाँ नाश्ता लाने को किसने कहा था ?

बालो—जी, मैंने सोचा···

माधुरी—जी की बच्ची ! (उठकर बालो के गाल पर तमाचा मारती हुई) और सोचेगी तू······?

[तमाचे की चोट से बालो तिलमिला जाती है । चाय की ट्रे गिरते-गिरते बचती है ।]

अजयप्रताप—क्यों मारती हो बेचारी को ? (बालो से मीठे स्वर में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान अन्दर ले चल··· खाने वाले कमरे में ···।

[**बालो और शीतल का प्रस्थान**]

माधुरी—सब लोग मुझे पागल करके छोड़ेंगे । मैं कहे देती हूँ···

अजयप्रताप—(**बीच में ही**) तुम कुछ न कहो, यही अच्छा है ! चलो अन्दर । तू भी आ, बेटी !

[**अजयप्रताप माधुरी की बाँह पकड़ कर उसे अन्दर ले जाते हैं । माला उठकर साड़ी के अंचल से अपने आँसू पोंछती है । फिर एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर मन्द गति से अन्दर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ती है ।**]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अंक

स्थान—वही गोल कमरा।

समय—प्रातःकाल।

[पर्दा उठने पर दर्शकों को सामने की दीवार पर टँगी घड़ी में आठ बजकर दस मिनट का समय ज्ञात होता है। शालिनी स्लीपिंग गाउन पहने हुए स्टूल पर बैठकर पिआनो बजा रही है। उसके पास ही गरारा-कुर्ता और ओढ़नी धारण किए माला खड़ी है। तख्त पर अजयप्रताप बैठे हैं। वे पाजामा कुर्ता पहने हैं। हुक्के की निगाली उनके मुँह में है। विजयप्रताप धोती-कमीज पहने कोच पर बैठा है। दूसरे कोच पर माधुरी बैठी है। वह साड़ी-ब्लाउज पहने है। सभी ध्यान से पिआनो सुन रहे हैं। अन्दर से महेन्द्रपाल आता है। धारीदार पाजामा, कमीज और स्लीपिंग-गाउन पहने है।]

महेन्द्रपाल—(**ताली बजाकर**) हियर! हियर!! इससे बेसुरा पिआनो आज तक नहीं सुना। कान्ग्रेचुलेशन्स! बधाई!! मरहबा!!!

शालिनी—(**पिआनो बन्द करके उठती हुई**) आपको तो मुझे चिढ़ाने में मजा आता है, भैया! आइये, जरा आप ही सुरीला राग छेड़िये।

महेन्द्रपाल—(**विजयप्रताप के पास बैठकर**) मैं बिना फीस लिए कभी नहीं बजाता।

[**शालिनी और माला तीसरे कोच पर बैठ जाती हैं**]

शालिनी—बिना फीस लिये आप किसी को अपने साथ घुमाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं ले जाते। कल अकेले ही चले गये। (हँसकर) मगर इसमें आपका दोष नहीं, पुरुष-जाति होती ही स्वार्थी है।

विजयप्रताप—पुरुष-जाति के प्रति आपकी यह धारणा कुछ ठीक नहीं लगती।

शालिनी—सौ में निन्नानवे पुरुष स्वार्थी होते हैं। हो सकता है आप सौवें सिद्ध हों।

माधुरी—कौन कैसा है, यह कह सकना बहुत कठिन है, बेटी! ऊपर से साधू लगने वाले अक्सर अन्दर से शैतान होते हैं।

विजयप्रताप—आप ठीक कह रही हैं, भाभी! आदमी को पहचानने में हम अक्सर भूल कर बैठते हैं।

महेन्द्रपाल—मगर शालिनी को सभी बुरे दिखाई पड़ते हैं। तभी तो उसने शादी न करने का फैसला किया है।

[**सबकी दृष्टि शालिनी की ओर घूम जाती है। माला भी कनखियों से उसकी ओर देखती है। अजयप्रताप तख्त से उठकर माधुरी के पास बैठ जाते हैं।**]

माधुरी—ऐसी हँसी ठीक नहीं, कुँवर साहब!

महेन्द्रपाल—मैं ठीक कह रहा हूँ। कहती है, शादी का अर्थ है पति की दासता। विश्वास न हो तो इसी से पूछ लीजिये। बोलती क्यों नहीं, शालिनी?

शालिनी—भैया सच कह रहे हैं। अपने समाज में पत्नी दासी की तरह तो होती ही है। मैं किसी की गुलामी नहीं कर सकती। भगवान ने स्वतन्त्र पैदा किया है, फिर जानबूझ कर जन्जीरों में क्यों बँधू?

अजयप्रताप—(**विस्मय से**) यह क्या कह रही हो, बेटी? भला बिना शादी के भी कोई रह सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिनी—क्यों नहीं रह सकता ? वह जमाना गया जब औरत को रोटी के लिए पहले पिता, फिर पति और अन्त में पुत्र पर निर्भर रहना पड़ता था। आज वह आर्थिक रूप से स्वतन्त्र है।

महेन्द्रपाल—जमाना बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है, ठाकुर साहब !

विजयप्रताप—जमाना बढ़ रहा हो या न बढ़ रहा हो, मगर आप लोग काफी तरक्की कर गये हैं। (हँसकर) मुझे तो आपके विचार भी इन्हीं की तरह लगते हैं, तभी तो······

महेन्द्रपाल—(बीच में ही) आपका अनुमान गलत नहीं है, मिस्टर ! मैं भी क्वाँरा रहने के पक्ष में हूँ। मगर मुझ में और शालिनी में आकाश-पाताल का अन्तर है।

विजयप्रताप—वह कैसे ?

महेन्द्रपाल—शालिनी शादी को पति की गुलामी समझती है और मेरा ख्याल है कि शादी के बाद आदमी औरत का पिट्ठू हो जाता है।

[विजयप्रताप खिलखिलाकर हँस पड़ता है। माधुरी गूढ़ दृष्टि से अजयप्रताप की ओर देखती है। वे दूसरी ओर देखने लगते हैं। माला कसमसा उठती है।]

विजयप्रताप—आपका भी जवाब नहीं, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—यूरोप में क्वाँरे लोग ही सबसे ज्यादा अक़्लमन्द समझे जाते हैं। गली-गली में 'बैचलर्स-क्लब' हैं।

माधुरी—आप लोगों की बातें हमारी समझ में नहीं आतीं।

शालिनी—हमारे आपके दृष्टिकोण में अन्तर है।

अजयप्रताप—(हँसकर) असली फर्क तो उम्र का है। हम ठहरे बूढ़े लोग, लकीर के फकीर, हर चीज को पुरानी आँखों से देखने के आदी। आप लोग ठहरे जवान। नया खून और नया जोश है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(उठकर माधुरी से) चलो, हम लोग अन्दर चलें। इन लोगों को हँसने बोलने दो।

[माधुरी उठकर माला की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि डालती है और फिर अजयप्रताप के साथ अन्दर चली जाती है।]

शालिनी—(विजयप्रताप से) शायद हमारी बातों का ठाकुर साहब बुरा मान गये हैं।

विजयप्रताप—ऐसी बात नहीं है। आप लोगों की आजादी में खलल न पड़े इसीलिए उठकर चले गये हैं।

महेन्द्रपाल—(गम्भीरता से) बहुत समझदार हैं ठाकुर साहब।

विजयप्रताप—और मैं भी सोचता हूँ कि···

शालिनी—(बीच में ही शरारत के स्वर में) अच्छा, आप सोचते भी हैं। (मुस्कराकर) हाँ साहब, फरमाइये, आप क्या सोच रहे हैं?

महेन्द्रपाल—(मीठी झिड़की के साथ) बहुत शरीर हो गयी है तू!

विजयप्रताप—(गम्भीरता से) अभी शरारत करने की उम्र है, कुँवर साहब!

[शालिनी झेंप जाती है]

विजयप्रताप—हाँ, तो मैं सोच रहा था कि आप लोगों की आजादी में मैं भी क्यों बाधा बनूँ?

शालिनी—आप अपने को अभी से बुजुर्ग समझने लगे हैं?

विजयप्रताप—क्या आप मुझे बच्चा समझती हैं?

महेन्द्रपाल—(हँसकर) बुरा न मानिये मिस्टर, इसको अक्सर गलतफहमी हो जाती है।

[शालिनी फिर बुरी तरह झेंप जाती है]

विजयप्रताप—(उठकर) अच्छा, आज्ञा दीजिये, कुँवर साहब!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह नदी किनारे टहलने की आदत है।

शालिनी—अगर एतराज न हो तो मैं भी चलूँ ? यहाँ तो दम घुट रहा है। (माला से) तुम चल रही हो, माला बहन ?

[माला गुम-सुम सी बैठी रहती है]

शालिनी—(हँसकर) शायद तुम्हें टहलने की आदत नहीं। (विजयप्रताप से) चलिये !

विजयप्रताप—(महेन्द्रपाल से) आप भी चलिये न, कुँवर साहब !

शालिनी—टहलने के बजाय मेरे भैया पाइप मुँह में दबाकर, आँखें बन्द करके, पैर फैलाकर, गुम-सुम बने बैठे रहना पसन्द करते हैं।

[विजयप्रताप और शालिनी का हँसते हुए प्रस्थान]

महेन्द्रपाल—(उठकर दीवार पर लगी तस्वीरों को देखता हुआ) अच्छी तस्वीरें हैं, वेरी नेचुरल !! वेरी लिवली !!!

[माला भी अपने स्थान से खड़ी हो जाती है]

महेन्द्रपाल—अरे, आप क्यों खड़ी हो गयीं ? बैठी रहिये न।

[माला उसी प्रकार सिर नीचा किये खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—शायद बैठे-बैठे थक गयी हैं। अक्सर मैं भी थक जाता हूँ। तब तबियत होती है, दौड़ूँ—खूब दौड़ूँ। (पिआनो की ओर बढ़कर) खूबसूरत पिआनो है। (स्टूल पर बैठकर बजाता हुआ) वेरी लवली ! वेरी स्वीट !! (बजाना बन्द करके) आप बजाती हैं ?

माला—(धीमे और संकुचित स्वर में) कभी-कभी......

महेन्द्रपाल—कभी-कभी मैं भी महसूस करता हूँ कि जिन्दगी संगीत और साहित्य के बिना सूनी है। उस वक्त इच्छा होती है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं एकान्त में जाकर खूब जोर से खुलकर गाऊँ, मगर डर भी लगता है……।

[माला विस्मय से उसकी ओर देखने लगती है]

महेन्द्रपाल—धोबियों का डर लगता है।

[माला मुस्कराने लगती है]

माला—(स्टूल पर बैठकर) पिआनो सुनेंगे ?

महेन्द्रपाल—अभी सुनने का मूड नहीं है। वैसे आपकी उँगलियाँ बताती हैं कि आप अच्छा बजाती हैं।

[माला उठकर उँगलियाँ चटकाने लगती है। उसके अधरों पर मन्द मुस्कान है।]

महेन्द्रपाल—वैसे तो मुस्कराना भी एक कला है, लेकिन आदमी को खुलकर हँसना चाहिये। इस तरह……(हँसता है) मैंने यूरोप में यही सीखा है कि हँसने का ही दूसरा नाम जिन्दगी है। यहाँ के लोग मरना जानते हैं, जीना नहीं।

[महेन्द्रपाल कोच पर बैठ जाता है]

माला—(दूसरे कोच पर बैठकर) यूरोप के अनुभव मुझे भी……

महेन्द्रपाल—(बीच में ही) अनुभव सुनेंगी ? (रुककर) वहाँ के लोग काफी आगे बढ़ गये हैं। वहाँ न जाति-पाँति का सवाल है और न छोटे-बड़े की समस्या। सब मनुष्य समान हैं। स्त्री-पुरुष में भी यहाँ की तरह भेद-भाव नहीं। दोनों कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं, और……

[सहसा फोन की घन्टी बज उठती है। महेन्द्रपाल चोंगा उठा लेता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—हलो ! ठाकुर अजयप्रताप के यहाँ से बोल रहा हूँ । जी, किस से बात करेंगे……? हाँ, हाँ……अभी लीजिये । (चोंगा माला की ओर बढ़ाकर) आपका फोन है ।

माला—(आश्चर्य से) मेरा……?

महेन्द्रपाल—जी हाँ ! कोई सतीश साहब बात करना चाहते हैं ।

माला—(चोंगा लेकर) हलो, सतीश ! क्या बात है ? क्या ? रुपया लौटाना चाहते हो ? यह क्या झक सवार हुई है ? नहीं, मैं रुपया नहीं लूँगी । तुम जरूर बाबू जी की बात का बुरा मान गए हो । मगर मैं उनकी तरफ से माफी माँग चुकी हूँ । क्या…? देखो, अगर रुपये लौटाने की बात की तो मुझे बहुत दुख होगा । क्या कहा……? रुपया वापस करने के लिये पठान से कर्ज लिया है ? (दुखी स्वर में) यह तुमने क्या किया, सतीश ? वह तुम्हें जोंक की तरह चूस डालेगा । उसके रुपये फौरन वापस कर दो । क्या……? नहीं, शायद मैं दो-चार दिन कालेज न आ सकूँ । हैं……? नहीं, नहीं, तबियत तो ठीक है । कुछ मेहमान आये हुए हैं । हाँ……मगर सुनो……। हलो……हलो……।

[माला उदास होकर चोंगा रख देती है । महेन्द्रपाल मुस्कराकर माला की ओर देखता है ।]

माला—(सफाई देती हुई) सतीश मेरा सहपाठी है ।

महेन्द्रपाल—इतना तो मैं भी समझ गया था ।

माला—बेचारा गरीब और अनाथ है । मैंने फीस के रुपये दे दिये थे ।

महेन्द्रपाल—यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपके दिल में गरीबों के लिए दया-ममता है । वैसे हमारे वर्ग के लोग हमदर्दी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम पर गोल जीरो होते हैं।

माला—कल शाम को जब किताब माँगने आया तो बाबू जी ने भला-बुरा कह दिया।

महेन्द्रपाल—तभी रुपये लौटाने की बात कह रहा था। (हँसकर) आदमी दिलचस्प मालूम होता है। मिलने की इच्छा हो रही है।

[माला मौन रहती है]

महेन्द्रपाल—और देखिये, आप मेरे लिए कालेज न जायें, यह मुझे पसन्द नहीं। पढ़ाई में नुकसान करना ठीक नहीं। और फिर अगर आप कालेज न गयीं तो शायद सतीश को······मेरा मतलब है कालेज जाकर आप सतीश को पठान के रुपये लौटाने के लिए अच्छी तरह समझा सकती हैं।

[माला का चेहरा लाल हो जाता है। महेन्द्रपाल दूसरी ओर देखने लगता है। उसी समय अन्दर से बालो आती है। माला और महेन्द्रपाल को अकेला पाकर लौटना चाहती है।]

महेन्द्रपाल—अरे, लौट क्यों रही है? इधर आ!

[बालो समीप जाकर खड़ी हो जाती है]

महेन्द्रपाल—क्या नाम है तेरा? तू इस पोशाक में खूब खिलती है।

[बालो दृष्टि नीची किये खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—(उठकर) ऊँचा सुनती है? मैं नाम पूछ रहा हूँ?

[बालो उसी प्रकार खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—(माला से) आपकी नौकरानी भी अजीब है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला—(उठकर कड़े शब्दों में बालो से) जवाब क्यों नहीं देती ?

[बालो माला की ओर देखकर फिर दृष्टि नीची कर लेती है]

महेन्द्रपाल—ऐसे नहीं बतायेगी यह । जब रायफल की नली सीने पर रक्खूँगा तब मुँह खुलेगा । बोल, नाम बताती है या नहीं ?

[बालो प्रस्तर-प्रतिमा की भाँति खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—(द्वार की ओर बढ़कर) अभी लाता हूँ रायफल !

[बालो डर जाती है । 'उई दैया' कहकर माला से चिपट जाती है । महेन्द्रपाल खिलखिलाकर हँस पड़ता है । माला झुँझलाकर बालो को अपने से अलग करती है ।]

महेन्द्रपाल—अब कैसे मुँह खुला ? क्या नाम है तेरा ?

बालो—(धीमे स्वर में) बा···लो···

महेन्द्रपाल—बालो······! अच्छा नाम है । (रुककर) पहले क्यों नहीं बता रही थी ?

बालो—मालकिन ने मना किया था ।

महेन्द्रपाल—मना किया था ?

माला—(बिगड़ कर) झूठ बोलते शर्म नहीं आती ? माँ क्यों मना करने लगीं ?

बालो—सच कह रही हूँ, बीबी जी ! मालकिन से पूछ लीजिये ।

[माला अविश्वास से उसकी ओर देखती है]

महेन्द्रपाल—(हँसकर) क्या कहा था मालकिन ने ?

[बालो मौन रहती है]

महेन्द्रपाल—उन्होंने कहा था कि अपना नाम न बताना ?

बालो—कहा था, अगर मेहमानों के आगे जीभ खोली तो काट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर फेंक दूंगी। (रुँआसी होकर) इसी डर से······

[माला मुस्कराने लगती है। महेन्द्रपाल हँस पड़ता है]

महेन्द्रपाल—बहुत भोली है तू ! (माला की ओर मुड़कर) मुझे आपकी नौकरानी बहुत पसन्द है। (रुककर) इन लोगों में दिल की सच्चाई होती है। ये लोग हमारी तरह ऊपर से गोरे और अन्दर से काले नहीं होते।

[बालो अपनी प्रशंसा सुनकर लज्जा से सिर झुका लेती है। वह कनखियों से महेन्द्रपाल की ओर कभी-कभी देख लेती है। माला की विचित्र स्थिति है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि महेन्द्रपाल की बात का क्या उत्तर दे।]

महेन्द्रपाल—आप शायद मुझसे सहमत नहीं ?

माला—(टूटे स्वर में) जी······जी······यह बात नहीं है। मैं··· मैं क्षमा चाहती हूँ। सिर में दर्द हो रहा है······।

[माला तेजी से अन्दर चली जाती है। महेन्द्रपाल आश्चर्य से द्वार की ओर देखता रहता है। बालो दृष्टि उठाकर महेन्द्रपाल की ओर देखती है।]

महेन्द्रपाल—क्या अक्सर इनके सिर में दर्द होने लगता है ?

बालो—नहीं तो।

महेन्द्रपाल—(चिन्तित स्वर में) जाकर माथे में बाम लगा दे।

बालो—(संकुचित स्वर में) आप जाइये, कुँवर साब !

महेन्द्रपाल—(विस्मय से) मैं······?

बालो—इसीलिए तो सिर में पीर हुई है। ओह, आप तो कुछ भी नहीं समझते। (पास जाकर) दर्द का तो बहाना है। चलिये मैं आपको उनके कमरे तक पहुँचा दूँ······।

महेन्द्रपाल—(न समझने के ढंग से) यह क्या बक रही है तू ? मैं उनके कमरे में कैसे जा सकता हूँ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—(मुस्कराकर) आप तो लड़कियों से भी ज्यादा शर्मीले हैं, कुँवर साब । जाइये न……। अगर मालिक और मालकिन की शरम है तो उनकी फिकर न कीजिये । (मुस्कराकर) मैं पहरा देती रहूँगी ।

महेन्द्रपाल—मालूम होता है तेरा सिर फिर गया है ।

बालो—इसमें सिर फिरने की क्या बात है, कुँवर साब ? माला बीबी पर तो आपका हक है ।

महेन्द्रपाल—(बिगड़कर) क्या बक रही है ?

बालो—आप समझते हैं मुझे कुछ मालूम नहीं । (मुस्कराकर) मालकिन ने मुझे सब कुछ बता दिया है ।

महेन्द्रपाल—(शंकित स्वर में) मालकिन ने क्या कहा है तुझसे ?

बालो—(स्वर दबाकर) यही कि आप दोनों की सगाई होने वाली है ।

महेन्द्रपाल—ओह, यह बात है ।

[महेन्द्रपाल चिन्तित मुद्रा में टहलने लगता है । बालो उसकी ओर देखती रहती है ।]

महेन्द्रपाल—(बालो के पास रुककर) देख, किसी से यह न कहना कि तूने मुझे यह बात बता दी है ।

बालो—मुझे क्या गरज पड़ी है, कुँवर साब ? (कान पकड़कर) यह लीजिये, कान पकड़ती हूँ । (कान छोड़कर) अब तो आपको भरोसा……।

महेन्द्रपाल—मुझे पूरा भरोसा है तुझ पर ।

[बाहर से विजयप्रताप और शालिनी के हास्य का स्वर आता है । एक क्षण बाद दोनों का प्रवेश । दोनों प्रसन्न मुद्रा में हैं ।]

विजयप्रताप—अरे, आप बालो से क्या बातें कर रहे हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिनी—हमारे भैया मिस्टर मार्लो के नये संस्करण हैं ।

[महेन्द्रपाल क्रुद्ध दृष्टि से शालिनी की ओर देखता है । शालिनी के अधरों पर शरारत-भरी मुस्कान है ।]

विजयप्रताप—माला कहाँ है, बालो ?

बालो—अभी तो यहीं थी, छोटे सरकार ! सिर में पीर होने लगी सो अन्दर चली गयीं ।

शालिनी—इनके साथ जो रहता है, उसी के सिर में दर्द होने लगता है ।

महेन्द्रपाल—तेरी जीभ बहुत चलने लगी है । **(विजयप्रताप से)** क्यों मिस्टर ! आप किसी ऐसे मदारी को जानते हैं जो इसे नकेल पहनाकर नचा सके ?

बालो—**(भोलेपन से)** कुँवर साब, एक बार कोठी में एक मदारी आया । हमारे छोटे सरकार ने उसकी बँदरिया को ऐसा नचाया......ऐसा नचाया कि......

[महेन्द्रपाल और विजयप्रताप हँस पड़ते हैं । शालिनी झेंप जाती है । बालो कभी महेन्द्रपाल की ओर देखती है, कभी विजयप्रताप की ओर ।]

बालो—मैं सच कह रही हूँ, कुँवर साब ! भगवान की सौगन्ध ! छोटे सरकार से पूछ लीजिये ।

[दोनों फिर हँसते हैं]

शालिनी—**(डाँटकर)** तुझे यह भी नहीं मालूम कि मालिकों से किस तरह बात करनी चाहिये ?

विजयप्रताप—**(बालो से)** जा, तू अन्दर जा ।

[बालो द्वार की ओर बढ़ती है]

महेन्द्रपाल—ठहर, मैं भी चलता हूँ । तूने आज हमारी बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी परेशानी दूर कर दी, बालो ! मैं तुझे ईनाम दूँगा·····मुँह माँगा ईनाम दूँगा । आ, मेरे साथ ।

[महेन्द्रपाल और बालो अन्दर जाते हैं]

विजयप्रताप—(हँसकर) आपके भाई साहब भी अजीब आदमी हैं ।

शालिनी—उनमें और आपमें कोई फर्क नहीं ।

विजयप्रताप—क्या मतलब है आपका ?

शालिनी—उनमें शिष्टाचार की कमी है, और आपमें उसकी अधिकता । फल दोनों का एक ही है । वे अपनी अशिष्टता से लड़कियों को पास नहीं फटकने देते और आप शिष्टाचार की खाई द्वारा उन्हें दूर रखते हैं ।

विजयप्रताप—(कोच पर बैठकर हँसता हुआ) शिष्टाचार भी अशिष्टता का लक्षण है, यह आज ही जाना । अपने को सुधारने की कोशिश करूँगा ।

शालिनी—(कार्निस पर रक्खी शतरंज देखकर) शतरंज बिछाई जाये ?

विजयप्रताप—मैं जिन्दगी का जुआ हार चुका हूँ । अब शतरंज में कोई दिलचस्पी नहीं ।

शालिनी—जिसे हम हार समझते हैं वही कभी-कभी जीत साबित होती है ।

विजयप्रताप—मेरे लिये जीत और हार में कोई अन्तर नहीं ।

शालिनी—(कोच पर बैठकर) आपकी बातें तो पहेली-सी लगती हैं ।

विजयप्रताप—जिन्दगी खुद कभी न सुलझने वाली पहेली है ।

शालिनी—आप तो दार्शनिकों जैसी बातें करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयप्रताप—(उसी गम्भीरता से) कटु अनुभूतियाँ मनुष्य को दार्शनिक बना देती हैं।

शालिनी—क्षमा कीजिये, क्या कभी आपने प्यार में धोखा खाया है ?

विजयप्रताप—आपका सवाल सुनकर आश्चर्य होता है। मैं तो आपको काफी समझदार समझता था।

शालिनी—यह आपकी समझ का फेर है। (मुस्कराकर) मैं तो अपने को महामूर्ख मानती हूँ।

विजयप्रताप—(हँसकर) ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में चाहे और कुछ न सिखाया जाता हो, पर बात करने का तरीका खूब सिखाया जाता है।

शालिनी—आप विषय बदलना चाहते हैं। (मुस्कराकर) मैं अपने प्रश्न का उत्तर चाहती हूँ।

विजयप्रताप—आपका प्रश्न बेतुका है। प्यार में धोखा कहाँ ? धोखा, छल, छद्म का प्रश्न तब उठता है जब प्यार के पवित्र अञ्चल पर वासना के काले धब्बे लग जाते हैं।

शालिनी—आपकी बातों से मैं तो आपको निराश प्रेमी समझी थी।

विजयप्रताप—(हँसकर) यह आपकी समझ का फेर है।

शालिनी—(गम्भीरता से) क्या·····क्या आपने कभी किसी से प्यार नहीं किया ?

विजयप्रताप—नहीं ! और फिलहाल करने का कोई इरादा भी नहीं है।

शालिनी—शादी के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

विजयप्रताप—इस विषय पर सोचने की कभी फुर्सत ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली। वैसे आपका विचार मुझे पसन्द नहीं।

शालिनी—क्यों ? क्या शादी के बाद नारी को पुरुष की दासता नहीं करनी पड़ती ?

विजयप्रताप—यदि नारी चाहे तो वह पुरुष की स्वामिनी बन सकती है।

शालिनी—कैसे ?

विजयप्रताप—सेवा और त्याग से। इस विषय पर फिर से विचार करियेगा।

शालिनी—करूँगी। आप भी जरा इस विषय पर सोचियेगा कि बिना प्यार के जीना कहाँ तक सम्भव है ?

विजयप्रताप—(**मुस्कराकर**) आप स्वयम् अपनी बात काट रही हैं। बिना शादी किये प्यार कैसे मिल सकता है ?

शालिनी—प्यार के बाद भी शादी की जा सकती है।

विजयप्रताप—बात एक ही है। नाक चाहे आगे से पकड़िये, चाहे पीछे से।

[**दोनों हँसते हैं**]

शालिनी—अभी बालो आपकी तारीफ कर रही थी। क्या सचमुच आपने बँदरिया नचायी थी ?

[**विजयप्रताप सिर हिलाता है**]

शालिनी—तब तो आप पक्के मदारी हैं। (**मुस्कराकर**) आपसे बच कर रहना चाहिये।

विजयप्रताप—क्षमा कीजिये, क्या आप अपने को......

शालिनी—जी हाँ, मैं अपने को बँदरिया ही समझती हूँ।

[**दोनों फिर हँसते हैं। अन्दर से माधुरी आती है। दोनों को इस प्रकार हँसते देखकर मुँह बनाती है। दोनों गम्भीर हो जाते हैं।**]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—बातें करने के अलावा और कोई काम नहीं है तुम्हारे पास, विजय ? कुँवर साहब अकेले बैठे हैं।

विजयप्रताप—(संकेत समझकर) मैं जा रहा हूँ उनके पास। (उठकर) मेरे लायक कोई और काम हो तो बता दो, भाभी !

[माधुरी कोई उत्तर नहीं देती। विजयप्रताप हँसता हुआ अन्दर चला जाता है। शालिनी भी कोच से उठकर जाना चाहती है।]

माधुरी—तुम कहाँ चल दीं, बेटी ? दो मिनट हम बूढ़ों के पास भी तो बैठ लो।

[माधुरी कोच पर बैठ जाती है। शालिनी फिर अपने स्थान पर बैठ जाती है। उसके चेहरे पर बेबसी के चिन्ह उभर आते हैं।]

माधुरी—विजय के साथ कहाँ घूम आयीं, बेटी ?

शालिनी—नदी किनारे गयी थी।

माधुरी—(आगे झुककर) विजय ने कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं की ?

शालिनी—(न समझने के ढंग से) जी, क्या मतलब है आपका ?

माधुरी—(गम्भीर और दुखी स्वर में) अब तुमसे क्या छिपाऊँ, बेटी ! मेरे लिये जैसी माला, वैसी तुम। (धीमे स्वर में मानो कोई भेद की बात कह रही हो) विजय का चाल-चलन ठीक नहीं है।

शालिनी—(विस्मय से) जी······यह क्या कह रही हैं आप ?

माधुरी—ठीक कह रही हूँ, बेटी ! दुनिया जानती है। (दुखी स्वर में) जब अपना रुपया ही खोटा है तो परखने वालों का क्या दोष ? (रुककर) उसके साथ अकेले घूमना-फिरना ठीक नहीं। न जाने क्या हरकत कर बैठे !

शालिनी—(अविश्वास के स्वर में) मगर······मगर विश्वास नहीं होता। कल भी उनके साथ रही, आज भी रही। मेरे साथ तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत तरीके से बात की ।

माधुरी—तुम्हें अपना समझ कर ही कह रही हूँ, बेटी ! कुछ साल पहले उसने एक नीच जाति की छोकरी के साथ मुँह काला किया था । जब उसे मालूम हुआ कि वह माँ बनने वाली है तो…… तो……बदनामी के डर से उसका गला घोंट दिया ।

शालिनी—(**टूटे स्वर में**) यह……यह क्या कह रही हैं आप ? वे ऐसा पाप नहीं कर सकते……कभी नहीं कर सकते । उनका चेहरा देखकर……

माधुरी—(**बीच में ही**) मैं पहले कह चुकी हूँ कि ऊपर से सीधे-साधे लगने वाले लोग शैतान होते हैं । वह परले सिरे का ढोंगी है। सुनो, मैं चाहती थी कि उसकी शादी मेरी ममेरी बहन से हो जाए। जब मैंने बात की तो साफ इन्कार कर गया । कहने लगा, मैं शादी नहीं करूँगा । (**घृणा से**) ब्रह्मचारी होने का स्वाँग रचता था । लेकिन कुछ दिन बाद ही उस नीच जाति की……

शालिनी—(**बीच में ही**) उन्होंने आपका प्रस्ताव ठुकरा दिया, आप इसी से नाराज हैं ।

माधुरी—(**हँसकर**) ऐसी बात नहीं है, बेटी ! हम तो उसके कर्मों से दुखी हैं । वंश के नाम पर काला टीका लगा दिया है उसने ।

[**शालिनी गम्भीर हो जाती है । उसके चेहरे पर आन्तरिक द्वन्द के भाव स्पष्ट हैं ।**]

माधुरी—शायद तुम्हें मेरी बात का यकीन नहीं आ रहा है । उसी से पूछ लेना । कल ही तो जेल से आया है । (**उठकर**) समझाना मेरा धर्म था । आगे तुम्हारी मर्जी । (**मीठे स्वर में**) कुँवर साहब से कुछ न कहना, बेटी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[माधुरी अन्दर जाती है । शालिनी बाहों में मुँह छिपाकर सिसकने लगती है । कुछ देर तक उसकी करुण सिसकियाँ कक्ष के शान्त वातावरण में गूंजती रहती हैं । अन्दर से विजयप्रताप और महेन्द्रपाल आते हैं । शालिनी को सिसकता देखकर दोनों चिन्तित हो उठते हैं । विजयप्रताप के चेहरे पर वेदना का भाव उदित होता है ।]

महेन्द्रपाल—क्या बात है, शालिनी ? (पीठ पर हाथ फेर कर) किसी ने कुछ कहा है ?

[शालिनी फूट-फूट कर रोने लगती है । विजयप्रताप बेचैनी से टहलने लगता है ।]

महेन्द्रपाल—पागलों की तरह रो क्यों रही है ? बोल क्या बात है ?

शालिनी—(सिसक कर) भगवान के लिए मुझे अपने हाल पर छोड़ दो, भैया !

महेन्द्रपाल—मैं अभी माला को भेजता हूँ ।

[महेन्द्रपाल विजयप्रताप की ओर देखता है और फिर तेजी से अन्दर चला जाता है । विजयप्रताप टहलता रहता है । शालिनी उसी प्रकार सिसकती रहती है ।]

विजयप्रताप—(कोच पर बैठकर) आपकी आँखों में आँसू शोभा नहीं देते ।

शालिनी—(सिसक कर) जब दिल रोता है तब आँखों में आँसू आ ही जाते हैं ।

विजयप्रताप—दिल की कमजोरी ठीक नहीं । क्या बात है ? भाभी ने कुछ कहा है ?

शालिनी—उन्होंने बहुत कुछ कहा है । मगर…मगर उनकी बातों पर विश्वास नहीं होता । कह दीजिये, उन्होंने जो कुछ कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है झूठ है···सरासर झूठ है ।

विजयप्रताप—उन्होंने क्या कहा है, बिना यह जाने अपना निर्णय कैसे दे सकता हूँ ?

शालिनी––(विजयप्रताप की ओर अपलक दृष्टि से देखकर) आप कल जेल से आये हैं ?

विजयप्रताप––(गम्भीर स्वर में) ओह, तो भाभी ने मेरे बारे में कहा है । हाँ, मैं कल ही जेल से आया हूँ ।

शालिनी––(विस्मय और दुख से) तो उनकी बात सच है । आपने नीच जाति की लड़की···

विजयप्रताप––मैं समझता हूँ आपकी व्यथा को । आप मुझे भला आदमी समझती थीं । मगर मैं बुरा निकला···बहुत बुरा निकला । मुझे खेद है—बहुत खेद है । मगर···मगर···अभी इतना ही कहूँगा कि बदनाम व्यक्ति अक्सर अन्दर से भला होता है । (उठकर) मुझे और कुछ नहीं कहना है । आपके विश्वास को ठेस पहुँची इसके लिए क्षमा चाहता हूँ ।

शालिनी––मुझे यकीन नहीं होता कि आप वैसा घृणित कार्य कर सकते हैं ।

विजयप्रताप––(मुस्कराकर) धन्यवाद !

[विजयप्रताप तेजी से बाहर चला जाता है । शालिनी विह्वल होकर कक्ष में टहलने लगती है । अन्दर से चिन्तित मुद्रा में माला आती है ।]

माला—कुँवर साहब ने बताया, आप रो रही हैं । क्या बात है ? हमसे कोई अपराध हो गया है ?

[शालिनी उत्तर नहीं देती । चुपचाप कोच पर बैठ जाती है]

माला—(उसके समीप बैठकर) चाचा जी ने कुछ कहा है ?

[शालिनी माला की ओर देखती है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला—आपको उनकी किसी बात का बुरा नहीं मानना चाहिए। उनका व्यवहार रूखा भले हो, पर हृदय बहुत उदार है।

शालिनी—तुम गलत समझ रही हो, माला बहन ! तुम्हारे चाचा जी की किसी बात का बुरा नहीं माना है मैंने।

माला—फिर क्या बात है ?

शालिनी—क्या बताऊँ कुछ समझ में नहीं आता। (**रुककर**) माला बहन, एक बात पूछूँ सच-सच बताओगी ?

माला—झूठ बोलने की आदत अभी तक तो नहीं है।

शालिनी—तुम्हारे चाचा जी कैसे आदमी हैं ?

माला—(**हँसकर**) आप अजीब सवाल पूछ रही हैं। **जैसे हैं,** आपके सामने हैं।

शालिनी—मेरा मतलब है, उनका चरित्र कैसा है ?

माला—आपको उनसे कभी कोई शिकायत नहीं होगी।

शालिनी—तुम उन्हें अच्छा आदमी समझती हो ?

माला—चाचा जी जैसा व्यक्ति आपको खोजने से भी नहीं मिलेगा। लाखों में एक हैं।

शालिनी—तुम्हारे दिल में उनके लिए बहुत मान है ?

माला—मैं उनका सम्मान बाबू जी से भी अधिक करती हूँ।

शालिनी—अगर वे इतने भले और नेक हैं तो जेल क्यों गये थे ?

[माला शालिनी के प्रश्न से चौंक पड़ती है। वह निर्निमेष दृष्टि से शालिनी की ओर देखती है।]

शालिनी—तुम समझती थीं, मुझे कुछ मालूम नहीं।

माला—(**अस्फुट स्वर में**) आपको यह कैसे मालूम हुआ ?

शालिनी—किसी तरह भी मालूम हुआ हो। बताओ, वे जेल क्यों गये थे ? जो कुछ मैंने सुना है अगर वह सच है तब तो उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्र अच्छा नहीं कहा जा सकता।

माला—(**आवेश में**) मगर आपने जो कुछ सुना है, वह गलत है।

शालिनी—(**प्रसन्न होकर**) तो···तो क्या जेल जाने की बात झूठी है ?

माला—(**उठकर टहलती हुई**) वे कल ही जेल से आये हैं।

शालिनी—(**उदास होकर**) मगर अभी तो तुम······

माला—(**बीच में ही**) मगर वे जेल अपने अपराध के लिए नहीं गये थे। दूसरे को कलंक से बचाने के लिए उन्होंने अपराध का टोकरा अपने सिर पर ले लिया था। दूसरे के पाप का दण्ड खुद भोगा, सजा काटी, बदनामी सही। क्या यह उनकी महानता नहीं है ? मैं···मैं आपसे पूछती हूँ, आज की स्वार्थी दुनिया में इस तरह के लोग कितने हैं ? चाचा जी मनुष्य नहीं, देवता हैं।

शालिनी—(**हर्षित स्वर में उठकर**) मेरी छाती का बोझ हल्का कर दिया तुमने। मैं जानती थी, वे ऐसा पाप नहीं कर सकते ! कभी नहीं कर सकते !!

माला—अब क्या मैं यह पूछ सकती हूँ कि चाचा जी के बारे में आपसे सब कुछ किसने कहा ? मैं जानती हूँ, यह दुष्टता वालो की ही होगी !

शालिनी—वालो को दोष न दो, माला बहन ! उस बेचारी ने मुझसे इस बारे में कुछ भी नहीं कहा।

माला—फिर किसने कहा ?

शालिनी—तुम्हारी माँ जी ने !

माला—(**चौंक कर**) माँ ने ?

शालिनी—हाँ ! वे मुझे समझा रही थीं कि तुम्हारे चाचा जी का चरित्र ठीक नहीं है, मुझे उनसे दूर रहना चाहिए। क्या···क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें सही बात का पता नहीं ?

माला——(गम्भीर स्वर में) वे चाचा जी को ही अपराधी समझती हैं।

शालिनी——तुम उन्हें सच्ची बात बताती क्यों नहीं ?

[माला मौन रहती है]

शालिनी——अच्छा, यह बताओ कि वास्तव में अपराधी कौन है ?

माला——चाचा जी निर्दोष हैं। आपके लिए इतना ही काफी है।

[माला अन्दर जाने के लिए तेजी से द्वार की ओर बढ़ती है। अन्दर से महेन्द्रपाल आता है। माला उससे टकरा जाती है। शालिनी खिलखिला कर हँस पड़ती है।]

महेन्द्रपाल——धोखे में आपसे टकरा गया। माफी चाहता हूँ।

माला——अपराध मेरा है।

महेन्द्रपाल——तब माफी आपको माँगनी चाहिए।

माला——मैं क्षमा चाहती हूँ।

महेन्द्रपाल——क्षमा कर दिया। (रुककर) अब सिर का दर्द ठीक है ?

[माला सिर हिलाती है]

महेन्द्रपाल——मुझे अभी माँ जी ने बताया कि आपने आज चाय नहीं पी।

माला——(धीमे स्वर में) मैं आपकी राह देख रही थी।

महेन्द्रपाल——आपको शालिनी ने नहीं बताया कि मैं ब्रेक फास्ट नहीं लेता ? क्यों शालिनी ?

शालिनी——मैं तो भूल ही गई थी। (माला से) देखूँ, तुम्हारे चाचा जी कहाँ हैं !

[शालिनी बाहर जाती है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—मैं बैड-टी लेने का आदी हूँ। बालो ने पहुँचा दी थी। (हँसकर) आपकी नौकरानी मेरा बहुत ख्याल रखती है। जाइये, आप भी जलपान कर लीजिये।

माला—अब आपके साथ लन्च ही लूँगी। (दृष्टि दूसरी ओर करके) अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो······

महेन्द्रपाल—(हँसकर) मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? (रुककर) आप आज कालेज नहीं जायेंगी?

[माला नकारात्मक सिर हिलाती है]

महेन्द्रपाल—यह तो बहुत बुरी बात है। (कोच पर बैठकर) तब तो मुझे जल्द ही यहाँ से चला जाना पड़ेगा।

माला—माँ की आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है।

महेन्द्रपाल—आपकी माँ ने कालेज न जाने की आज्ञा दी है?

माला—(महेन्द्रपाल की ओर बढ़कर) जी हाँ! वे चाहती हैं, आपका स्वागत-सत्कार मैं करूँ।

महेन्द्रपाल—क्यों? वे मुझे बाहर का आदमी समझती हैं क्या?

[माला सिर झुकाये खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—मेरी खातिरदारी के लिए बालो है ही। आपको कल जरूर कालेज जाना चाहिये। अगर न गयीं तो मुझे दुख होगा, उसी तरह, जिस तरह आपको सतीश के रुपये लौटाने से होगा।

[माला चौंक कर महेन्द्रपाल की ओर देखती है। वह उठकर कार्निस के पास जाता है और वहाँ से शतरंज का बोर्ड तथा मोहरों का डिब्बा उठा लाता है।]

महेन्द्रपाल—(शतरंज का बोर्ड मेज पर रखकर) खेलियेगा?

माला—(कोच पर बैठकर) मैं अनाड़ी हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—(मोहरे रखता हुआ) मुझसे ज्यादा अनाड़ी नहीं होंगी। अगर हार जाऊँ तो हँसियेगा मत।

माला—आपने तो मेरे मुँह की बात छीन ली।

महेन्द्रपाल—आप मुझे गलत समझ रही हैं। किसी दूसरे की वस्तु छीनना मेरा स्वभाव नहीं। विश्वास रखिये।

[**दोनों शतरंज खेलते हैं। बालो अन्दर आती है**]

बालो—(**माला से**) मालकिन पूछ रही हैं, चाय भेजूँ ?

माला—नहीं।

[**माला का ध्यान खेल में लगा है। बालो भी झुककर ध्यान से देखने लगती है।**]

महेन्द्रपाल—अपना घोड़ा बचाइये।

माला—कोई सूरत नजर नहीं आती। आपका प्यादा मेरे घोड़े का काल हो गया।

महेन्द्रपाल—चाल वापस ले लूँ ?

माला—धन्यवाद ! सोचने दीजिये। शायद कोई चाल निकल आये।

[**माला विचारमग्न हो जाती है। महेन्द्रपाल के अधरों पर मुस्कान है। वह बालो की ओर देखता है।**]

महेन्द्रपाल—कोई चाल समझ में आयी ?

माला—लगता है, घोड़ा देना ही पड़ेगा।

बालो—आप घबराती क्यों हैं, बीबी जी ? (**झुककर**) इस ऊँट को यहाँ रखिये।

माला—उससे क्या होगा ?

बालो—अगर कुँवर साब प्यादे से आपका घोड़ा मारेंगे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको उनका वजीर मिल जायेगा।

महेन्द्रपाल—(**प्रशंसा के स्वर में**) अरे, तू तो अपनी बीबी जी से भी अच्छा खेलती है। (**माला से**) चाल अच्छी है।

माला—(**चिढ़े स्वर में**) मगर मैं किसी की बताई हुई चाल चलना पसन्द नहीं करती। खुद कोई रास्ता निकालूँगी।

बालो—और कोई चाल नहीं है, बीबी जी!

माला—(**डाँटकर**) तू अपना काम कर।

[**बालो सहमकर महेन्द्रपाल की ओर देखने लगती है**]

महेन्द्रपाल—(**मुस्कराकर**) बालो ठीक कह रही है। घोड़े के सब घर बन्द हैं। घोड़े को बचाने के लिए यही चाल ठीक है।

माला—मैं घोड़ा बचाना नहीं चाहती। यह लीजिए, मैं यह प्यादा बढ़ी।

[**प्यादा आगे बढ़ती है**]

महेन्द्रपाल—मैं भी यह प्यादा बढ़ा।

[**दूसरा प्यादा बढ़ता है**]

माला—(**आश्चर्य से**) आपने घोड़ा नहीं मारा?

महेन्द्रपाल—(**मुस्कराकर**) जब आपने बचाने की जरूरत नहीं समझी तो मुझे मारने की क्या जरूरत है? (**गम्भीरता से**) मैं शिकारी हूँ और सच्चा शिकारी कभी उस शिकार को नहीं मारता जो स्वयं अपनी जान देने पर तुला हो‥ और यह सिद्धान्त मैं जीवन के हर क्षेत्र में मानता हूँ।

माला—(**व्यंग्य से**) क्षमा कीजिये, मैं आपका यह स्वभाव जानती न थी। (**बालो से**) बालो, ले तू खेल आकर।

[**माला उठकर तेजी से अन्दर चली जाती है। महेन्द्रपाल विस्मय से द्वार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर देखता रहता है । फिर उसके अधरों पर मुस्कान खेल जाती है । वह बालो की ओर देखता है । बालो के चेहरे पर घबराहट और भय के चिन्ह हैं ।]

महेन्द्रपाल—खेलेगी ?

बालो—(रुक-रुक कर) मैं……? मालकिन देख लेंगी तो कच्चा चबा जायेंगी, कुँवर साब ! (मोहरे डिब्बे में रखती हुई) आप बार-बार बीबी जी को नाराज क्यों कर देते हैं ?

महेन्द्रपाल—मैंने नाराज करने वाली तो कोई बात नहीं की। न जाने तेरी बीबी जी का कैसा स्वभाव है ?

[शतरंज का बोर्ड और मोहरों का डिब्बा कार्निस पर रखकर बालो मेज-पोश ठीक करती है । महेन्द्रपाल जेब से पाइप निकाल कर सुलगाता है और फिर उठकर टहलने लगता है ।]

बालो—शालिनी बीबी जी कह रही थीं, आप बहुत नामी शिकारी हैं ।

महेन्द्रपाल—शिकार में मुझे मजा आता है ।

बालो—तभी आप हर वक्त बन्दूक साथ रखते हैं ।

महेन्द्रपाल—(हँसकर) वह बन्दूक नहीं, रायफल है ।

बालो—राफल……? उससे आदमी मर जाता है ?

महेन्द्रपाल—उससे बड़े-बड़े शेर मर जाते हैं । एक बार इसी से एक जंगली हाथी का शिकार किया था ।

बालो—(विस्मय से) आपने उससे हाथी मारा था ? (भीत मुद्रा में) बाप रे बाप……! तब तो उससे दूर ही रहना चाहिये……। (सहसा याद करके) उई दैया, आप उसे मेरी छाती पर रखने को कह रहे थे । अगर…अगर मैं मर जाती तो……।

महेन्द्रपाल—(हँसकर) अरे पगली उसमें गोली थोड़े ही भरता। खाली रायफल से क्या डर……?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—(**भीत स्वर में**) मुझे डर लगता है, कुँवर साब !

महेन्द्रपाल—किससे ?

बालो—आपसे ।

महेन्द्रपाल—मुझसे ! क्यों ?

बालो—आप शिकारी जो हैं । न जाने किसका शिकार करने के लिये आप राफल लाये हैं !

महेन्द्रपाल—बहुत भोली है तू !

बालो—सुना है, शिकारी लोग बहुत बुरे होते हैं । उनका कलेजा पत्थर का होता है ।

महेन्द्रपाल—अच्छा……?

बालो—हाँ, उनके अन्दर दया-ममता नहीं होती । शिकार के सीने में गोली मार कर वे हँसते हैं, शिकार जब घायल होकर तड़पता है तो उन्हें मजा आता है ।

महेन्द्रपाल—तू ने यह नहीं सुना कि कभी-कभी शिकारी खुद भी घायल हो जाता है ?

बालो—(**विस्मय से**) अच्छा……!

महेन्द्रपाल—हाँ, और मजा यह कि शेरनी का शिकार करने वाले को अक्सर हिरनी घायल कर देती है ।

बालो—सींगों से ?

महेन्द्रपाल—नहीं, आँखों से !

बालो—(**भोलेपन से**) हिरनी की आँखों से गोली निकलती है क्या ?

महेन्द्रपाल—गोली नहीं, तीर निकलते हैं……तीर ! गोली की चोट से एक बार कोई बच भी जाये, मगर उन तीरों का घायल कभी बच ही नहीं सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—कभी मुझे भी ऐसी हिरनी दिखाइये, कुँवर साब !

महेन्द्रपाल—तू तो रोज ही देखती है ।

बालो—ग्राप हँसी कर रहे हैं, कुँवर साब ! (सहसा कुछ समझ कर) ग्रोह, समझ गयी, ग्राप बीबी जी के बारे में कह रहे हैं ! (हँसकर) उनकी ग्राँखें हैं भी हिरनी की तरह ।

[बालो मुड़कर ग्रन्दर जाना चाहती है]

महेन्द्रपाल—ग्ररे, कहाँ चल दी ! सुन तो !

[बालो रुक जाती है]

महेन्द्रपाल—(बालो के पास ग्राकर) तू ठाकुर साहब के यहाँ कब से है ?

बालो—जनम से !

महेन्द्रपाल—जनम से ?

बालो—हाँ ! मेरा जनम यहीं हुग्रा था ।

महेन्द्रपाल—माँ-बाप ठाकुर साहब के यहाँ हैं ?

बालो—थे ! ग्रब ठाकुर साहब ही हमारे माँ-बाप हैं ।

महेन्द्रपाल—माता-पिता दोनों नहीं रहे ?

बालो—जब मैं पाँच साल की थी, तभी बाप हमें छोड़कर कहीं चला गया था । मालूम नहीं कहाँ है । (रुद्ध कण्ठ से) जिन्दा भी है या नहीं । माँ साल भर बाद मर गयी ।

महेन्द्रपाल—बाप क्यों चला गया था ?

बालो—माँ से झगड़ा हुग्रा था ।

महेन्द्रपाल—किस बात पर ?

[बालो जवाब नहीं देती]

महेन्द्रपाल—बताना नहीं चाहती ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो--(दृष्टि झुका कर) मेरे कारन !

महेन्द्रपाल--तेरे कारण ?

बालो—हाँ, कुँवर साब ! मैं बहुत अभागिन हूँ। (ओढ़नी के छोर से आँसू पोंछती है) अब और कुछ न पूछिये।

महेन्द्रपाल--अच्छा, अच्छा ! नहीं पूछूँगा। (रुककर) मैंने तेरा दिल दुखाया इसके लिये माफी माँगता हूँ।

बालो—(आँसू पोंछकर) हम गरीबों के दिल होता ही कहाँ है, कुँवर साब !

महेन्द्रपाल--दिल सभी के होता है। दिल के बिना कोई जिन्दा नहीं रह सकता। खैर, अच्छा यह बता, तू सतीश को जानती है ?

बालो—सतीश……

महेन्द्रपाल—हाँ, माला के साथ पढ़ता है।

बालो—वे कभी-कभी बीबी जी से कितावें लेने आ जाते हैं। तभी देखा है।

महेन्द्रपाल—देखने-सुनने में कैसा है ?

बालो--अच्छे हैं ! मगर……मगर आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं ?

महेन्द्रपाल—ऐसे ही ! कोई खास बात नहीं है। (रुककर) तेरी बीबी जी बहुत मेहरबान हैं उस पर ?

बालो—मगर……मगर जो आप सोच रहे हैं, ऐसी कोई बात नहीं है।

महेन्द्रपाल--(हँसकर) मैं क्या सोच रहा हूँ ?

बालो—(गम्भीरता से) आपके मन की बात मुझसे छिपी नहीं है, कुँवर साब ! मैं मूरख जरूर हूँ मगर……

महेन्द्रपाल—(हँसकर) तुझे मूर्ख समझने वाला खुद मूर्ख है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(धीमे स्वर में) बालो, तू जानती है, तेरी मालकिन माला की शादी मुझसे क्यों करना चाहती हैं ?

बालो—मैं……मैं क्या जानूँ, कुँवर साब !

महेन्द्रपाल—मैं बताता हूँ। ठाकुर साहब पर हमारा कर्ज है। मैं यहाँ उसी सिलसिले में आया हूँ । कर्ज से बचने के लिये ही यह जाल रचा गया है।

बालो—जाल……? यह आप क्या कह रहे हैं, कुँवर साब ? आपको जरूर धोखा हुआ है। हमारे मालिक-मालकिन ऐसे नहीं हैं।

महेन्द्रपाल—**(मुस्कराकर)** तू बहुत नादान है । दाँव-पेंच की बात नहीं समझ सकती । मैं जानता हूँ कि तेरी बीबी जी को मैं पसन्द नहीं हूँ। वे जो कुछ कर रही हैं, तेरी मालकिन और मालिक के इशारों पर।

बालो—ऐसी बात नहीं है, कुँवर साब ! वे तो आपको……

महेन्द्रपाल—**(बीच में ही हँसकर)** प्यार करती हैं। पगली, प्यार की गलियाँ बहुत टेढ़ी-मेढ़ी हैं । कब किससे दामन उलझ जाये, कोई नहीं जानता । तेरी बीबी जी मुझसे नहीं, सतीश से प्यार करती हैं।

बालो—ऐसा न कहिये, कुँवर साब ! हमारी बीबी जी तो किसी की तरफ आँख भी नहीं उठातीं ।

महेन्द्रपाल—दिल के मामलों से अभी अनजान है तू !

बालो—मैं सब जानती हूँ, कुँवर साब ! अगर ऐसी बात होती तो मुझसे छिपी न रहती ।

महेन्द्रपाल—तू सबके दिल का हाल जान सकती है ?

[बालो सिर हिलाती है]

महेन्द्रपाल—बता मेरे दिल में क्या है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—शिकारियों के दिल की बात भगवान भी नहीं जानता ।

[महेन्द्रपाल हँसता है । बालो मुस्कराती है । अन्दर से माला आती है]

माला—(बालो से कठोर स्वर में) बातें करने के अलावा और कुछ काम नहीं है तेरे पास ?

[बालो सहम जाती है]

माला—(अपेक्षाकृत कोमल स्वर में) जा, तुझे माँ बुला रही हैं । और हाँ, बाहर का बरामदा भी पोंछ देना ।

[बालो अन्दर जाती है]

महेन्द्रपाल—बालो बातें करने में बहुत चतुर है ।

माला—मैं तो समझती थी शतरंज हो रही होगी ।

महेन्द्रपाल—शतरंज तो हो ही रही है । चालें चली जा रही हैं । देखूँ, मात किसे होती है ?

माला—मैं समझी नहीं आपका मतलब !

महेन्द्रपाल—धीरे-धीरे समझ जायेंगी । खड़ी क्यों हैं ? बैठिये न !

[दोनों कोच पर बैठ जाते हैं]

महेन्द्रपाल—मैं आपको कल से काफी परेशान कर रहा हूँ । है न···?

माला—ऐसी बात तो नहीं है । हाँ, मैं जरूर बार-बार आपको परेशान करने आ जाती हूँ ।

महेन्द्रपाल—आपका घर है । आप जब जहाँ चाहें आ जा सकती हैं ।

माला—मगर जहाँ दो लोग बातें कर रहे हों वहाँ जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशिष्टता है । अपनी अशिष्टता के लिए क्षमा चाहती हूँ । मेरे आने से खलल तो जरूर पड़ा होगा ?

महेन्द्रपाल—कोई खास खलल तो नहीं पड़ा । हाँ, वैसे अगर थोड़ी देर और न आतीं तो……

माला—(व्यंग्य से) कहिये तो उसे फिर भेज दूँ…?

महेन्द्रपाल—धन्यवाद ! मगर अब बात करने का मूड नहीं रहा । वैसे, यह जानकर बेहद खुशी हुई कि आप मेरा इतना ध्यान रखती हैं ।

[माला तिलमिला जाती है । एक बार उठने का उपक्रम करती है। महेन्द्रपाल खिलखिलाकर हँस पड़ता है । माला फिर बैठ जाती है । उसका चेहरा तमतमा उठता है ।]

महेन्द्रपाल—इन्सान का चेहरा एक दर्पण है । हृदय की भावनाओं का प्रतिबिम्ब उसमें साफ दिखाई पड़ता है । (रुककर) आपको मेरा व्यवहार बुरा तो जरूर लगता होगा ?

माला—जी नहीं ! अच्छे-बुरे की भावना लड़कियों में होती ही कहाँ है ?

महेन्द्रपाल—(व्यंग्य से) इस सूचना के लिए धन्यवाद !

[बाहर से बालो आती है । उसकी गति में झिझक है]

माला—(चिढ़े स्वर में) क्या है ?

[बालो माला के पास जाकर कान में कुछ फुसफुसाती है]

माला—कहाँ हैं ?

बालो—बाहर ।

महेन्द्रपाल—क्या बात है ?

माला—सतीश आया है । एक मिनट के लिए आज्ञा देंगे ?

महेन्द्रपाल—आप क्यों कष्ट करती हैं ? (बालो से) सतीश बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को यहीं भेज दे।

माला—मगर……

महेन्द्रपाल—इसमें अगर-मगर का क्या सवाल है ? (बालो से) सुना नहीं तूने ?

[बालो बाहर चली जाती है]

महेन्द्रपाल—आप कालेज नहीं गयीं। बेचारे को खुद आना पड़ा। (पाइप सुलगाकर) अगर आपको मेरे सामने बात करने में एतराज़ हो तो अन्दर चला जाऊँ ?

माला—(रूखे स्वर में) धन्यवाद ! इसकी कोई जरूरत नहीं है।

महेन्द्रपाल—मैं तो आपके हित के लिए कह रहा था। वैसे, सतीश बाबू के दर्शन करने की तीव्र इच्छा मुझे भी है।

[बाहर से सतीश आता है। वह कमीज़-पेंट पहने है। पैरों में चप्पल हैं। बाल रूखे हैं। हाथ में वही पुस्तक है जो कल माला से ले गया था।]

महेन्द्रपाल—(तपाक से बेतकल्लुफी के साथ) आइये, सतीश बाबू, आइये ! बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर। मेरा परिचय बालो ने दे ही दिया होगा। तशरीफ रखिये।

[सतीश महेन्द्रपाल की बेतकल्लुफी से संकुचित हो जाता है। माला दृष्टि नीची किये बैठी है। सतीश दूसरे कोच पर बैठ जाता है।]

महेन्द्रपाल—इनके कालेज न जाने से आपको तकलीफ करनी पड़ी। यह न समझियेगा कि मैंने इन्हें रोक रक्खा है। पूछ लीजिये इनसे, मैं तो कई बार कालेज जाने के लिए कह चुका हूँ। मगर इनकी माँ जी ने कालेज न जाने की आज्ञा दी है और माता-पिता की आज्ञा का पालन करना यह अपना परम धर्म समझती हैं।

[माला और सतीश गुम-सुम बैठे हैं। माला एक बार विचित्र दृष्टि से महेन्द्रपाल की ओर देखती है। फिर दृष्टि झुका लेती है। सतीश की समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं आ रहा है कि क्या बोले।]

महेन्द्रपाल—(सतीश से) आप तो खामोश बैठे हैं। कुछ बात कीजिये। (हँसकर) मेरे सामने संकोच हो तो चला जाऊँ?

[महेन्द्रपाल उठने का उपक्रम करता है]

सतीश—(धीमे स्वर में) आप क्यों कष्ट करते हैं? (माला की ओर मुड़कर) माला देवी, अपनी पुस्तक लीजिये।

[पुस्तक मेज पर रख देता है। माला उसी प्रकार बैठी रहती है। महेन्द्र-पाल पुस्तक उठाकर पन्ने पलटने लगता है।]

सतीश—(माला से) आपने दया करके मेरी फीस के रुपये दिये थे। उनके लिए कृतज्ञ हूँ। अब मैंने दूसरी जगह से प्रवन्ध कर लिया है। (जेब से नोट निकाल कर मेज पर रखता हुआ) यह लीजिये अपने रुपये।

[अपनी बात समाप्त करके सतीश दृष्टि दूसरी ओर कर लेता है। माला कातर दृष्टि से उसकी ओर देखती है। महेन्द्रपाल कभी माला की ओर देखता है, कभी सतीश की ओर। उसके अधरों पर मुस्कान है।]

माला—(मन्द स्वर में) मैंने फोन पर कहा था, रुपये लौटाने की जरूरत नहीं है। मगर……

सतीश—(रूखे स्वर में) भीख लेने की अपेक्षा कर्ज लेना अच्छा है, माला देवी!

[माला की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह मेज से नोट उठाकर उन्हें फाड़ना चाहती है। महेन्द्रपाल उसी समय उसका हाथ पकड़ लेता है और नोट अपने हाथ में ले लेता है।]

महेन्द्रपाल—मिस्टर सतीश, मैं आपके विचारों की कद्र करता हूँ। माना, आप कर्ज़ लेकर रुपया लौटा सकते हैं, मगर जिस भावना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से इन्होंने रुपये दिये थे, उसका मूल्य कैसे चुका सकते हैं ? भावना का मूल्य भावना से ही चुकाया जाता है, मिस्टर सतीश !

सतीश—(रूखे स्वर में) भावना की बात वह कर सकता है जिसे पेट भरने की चिन्ता नहीं होती।

महेन्द्रपाल—जिस व्यक्ति में भावना नहीं होती, उसे मैं जानवर से भी बदतर समझता हूँ।

सतीश—आप···आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

महेन्द्रपाल—जो स्वयं अपना मान करना नहीं जानता, सारी दुनिया उसका अपमान करती है। रुपये जेब में रखिये और···और अपने को पहचानने की कोशिश कीजिये। (रुपये मेज पर रखकर) अपने हृदय से हीन-भाव निकाल दीजिये। फिर आपको मुझ में और अपने में कोई फर्क नहीं दिखाई देगा।

सतीश—(व्यंग्य से) सुझाव के लिये धन्यवाद ! (माला से) इसी लिये आया था। अब आज्ञा दीजिये, माला देवी !

महेन्द्रपाल—आप लोग सहपाठी होकर भी शिष्टाचार बरतते हैं। अगर नाम के आगे देवी न लगायें तो······!

[सतीश महेन्द्रपाल की ओर घूरकर देखता है। उत्तर देने के लिए मुँह खोलता है, फिर मौन ही रहता है।]

माला—जले पर नमक न छिड़को, सतीश ! रुपये रख लो।

[सतीश क्षण-भर माला की ओर देखता है। फिर चुपचाप रुपये उठाकर जेब में रख लेता है।]

सतीश—(उठकर) मुझे बालो ने बताया कि कुँवर साहब से आपकी शादी हो रही है। (रुककर) मालूम नहीं, फिर भेंट हो या न हो। इसलिए अभी से बधाई देता हूँ। भगवान आप दोनों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखी रक्खे !

[सतीश द्वार की ओर बढ़ता है]

माला—(उठकर भावावेश में) सतीश, याद है, एक दिन तुमने कहा था……

सतीश—(रुककर गम्भीर स्वर में) हमने जो कहा-सुना था उसे भूल जाना ही ठीक है। (महेन्द्रपाल से हाथ जोड़कर) उच्च वर्ग के तौर-तरीकों से अनजान हूँ। यदि कोई अशिष्टता हो गयी हो तो क्षमा करें।

महेन्द्रपाल—(उठकर) यह न भूलो कि वर्ग-भेद मानव-संस्कृति को विभाजित नहीं कर सकता। हम सब मनुष्य हैं।

सतीश—(आवेश में) ये बातें केवल कहने-सुनने के लिये ही हैं, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—(हँसकर) ऐसी बात तो नहीं है। अपना-अपना दृष्टिकोण है। तुम्हारी दृष्टि सीमित है। तुम अपने संस्कारों में बुरी तरह जकड़े हुए हो। झूठी जंजीरों को तोड़ फेंकने की तुममें हिम्मत नहीं।

सतीश—कुँवर साहब…!

महेन्द्रपाल—तुम कमज़ोर हो, कायर हो !

सतीश—(आवेश में) यदि आप माला देवी के होने वाले पति न होते तो मैं उत्तर देता। मगर अब…अब…(माला से) अपमानित कराने के लिए धन्यवाद, माला देवी !

[माला कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है। तभी अन्दर से अजयप्रताप आते हैं। वे कुर्ता-पाजामा और कामदार जूता पहने हैं।]

अजयप्रताप—(सतीश की तरफ आग्नेय नेत्रों से देखकर) तुम फिर आ गये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश—(हकलाता हुआ) जी···मैं···रुपये··लौटाने·····

अजयप्रताप—(कड़क कर) निकल जाओ कोठी से। तुम जैसे लफंगों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

[सतीश माला की ओर देखता है]

माला—(विरोध के स्वर में) बाबू जी······

अजयप्रताप—तू चुप रह!

महेन्द्रपाल—माफ कीजियेगा, ठाकुर साहब, मिस्टर सतीश को आपने लफंगा कैसे समझ लिया? मुझे तो निहायत शरीफ मालूम होते हैं।

अजयप्रताप—आप धोखा खा रहे हैं, कुँवर साहब! इसके न घर का ठीक है न द्वार का।

महेन्द्रपाल—घर द्वार न होना लफंगेपन की निशानी नहीं है, ठाकुर साहब! (सतीश से) मैं ठाकुर साहब की तरफ से माफी माँगता हूँ! चलिए, आपको बाहर तक छोड़ आऊँ।

[महेन्द्रपाल और सतीश बाहर जाते हैं]

अजयप्रताप—(गरजकर) मेरे मना करने पर भी उसने फिर आने को जुर्रत की, और तूने उस आवारा को कमरे में बुला लिया।

माला—(कम्पित स्वर में) मैंने नहीं बुलाया था, बाबू जी!

अजयप्रताप—तो क्या अपने-आप आ गया?

माला—कुँवर साहब ने बुलाया था।

अजयप्रताप—(कठोर स्वर में) तू एक दिन खानदान की इज्जत धूल में मिलाकर ही रहेगी। कुँवर साहब क्या सोचते होंगे?

[माला सिसकने लगती है। अन्दर से माधुरी आती है]

माधुरी—क्या हुआ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजयप्रताप—हुआ मेरा सिर ! तुम्हारी लाड़ली ने सतीश के बच्चे को बुलाया था। कुँवर साहब के सामने मेरी नाक कटा दी। नालायक कहीं की !

माधुरी—अच्छा, अच्छा, तुम चलो अन्दर ! मैं अभी सब······

[**अजयप्रताप पैर पटकते हुए अन्दर जाते हैं। माला "माँ" कहकर माधुरी से चिपट जाती है। माधुरी उसके सिर पर हाथ फेरती है और अपने अंचल से उसके आँसू पोंछती है।**]

माधुरी—रो मत, बेटी ! वे तो सठिया गए हैं। सतीश आ गया तो कौन-सी प्रलय हो गयी ? कुँवर साहब समझदार हैं। छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं देंगे।

[**माला सिसकना बन्द करके संयत होने का यत्न करती है**]

माधुरी—(**मीठे स्वर में**) बेटी, कुँवर साहब से कोई खास बात हुई ?

[**माला नकारात्मक सिर हिलाती है**]

माधुरी—यह तेरी गलती है। तू ही संकोच करती होगी।

माला—(**संकुचित स्वर में**) वे मेरी ओर कोई ध्यान ही नहीं देते। फिर मैं क्या कर सकती हूँ ?

माधुरी—तू तो पगलियों जैसी बातें करती है। औरत चाहे तो देवता भी डोल जाएँ।

माला—(**दृष्टि नीची करके**) मैं तो उन्हें हर तरह से प्रसन्न करने की चेष्टा करती हूँ। मगर वे बात-बात पर ताने कसते हैं, अपमान करते हैं। (**दृष्टि फर्श पर जमाकर**) मुझसे ज्यादा उन्हें बालो पसन्द है।

माधुरी—(**चौंककर**) यह क्या कह रही है तू ?

[**माला मौन रहती है**]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—तब तो सतीश को बुलाकर तू ने ठीक ही किया। अब कुँवर साहब तेरी तरफ जरूर ध्यान देंगे। मैं जानती हूँ।

माला—(भीगे स्वर में) माँ……

माधुरी—तू घबरा मत, मेरी बेटी ! भगवान चाहेगा तो सब ठीक हो जायेगा। तू राजरानी बनेगी……जरूर बनेगी ! कुँवर साहब खुद तेरे सामने सिर न झुकायें तो नाम नहीं।

[माला फिर सिसकने लगती है। माधुरी उसे सीने से लगाकर उसके आँसू पोंछती है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय अंक

स्थान—वही गोल कमरा ।

समय—सायंकाल ।

[पर्दा उठता है । दीवार की घड़ी चार बजा रही है । बालो कोच पर कोहनी टेके हुए फर्श पर बैठी है । उसकी वेश-भूषा दूसरे अंक की भाँति ही है । वह अपने ध्यान में खोई हुई है । उसका चेहरा दर्शकों की तरफ है और वह अपलक दृष्टि से शून्य की ओर ताक रही है ।

बाहर से शीतल आता है । उसकी वेश-भूषा पहले जैसी ही है । बालो को उस मुद्रा में बैठे देखकर वह उसके पास जाता है । मगर बालो को उसके आने का आभास ही नहीं होता ।]

शीतल—(बालो के सिर पर हाथ रखकर) का बात है, बिटिया ?

बालो—(चौंक कर) शायद सो गयी थी, दादा !

शीतल—मुला, तू तो उधर टुकुर-टुकुर निहारत रहै ।

बालो—(रूखी हँसी हँसकर) कभी-कभी आँखें खुली रहती हैं, और नींद आ जाती है । (उठकर) एक बात पूछूँ, दादा ?

शीतल—पूछ ।

बालो—सपने कभी सच होते हैं ?

शीतल—(हँसकर) हम कोई जोतिसी हैं का ? मुला, कस सपना देखिन है ?

बालो—अजीब-अजीब सपने देखती हूँ, दादा ! आँखें खुली रहती हैं, फिर भी मीठे-मीठे सपने पलकों पर छा जाते हैं ।

शीतल—(माथे पर हाथ रखकर) तोहार माथा तौ ठीक है ?

बालो—शायद माथा फिर गया है । अच्छा दादा, कभी कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिखारिन भी रानी बनी है ?

शीतल--काहे नाहीं, बिटिया ? बखत-बखत की बात है !

बालो--मगर समय पर किसका अधिकार है, दादा ?

[बालो फिर शून्य की ओर ताकने लगती है । शीतल उसकी ओर विस्मय से देखता रहता है ।]

बालो—(एक क्षण बाद) दादा, क्या मैं सचमुच सुन्दर हूँ ?

शीतल—(मीठी झिड़की के साथ) जा, जा ! क्वार्टर माँ आराम कर । तोहार तबियत ठीक नाहीं लागत है ।

बालो—मेरी तबियत को कुछ नहीं हुआ है, दादा !

शीतल—जरूर ऊपरी फेर लागत है, बिटिया !

बालो—(हँसकर) ऐसी कोई बात नहीं है, दादा ! अच्छा, तुम तो मालिक के साथ कई बार शिकार पर गये हो । यह बताओ, क्या कभी-कभी शिकारी भी घायल हो जाता है ?

शीतल—हाँ, हाँ बिटिया ! एक दफै का जिकर है···

बालो—(बीच में ही) जंगल में कोई ऐसी हिरनी देखी है जिसकी आँखों से तीर निकलते हों ?

शीतल—(हँसकर) मुला, हम बूढ़न तै काहे हँसी करत है ?

बालो—ऐसी कोई हिरनी नहीं देखी ?

शीतल—हमने तौ नाहीं देखी, बिटिया !

बालो—तुमने नहीं देखी होगी, मगर होती जरूर है, दादा !

[शीतल आश्चर्य-भरी दृष्टि से बालो की ओर देखता है]

बालो—सुना है, एक बार चाहे गोली से घायल हुआ आदमी बच भी जाये, मगर उन तीरों का घायल कभी नहीं बचता । (अन्दर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ती हुई) अजीब बात है न, दादा ?

[बालो अन्दर चली जाती है । शीतल द्वार की ओर घूरता रहता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर से महेन्द्रपाल आता है। वह पेंट और जर्किन पहने है। मुंह में पाइप दबा है।]

महेन्द्रपाल—उधर क्या देख रहे हो ? क्या भूत-प्रेत के दर्शन हो गये ?

शीतल—भूत-प्रेत बालो के सिर पै सवार है, कुँवर साव !

महेन्द्रपाल—क्या हुआ बालो को ?

शीतल—कहत रहे, जंगल माँ ऐस हिरनी होत है जी की आँखन तै तीर निकरत हैं।

[महेन्द्रपाल हँसता है]

शीतल—पूछत रहै, कभौ सपने साँच होवत हैं ?

महेन्द्रपाल—तुमने क्या कहा ?

शीतल—मुला, हम मूरख-गँवार का कहैं ? (बाहर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ता हुआ) जरूर कोई ऊपरी फेर-फार है बिचारी पै।

[शीतल बाहर जाता है। महेन्द्रपाल पाइप मुँह में दबाये खड़ा रहता है। अन्दर से माला आती है। वह साड़ी-ब्लाउज पहने है।]

महेन्द्रपाल—(मुस्कराकर) गुड ईवनिंग !

[माला खामोश रहती है]

महेन्द्रपाल—सतीश रुपया ले गया यह ठीक ही रहा। (रुककर) ठाकुर साहब ने बेकार ही डाँट दिया बेचारे को। मुझे तो बहुत भला आदमी लगा।

माला—(महेन्द्रपाल की ओर बढ़कर) गरीब होना ही उसका सबसे बड़ा दोष है। बाबू जी की दृष्टि में भला वही है जिसके पास पैसा है।

महेन्द्रपाल—मेरी नजर में पैसा पापों की जड़ है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हम दोनों के विचार एक से हैं। हम दोनों वस्त्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं, दिल को देखते हैं।

माला—(कोच पर बैठकर) मगर दुनिया तो कपड़ों को ही देखती है।

महेन्द्रपाल—हर इन्सान की दुनिया अपने तक ही सीमित होती है। आप अपनी दुनिया में सतीश और मुझ में कोई फर्क नहीं समझतीं। समझना भी नहीं चाहिये। और मेरी दुनिया में बालो और आप में कोई फर्क नहीं।

माला—जी…

महेन्द्रपाल—मगर फिर भी हम दोनों में कितना फर्क है? मैं बालो से हँसकर बोलता हूँ तो आपके सिर में दर्द होने लगता है और यदि आप सतीश से हँसकर बोलें तो मुझे खुशी हो, बेहद खुशी हो।

माला—आप…आप जान-बूझ कर मेरे दिल पर ठेस पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं।

महेन्द्रपाल—मैं हकीकत बयान कर रहा हूँ। मैं अपने प्रति और आपके प्रति ईमानदार हूँ। आप मेरे साथ साथ अपने को भी धोखा दे रही हैं।

माला—(कम्पित स्वर में) आप…आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

महेन्द्रपाल—मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। अपने को छलना बन्द कीजिए और…और माँ-बाप की आज्ञा के बजाय दिल का कहना मानिये।

[माला बेचैन हो उठती है और उठकर टहलने लगती है]

महेन्द्रपाल—मैं जानता हूँ, माता-पिता का कहना मानकर आप अपने हृदय की भावनाओं का गला घोंट रही हैं।

माला—(रुककर) मैं नहीं जानती आप क्या कह रहे हैं।

महेन्द्रपाल—झूठ से मुझे नफ़रत है। ठाकुर साहब अपने स्वार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए आपका सम्बन्ध मुझसे करना चाहते हैं। आप अपनी माँ की आज्ञा से मुझे प्रसन्न करने की, मेरा मन मोहने की कोशिश करती हैं। मगर आपकी हर कोशिश असफल रहती है। क्यों? क्योंकि उसमें भावना की शक्ति नहीं। आप अपनी इच्छा के विरुद्ध ऐसा कर रही हैं।

[माला दृष्टि उठाकर महेन्द्रपाल की ओर देखती है। उसकी आँखों में आँसू की बूँदें हैं। वह सिर नीचा करके कोच पर बैठ जाती है।]

महेन्द्रपाल—(**कोच पर बैठकर**) मैंने जान-बूझ कर कई बार आपका अपमान करने की धृष्टता की। मैं चाहता था कि आपके अन्तर में सोया हुआ विद्रोह जागे और आप माता-पिता की आज्ञा का विरोध करके साफ-साफ कह सकें कि मैं कुँवर साहब से शादी नहीं कर सकती क्योंकि मैं किसी और को प्यार करती हूँ।

[माला बाहों में मुँह छिपाकर सिसकने लगती है]

महेन्द्रपाल—मैं आपको जरूरत से ज्यादा कायर समझता हूँ। मुझे गुस्सा आता है सतीश के बच्चे पर, जो लड़कियों से भी ज्यादा कमजोर और बुजदिल है। मुझे ललकारने के बजाय आपको शादी की बधाई दे रहा था। (**मीठे स्वर में**) माला देवी, आँसू पोंछ डालिये। इन आँखों से आँसू नहीं, विद्रोह की चिनगारियाँ निकलनी चाहियें।

माला—(**सिसकती हुई**) कुँवर साहब, मैं···मैं आपको···बहुत बुरा आदमी समझी थी। आप देवता हैं···।

महेन्द्रपाल—आप भूलती हैं, माला देवी! मैं देवता नहीं, एक इन्सान हूँ। मैंने सुबह कहा था कि यूरोप के लोग जीना जानते हैं। अपने अधिकारों के लिए लड़ना मैंने वहीं से सीखा। मैं ऐसे ही लोगों को पसन्द करता हूँ जो अपने हक के लिए जूझना जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिनी आपकी तरह कमजोर नहीं। वह सारे परिवार का विरोध करके अभी तक क्वाँरी है और मैं जानता हूँ कि यदि वह किसी भिखारी से भी शादी करना पसन्द करेगी तो दुनिया की कोई शक्ति उसे रोक न सकेगी।

माला—समझ में नहीं आता किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूँ। आपने मुझे नई दृष्टि दी है, नया साहस दिया है, अपने हक के लिए लड़ने की नई शक्ति दी है।

महेन्द्रपाल—नये हाथों में नव-निर्माण की नई शक्ति होनी ही चाहिए। भगवान को धन्यवाद दीजिये कि आप मुझ जैसे नीरस व्यक्ति की पत्नी होने के दुर्भाग्य से बच गयीं।

[महेन्द्रपाल हँसता है। माला भी हँसने लगती है। अन्दर से माधुरी आती है। दोनों को हँसता देखकर प्रसन्न हो उठती है।]

माधुरी—माला बेटी, जा तुझे बाबू जी बुला रहे हैं।

[माला का प्रस्थान। माधुरी उसके स्थान पर बैठ जाती है]

माधुरी—कुँवर साहब, जमींदारी क्या गई, हम तो कहीं के न रहे।

महेन्द्रपाल—सभी का यही हाल है।

माधुरी—ऊपर से सयानी बेटी। न रात में नींद, न दिन में चैन। भगवान से यही मनाती हूँ कि जल्द से जल्द उसके हाथ पीले हो जायें।

महेन्द्रपाल—जल्द ही आपकी मनोकामना पूरी हो जायेगी।

माधुरी—आपके मुँह में घी-शक्कर, कुँवर साहब! आपने तो माला को देख ही लिया है। पढ़ी-लिखी है, घर-गृहस्थी के कामों में चतुर है, सुन्दर है, सुशील है।

महेन्द्रपाल—अरे, लाखों में एक है आपकी लड़की!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—(प्रसन्न होकर) आपके मुँह से यह सुनकर छाती का पत्थर हट गया, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—भगवान पर भरोसा रखिये। सब ठीक हो जायेगा। (रुककर) आपकी नौकरानी भी अजीब है।

माधुरी—बेचारी अनाथ है। बाप छोड़कर चला गया। माँ बचपन में मर गई।

महेन्द्रपाल—उसके माँ-बाप आपके पुराने नौकर थे ? अच्छा ही हुआ जो आप लोगों ने पाल-पोस लिया।

माधुरी—वे तो उसे माला की तरह ही मानते हैं। माला के बाद किसी कमाऊ लड़के से उसका भी ब्याह कर दें तो जान में जान आये।

महेन्द्रपाल—बालो बता रही थी कि उसका बाप उसकी माँ से झगड़कर चला गया था।

माधुरी—हाँ, कुछ ऐसी-वैसी ही बात थी। (आगे झुककर) उसके बाप को शक था कि बालो उसकी नहीं, किसी और की सन्तान है।

महेन्द्रपाल—किसी और की सन्तान है ?

माधुरी—ऊँह ! नीच जातों में तो ऐसा चलता ही रहता है।

महेन्द्रपाल—हाँ, हाँ, आप ठीक कह रही हैं। इन लोगों का क्या ठीक ? नेम-धर्म का ठेका तो हम लोगों का ही है। (उठकर) अच्छा चलूँ ! शाम को लॉन पर टहलने की आदत है।

[महेन्द्रपाल बाहर चला जाता है। अन्दर से अजयप्रताप आते हैं]

माधुरी—(प्रसन्न स्वर में) सुनो, मैंने कुँवर साहब से बात की थी।

अजयप्रताप—अच्छा ! (कोच पर बैठकर) माला के बारे में बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की थी ?

माधुरी—हाँ ! उन्होंने कहा कि फिकर की कोई बात नहीं हैं। सब ठीक हो जायगा।

अजयप्रताप—(प्रसन्न स्वर में) बधाई, माला की माँ !

माधुरी—कहने लगे, माला लाखों में एक है।

अजयप्रताप—तब तो माला ने जरूर उनका मन मोह लिया होगा। (हँसकर) तुमने भी तो इसी तरह मुझे अपने बन्धन में बाँध लिया था।

माधुरी—(लजाकर) हटो जी ! तुम्हें तो हर समय हँसी सूझती है। (गम्भीर होकर) विजय का हर वक्त शालिनी के पीछे घूमना मुझे पसन्द नहीं। कहीं ऐसी-वैसी हरकत कर बैठा तो नाक कट जायेगी। राजा साहब को कौन-सा मुँह दिखायेंगे।

अजयप्रताप—तुम बेकार की चिन्ता करती हो। विजय पागल नहीं है। अपनी मान-मर्यादा समझता है।

माधुरी—अगर ऐसा होता तो जेल ही क्यों जाता ? (रुककर) मैंने अपना धर्म समझकर शालिनी को चिता दिया है। आगे वह जाने, उसका काम जाने।

[शीतल अन्दर से चिलम भरकर लाता है। हुक्के पर चिलम रखकर हुक्का अजयप्रताप के पास रखकर नली उनके हाथ में दे देता है और फिर बाहर चला जाता है।]

अजयप्रताप—तुमने शालिनी से सब कुछ कह दिया ? (व्यग्रता से) यह अच्छा नहीं किया, माला की माँ !

माधुरी—तुम्हें तो मेरी हर बात में दोष ही दिखाई देता है। मैंने जो कुछ किया है, माला के हित के लिये किया है।

अजयप्रताप—अगर शालिनी कुँवर साहब से कह दे तो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी—अरे, वह पागल थोड़े ही है ? और फिर मैंने मना भी कर दिया है। सुनो, शुभ काम में देर नहीं करनी चाहिए। कुँवर साहब से सब बात करके तारीख ठीक कर लो।

अजयप्रताप—अगर···अगर तुम्हीं यह सब कर लो तो······

माधुरी—(बीच में ही) तुम तो ऐसी बातें कर रहे हो जैसे माला तुम्हारी कोई नहीं है। मैंने अपना काम कर दिया, अब तुम अपना करो।

[अजयप्रताप मौन रहकर हुक्का पीने लगते हैं]

माधुरी—जरा मौका देखकर और ठीक से बात करना। कहीं ऐसा न हो कि बना-बनाया खेल बिगड़ जाय।

[माधुरी अन्दर जाती है]

[अजयप्रताप आँखें बन्द कर लेते हैं और हुक्के का आनन्द लेते रहते हैं। बाहर से शालिनी और विजयप्रताप आते हैं।]

अजयप्रताप—(आँखें खोलकर) सिनेमा देख आये, विजय ? कैसा खेल था ?

विजयप्रताप—(हँसकर) सात साल बाद सिनेमा देखने गया था, दादा ! भूख में किवाड़ भी पापड़ लगते हैं।

[अजयप्रताप हँसकर हुक्का पीने लगते हैं। विजयप्रताप और शालिनी दूसरे कोच पर बैठ जाते हैं।]

अजयप्रताप—(ऊँचे स्वर में) शीतल······!

शीतल—(बाहर से) आवत हौं सरकार ! (प्रवेश करके) का हुकुम है, सरकार ?

अजयप्रताप—हुक्का लॉन में पहुँचा दे। (उठकर) तुम लोग बातें करो। मैं बाहर बैठकर खमीरे का मजा लूंगा।

[अजयप्रताप हँसकर बाहर जाते हैं। शीतल हुक्का उठाकर पीछे-पीछे जाता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिनी—(तिरछी दृष्टि से विजयप्रताप की ओर देखकर) ठाकुर साहब कभी-कभी समझदारी का काम करते हैं।

विजयप्रताप—जब छोटे लोग नासमझी पर उतर आयें तो बड़ों को समझदारी से काम लेना ही पड़ता है।

शालिनी—आपको समझना बहुत मुश्किल है।

विजयप्रताप—(हँसकर) ऐसी बात तो नहीं है। मैं तो खुली हुई पुस्तक के समान हूँ। कहीं कोई दुराव नहीं, पर्दा नहीं। जैसा अन्दर हूँ, वैसा ही बाहर हूँ। आप इन्सान के बहुरूपिया रूप की अभ्यस्त हैं। इसीलिए मुझे समझने में कठिनाई होती है।

शालिनी—(ताली बजाकर) हियर ! हियर !! ऐसा भाषण मैंने आज तक नहीं सुना। (कृत्रिम गम्भीरता से) आपको समझने के लिये फिर किसी पाठशाला में नाम लिखाऊँगी। क्या आप किसी अच्छी पाठशाला का नाम बता सकते हैं ?

विजयप्रताप—(कृत्रिम गम्भीरता से) हाँ, हाँ, क्यों नहीं ? भला आपकी आज्ञा कैसे टाल सकता हूँ।

शालिनी—तो फिर बताइये। आज ही नाम लिखा लूंगी।

विजयप्रताप—(सोचने की मुद्रा में) हाँ, ठीक है, आपके लिए जीवन की पाठशाला ठीक रहेगी।

शालिनी—जीवन की पाठशाला……?

विजयप्रताप—जी हाँ ! ऑक्सफोर्ड से भी अच्छी पढ़ाई होती है उसमें !

शालिनी—आप बार-बार ऑक्सफोर्ड का नाम लेकर मुझे चिढ़ाते क्यों हैं ?

विजयप्रताप—आप हँसी-हँसी में चिढ़ क्यों जाती हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[दोनों एक दूसरे की ओर देखते हैं और फिर खिलखिला कर हँस पड़ते हैं ।]

शालिनी—आपकी भाभी जी हमें इस तरह हँसता देख लें तो उनका पाव-भर खून सूख जाये ।

विजयप्रताप—स्वाभाविक है । हर औरत दूसरी औरत के हित का ध्यान रखती है । आपको उनकी राय पर अमल करना चाहिये और मुझसे दूर रहने की कोशिश करनी चाहिये ।

शालिनी—क्यों……?

विजयप्रताप—क्योंकि मैं दुश्चरित्र हूँ, जेल काटकर आया हूँ !

शालिनी—(शरारत से) मगर मैं आपके साथ कई बार अकेली रही, आपने मेरे साथ तो कोई बेजा हरकत नहीं की !

विजयप्रताप—डर है कि कहीं फिर न जेल जाना पड़े । (मुस्कराकर) हो सकता है, राजा साहब क्रोध में आकर गोली से उड़ा दें । कुँवर साहब तो साथ में रायफल भी लाये हैं । लगता है, उन्हें आपकी सुरक्षा का पूरा ख्याल है ।

शालिनी—(हँसकर) आखिर आपने रिमार्क कस ही दिया । मैं मना कर रही थी कि रायफल न ले चलिये । मगर भैया कहने लगे, वहाँ से शिकार पर चलेंगे ।

विजयप्रताप—कुँवर साहब को शिकार का बहुत शौक है ?

शालिनी—शिकार उनकी जिन्दगी है । आप भी चलें । मजा आयेगा ।

विजयप्रताप—मैं शिकार करने की अपेक्षा शिकार होना पसन्द करता हूँ ।

शालिनी—चलिये ! शिकार होने का भी मौका मिलेगा ।

विजयप्रताप—जंगल में मेरे साथ डर नहीं लगेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिनी—उस भोले-भाले जीव से क्या डर जो खुद शिकार होना पसन्द करता है ?

विजयप्रताप—(हँसकर) बातों में आपसे जीतना बहुत कठिन है ।

शालिनी—चलिये, किसी बात में तो हार मानी । (रुककर) अच्छा, यह बताइये कि आपने दूसरे की बदनामी अपने सिर क्यों ली ?

विजयप्रताप—(चौंककर) क्या मतलब है आपका ?

शालिनी—(मुस्कराकर) मुझे माला बहन ने सब बता दिया है । बोलिये, किसी दूसरे का पाप अपने सिर क्यों मढ़ा ?

विजयप्रताप—(गम्भीर होकर) यह ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर देना मेरे बस में नहीं है ।

शालिनी—बस में नहीं है या देना नहीं चाहते ?

विजयप्रताप—यही समझ लीजिये ।

शालिनी—तब अपने सवाल के लिये माफी माँगती हूँ । अब कभी नहीं पूछूँगी ।

[विजयप्रताप उठकर टहलने लगता है]

शालिनी—(उठकर) मगर यह सुन लीजिये कि इस तरह के त्याग को मैं मूर्खता समझती हूँ । न्याय की माँग है कि पापी को पाप का दण्ड मिले । (आगे बढ़कर) मगर हुआ क्या ? आपने जेल काटी, बदनामी का काला टीका अपने माथे पर लगाया और जो वास्तव में दोषी है वह आज भी समाज का प्रतिष्ठित स्तम्भ बना हुआ है, मूँछों पर ताव देकर शान से चलता है । (विजयप्रताप के पास जाकर) मैं मानती हूँ कि आपका त्याग महान है । माला आपको मनुष्य के रूप में देवता समझती है । मगर मैं इन्सानियत की दुहाई देती हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(विजयप्रताप के कन्धे झकझोरती हुई) आपको इन्सान बनने के लिए ललकारती हूँ। आगे बढ़कर झूठ का पर्दा-फाश कीजिए, पिछली भूल को सुधारिये; प्रतिष्ठा, मान, सम्मान खोकर जीने से क्या लाभ······?

विजयप्रताप—(अपने को शालिनी से दूर हटाने की चेष्टा करता हुआ) ओह, आप नहीं समझतीं, कुछ नहीं समझतीं······।

शालिनी—मैं सब समझती हूँ। (पुनः कन्धे पकड़कर) अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं समझूँगी आप कायर हैं, बुज़दिल हैं।

[विजयप्रताप आवेश में आकर शालिनी के गाल पर तमाचा मारता है। शालिनी उसके कन्धे छोड़ देती है।]

शालिनी—(गाल सहलाती हुई) औरत पर हाथ उठाना बहादुरी नहीं है। (कोच की ओर बढ़ती हुई अस्फुट स्वर में) मुझे आप पर क्रोध नहीं, तरस आता है।

[शालिनी कोच पर बैठकर गाल सहलाती रहती है। विजयप्रताप कुछ देर तक कार्निस की ओर मुँह किये खड़ा रहता है। फिर घूम कर शालिनी की ओर देखता है और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ता है।]

विजयप्रताप—(समीप पहुँचकर भीगे स्वर में) सचमुच मैं कायर हूँ। यदि हो सके तो मुझे माफ कर देना।

[शालिनी बोलने के लिये मुँह खोलती है, मगर विजयप्रताप उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही तेजी से अन्दर चला जाता है। शालिनी गुमसुम-सी बैठी रहती है। बाहर से महेन्द्रपाल और अन्दर से माला आती है। दोनों प्रश्नपूर्ण दृष्टि उस पर डालते हैं। वह कोच से उठकर चुपचाप अन्दर चली जाती है।]

महेन्द्रपाल—मेरी समझ में नहीं आता, शालिनी को क्या हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला—(मुस्कराकर) आपकी समझ में नहीं आयेगा । मैं जानती हूँ ।

महेन्द्रपाल—(कोच पर बैठकर) लड़की के मन की बात लड़की ही जान सकती है ।

माला—इस कला में तो आप भी निपुण हैं ।

महेन्द्रपाल—न जाने किस प्रेरणा से आपके मन की बात जान ली थी । (मुस्कराकर) शायद आपने मेरे प्रति अपनी अरुचि को बहुत अधिक स्पष्ट कर दिया था ।

माला—(हँसकर) अब आपको ऐसी बातें नहीं करनी चाहियें, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—ओह, मैं भूल गया था । वी हैव बिकम फ्रेन्डस । (पास जाकर धीमे स्वर में) मैंने आपके चाचा जी से भी इस बारे में बात कर ली है ।

माला—(घबराकर) आपने चाचा जी से कह दिया...?

महेन्द्रपाल—इसमें घबराने की क्या बात है ? सुनकर हँसने लगे ।

माला—कुछ कहा नहीं ?

महेन्द्रपाल—कहने लगे, मैं इस समाचार से प्रसन्न हूँ ।

माला—किसी और से तो जिक्र नहीं किया है अभी ?

महेन्द्रपाल—ठाकुर साहब से निश्चित समय पर बात की जायेगी । (रुककर) कहीं ऐसा न हो कि सतीश साहब ठाकुर साहब के डर से आयें ही नहीं ।

माला—ही मस्ट कम । आपने उन्हें अच्छा खासा लेक्चर जो पिला दिया है ।

महेन्द्रपाल—शायद मन ही मन मुझे गालियाँ दे रहे होंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला––(हँसकर) यह आपने कैसे समझ लिया ? वे तो आपकी तारीफ कर रहे होंगे ।

महेन्द्रपाल—तारीफ कर रहे होंगे ? (हँसकर) यह जानकर हर्ष हुआ कि मेरी तारीफ करने वाला भी कोई है ।

माला––(मुस्कराकर) सतीश के अलावा कोई और भी आपकी तारीफ करता है, उसे क्यों भूले जा रहे हैं ? बेचारी आपकी तारीफ करते-करते नहीं थकती ।

महेन्द्रपाल––कौन······?

माला—वही जिसका नाम बहुत प्यारा है, जो बहुत भोली है, नादान है, और जो मुझसे भी अच्छी शतरंज खेलती है ।

महेन्द्रपाल—ओह, आपका मतलब बालो से है ।

माला––जी हाँ । कल से पचासों बार कह चुकी है···'बीबी जी, आप बड़ी भाग्यवान हैं जो कुँवर साब से सगाई हो रही है, आपने पिछले जनम में खूब पुन्न किये होंगे, कुँवर साब आदमी के भेस में देवता हैं ।'

महेन्द्रपाल––आप तो कमाल की एक्टिंग करती हैं । और क्या कह रही थी ?

माला––कहती थी···'बीबी जी, कुँवर साब कहते थे कि तेरी बीबी जी की आँखें हिरनी की तरह हैं, उनमें से ऐसे तीर निकलते हैं जिनसे शिकारी भी घायल हो जाता है ।' (मुस्कराकर) है न हमारी बालो बहुत भोली ?

[**महेन्द्रपाल कुछ उत्तर नहीं देता । चुपचाप पाइप सुलगाने लगता है**]

माला––बेचारी यह भी न समझ सकी कि आप मेरी नहीं, उसकी आँखों की तारीफ कर रहे हैं । इससे ज्यादा भोलापन और क्या हो सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो--(प्रवेश करके) बीबी जी, आपको मालकिन बुला रही हैं।

[माला मुस्कराती हुई अन्दर चली जाती है। बालो भी द्वार की ओर बढ़ती है।]

महेन्द्रपाल—बालो !

बालो—(ठहर कर दृष्टि नीचे करके) क्या हुकुम है, कुँवर साब ?

महेन्द्रपाल--(बालो के पास जाकर) माला से क्या-क्या कह दिया तूने ?

बालो--मैंने···मैं···ने तो कुछ नहीं कहा, कुँवर साब ! क्या··· क्या वे मेरी शिकायत कर रही थीं ?

महेन्द्रपाल—मैं तुझे एक बुरा समाचार सुनाने वाला हूँ।

[बालो सिर नीचा किये खड़ी रहती है]

महेन्द्रपाल—तेरी सब कोशिशें बेकार रहीं। (टहलता हुआ) तूने माला की तारीफ मुझसे की, मेरी तारीफ माला से की। यह जानते हुए भी कि माला और सतीश एक दूसरे से प्यार करते हैं, तूने मुझसे यह बात छिपायी।

बालो--मुझे···यह नहीं मालूम था। सच···आपको धोखा हुआ है···बीबी जी तो···

महेन्द्रपाल--(बीच में ही) अब झूठ बोलने की जरूरत नहीं है, बालो ! (बालो के निकट जाकर) मुझे सब कुछ मालूम हो गया है।

बालो—लेकिन······

महेन्द्रपाल--खुद माला ने बता दिया है।

बालो—(अविश्वास के स्वर में) कुँवर साब······?

महेन्द्रपाल--माला की शादी मुझसे नहीं, सतीश से होगी।

बालो—नहीं, नहीं···यह कैसे हो सकता है······

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल——तेरी मालकिन का सपना अधूरा रह जायेगा, बालो ! उनकी कुशल उँगुलियों ने जिस रेशमी जाल के ताने-बाने बुने थे वह खुद छिन्न-भिन्न हो जायेगा ।

[बालो मौन रहती है]

महेन्द्रपाल——मुझे यह भी मालूम हो गया है कि तेरा बाप तेरी माँ को छोड़कर क्यों चला गया था ।

बालो——(**दृष्टि उठाकर व्याकुल स्वर में**) क्या मालूम हो गया है, कुँवर साव ?

महेन्द्रपाल——यही कि तू अपने बाप की नहीं, किसी और की सन्तान है ।

[बालो क्षण-भर महेन्द्रपाल की ओर देखती रहती है । फिर दृष्टि झुका लेती है । उसकी आँखों से अश्रु-धारा बहने लगती है और वह सिसकने लगती है ।]

महेन्द्रपाल——(**कोमल स्वर में**) इसमें रोने की क्या बात है, पगली ? संसार के कई बड़े-बड़े लोगों ने इसी तरह जन्म लिया है और फिर इसमें तेरा क्या दोष ?

[बालो और अधिक सिसकने लगती है]

महेन्द्रपाल——आँसू पोंछ डाल, बालो ! मैं तेरी आँखों में आँसू नहीं, शरारत भरी मुस्कान देखना चाहता हूँ । रोना कमजोरी है । तुझे तो अपने हक के लिए लड़ना चाहिये । बोल, हिम्मत है ?

[बालो प्रश्नभरी दृष्टि महेन्द्रपाल की ओर उठाती है]

महेन्द्रपाल——तू सब कुछ जान कर अनजान क्यों बनती है ? (**टहलता हुआ**) शायद तू अपना नमक अदा कर रही है ।

बालो——(**आगे बढ़कर**) कुँवर साव······

महेन्द्रपाल——(**रुककर**) बालो, मैं तुझसे शादी करना चाहता हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—(एक पग पीछे हटकर, विस्मय से) कुँवर साब !

महेन्द्रपाल—(आगे बढ़कर) मैं जानता हूँ कि ठाकुर साहब सुनकर बौखला जायेंगे। लेकिन क्या तू मुझे पाने के लिए कमर कसकर संघर्ष नहीं करेगी ?

बालो—(धीमे स्वर में) कुँवर साब, बौना चाँद को नहीं छू सकता।

महेन्द्रपाल—बौना चाहे तो चाँद धरती पर आ जाता है, पगली !

बालो—आप···आप···हँसी कर रहे हैं, कुँवर साब ! मैं जानती हूँ···यह सच नहीं हो सकता···कभी नहीं हो सकता।

महेन्द्रपाल—तू अपने दिल को छल रही है, बालो ! मैं कभी ऐसी हँसी नहीं करता।

बालो—मैं···मैं···गरीब लड़की हूँ···ठाकुर साब के टुकड़ों पर पलने वाली अनाथ और अभागिन। न बात करने की अक्ल है और न लिखने-पढ़ने का ज्ञान। रूप-गुन कुछ भी तो नहीं मुझमें। फिर··· फिर···

[आँखों में आंसू आ जाते हैं]

महेन्द्रपाल—तुझ में सच्चाई और ईमानदारी तो है, बालो ! और यही बातें आज के सभ्य और शरीफ कहे जाने वाले लोगों में नहीं मिलतीं। मैंने भली प्रकार सोच-समझ कर यह फैसला किया है। हाँ, अगर तेरा मन किसी और से···

बालो—(बीच में ही) ऐसा न कहिये, कुँवर साब, ऐसा न कहिये। मैं छोटी जाति की जरूर हूँ, मगर···मगर मेरा तन और मन गंगा-जल की तरह शुद्ध है···(सहसा महेन्द्रपाल के चरणों पर झुककर) इन चरनों की सौगन्ध !

[महेन्द्रपाल बालो को उठाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—तेरी पवित्रता पर मुझे पूरा विश्वास है, बालो ! कसम खाने की जरूरत नहीं । अब तू अन्दर जा । अभी किसी से इस बारे में जिक्र न करना । अच्छा...!

[बालो शीघ्रता से झुककर महेन्द्रपाल के पैर छूकर अन्दर भाग जाती है । महेन्द्रपाल हँसने लगता है । अन्दर से विजयप्रताप आता है ।]

विजयप्रताप—सुना है, आपका विचार यहाँ से शिकार पर जाने का है ?

महेन्द्रपाल—(कोच पर बैठकर) था तो ! मगर अब शायद न जा सकूँ ।

विजयप्रताप—(महेन्द्रपाल के पास बैठकर) क्यों, क्या बात हो गयी ?

महेन्द्रपाल—शिकार से न जाने क्यों अरुचि हो गयी है ।

विजयप्रताप—(हँसकर) मैंने तो सुना था शिकार आपकी जिन्दगी है ।

महेन्द्रपाल—(हँसकर) आपसे शालिनी ने कहा होगा । रुचि और विचारों में परिवर्तन तो होता ही रहता है । शालिनी पहले शादी के नाम से चिढ़ती थी । मगर अब आसार दूसरे नजर आ रहे हैं ।

विजयप्रताप—मैं आपका मतलब समझा नहीं, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—कोई खास बात नहीं है । जब कोई खोया-खोया सा रहने लगता है तो मुझे डर लगने लगता है । अभी शालिनी कोच पर गुमसुम बैठी थी ।

विजयप्रताप—(गम्भीर स्वर में) कुँवर साहब, आवेश में आकर मैं भयंकर अपराध कर बैठा हूँ ।

महेन्द्रपाल—अपराध करना मनुष्य की सहज वृत्ति है ।

विजयप्रताप—मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल——मुझसे ? मेरे प्रति अपराध किया है ?

विजयप्रताप——(**दृष्टि नीची करके**) मैं···मैं शालिनी देवी के गाल पर तमाचा मार बैठा हूँ।

महेन्द्रपाल——(**हँसकर**) तो मुझसे माफी माँगने की क्या जरूरत है ? उसी से माँगिये। (**रुककर**) लेकिन मैं समझता हूँ, उससे भी माँगने की जरूरत नहीं है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि शालिनी की मरम्मत करने वाला भी कोई है।

विजयप्रताप–मैं······मैं बहुत शरमिन्दा हूँ।

महेन्द्रपाल——इसमें शरमिन्दा होने की क्या बात है ? बालो ठीक कहती थी। मुझे यकीन हो गया है कि आप बहुत अच्छे मदारी हैं। हाँ, अब जरा सम्भलकर रहियेगा, मिस्टर !

विजयप्रताप——क्या······क्या राजा साहब से शिकायत होगी ?

महेन्द्रपाल——शालिनी को अपने झगड़े खुद तय करने की आदत है। वह आपको इस गुस्ताखी की सजा जरूर देगी।

विजयप्रताप——मैं हर सजा भोगने के लिये तत्पर हूँ।

महेन्द्रपाल——तो हथकड़ी पहनने के लिये तैयार रहिये। (**मुस्करा कर**) उम्र भर की कैद होगी।

[**बाहर से अजयप्रताप आते हैं**]

अजयप्रताप——(**कोच पर बैठकर**) किसे उम्र भर की कैद करा रहे हैं, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल——अपने इलाके के एक डाकू की बात कर रहा था, ठाकुर साहब !

अजयप्रताप——डाकू तो हर जगह उत्पात मचाये हुए हैं। देश आजाद क्या हुआ, लूट-मार की बाढ़ आ गयी। न जाने हमारी पुलिस क्या करती रहती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—बेगुनाहों को तंग करना कोई मामूली काम है, ठाकुर साहब ?

अजयप्रताप—आ हा हा……! आपने लाख टके की बात कह दी, कुँवर साहब ! सच तो यह है कि इस आजादी ने हमें बरबाद कर दिया ।

विजयप्रताप—यह आप क्या कह रहे हैं, दादा ?

अजयप्रताप—हमारी तो दुनिया ही बदल गयी । पहले की शान-बान सिर्फ कहानी रह गयी है । जमींदारी क्या गयी, हमारे तो हाथ-पैर ही चले गये ।

महेन्द्रपाल—मगर जो अभी तक अपंग थे उन्हें हाथ-पैर मिल गये ।

अजयप्रताप—हाथ-पैर……? अरे, कुँवर साहब, उनके तो पर निकल आये हैं, पर ! जो आसामी सामने आते समय थर-थर काँपते थे, वे अब राम-जोहार करने में भी अपमान समझते हैं । मूँछों पर ताव देकर, सीना तान कर ऐसे चलते हैं मानो लाट साहब के बच्चे हों । मैंने तो इसीलिये गाँव का आना-जाना ही बन्द कर दिया है ।

महेन्द्रपाल—(मुस्कराकर) अक्लमन्दी का काम किया है आपने ।

विजयप्रताप—मगर जो कुछ हुआ उसकी जिम्मेदारी हम जमीदारों पर ही है । हम अपने को भगवान का अवतार समझने लगे थे । गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत पर डाका डालना अपना अधिकार समझते थे, हमारे अत्याचारों से किसान त्राहि-त्राहि करने लगे थे ।

अजयप्रताप—किसानों के गुण कोई नहीं जानता । जमींदार बेचारे मुफ्त में बदनाम हैं । कमबख्त काँग्रेस ने किसान-मजदूरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया है।

महेन्द्रपाल—काँग्रेस से आपको बहुत चिढ़ है। शायद तभी उसे हराने के लिए चुनाव में खड़े हुए थे।

अजयप्रताप—जी हाँ! मगर हमारे ही आसामियों ने धोखा दिया।

महेन्द्रपाल—आप अपनी हार से भी शिक्षा नहीं लेते, यह देख कर आश्चर्य होता है, ठाकुर साहब! जमाना करवट ले रहा है। सामन्तवादी युग गया। जमींदारी खत्म हुई, बड़ी-बड़ी रियासतें खत्म हुईं और एक दिन पूँजीवाद भी खत्म होगा। तभी देश में सच्ची समानता और स्वतन्त्रता के दर्शन होंगे।

अजयप्रताप—लगता है यूरोप जाकर आप साम्यवादी बन गये हैं।

महेन्द्रपाल—मैं वहाँ से समानता का मूल-मन्त्र सीख कर आया हूँ।

अजयप्रताप—(**हँसकर**) राजा साहब को आपके विचार मालूम हैं?

महेन्द्रपाल—मस्तिष्क की मिट्टी में पड़ा विचारों का बीज जब फलता-फूलता है तो किसी की दृष्टि से छिपा नहीं रहता।

अजयप्रताप—मेरे बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। मैंने दुनिया देखी है। आप अभी जिन्दगी के उतार-चढ़ाव से परिचित नहीं। नये खून के जोश में ऐसी बातें कह रहे हैं।

महेन्द्रपाल—(**हँसकर**) मैं केवल बातें ही नहीं, उन पर अमल करना भी जानता हूँ।

विजयप्रताप—जमाने की ठोकरें सीधी राह पर ले आयेंगी। कुँवर साहब, जानते हैं आज की दुनिया में सुखी कौन रह सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? वह, जो कहे कुछ और करे कुछ। मैं बड़े-बड़े लोगों को जानता हूँ। वे जो कुछ मंच पर कहते हैं, उस पर खुद अमल नहीं करते।

विजयप्रताप––आज की सभ्यता ही दोमुखी है।

महेन्द्रपाल––ठाकुर साहब, लगता है आपने उन लोगों से ही पाठ पढ़ा है।

अजयप्रताप––(चौंककर) क्या मतलब है आपका ?

महेन्द्रपाल––मैंने अखबार में पढ़ा था कि आप अगले चुनाव में काँग्रेस टिकट के लिये कोशिश कर रहे हैं। घर में काँग्रेस को गाली देते हैं और बाहर उसके गुण गाते हैं। (मुस्कराकर) बाहर तो खद्दर पहन कर ही निकलते होंगे ?

अजयप्रताप—(हँसकर) जी हाँ ! आपने सुना नहीं, जहर जहर से ही मरता है। मैंने काँग्रेस में घुसकर उससे लड़ने का फैसला किया है।

महेन्द्रपाल––तब तो आपको बहुत से साथी मिल जायेंगे। देखूँ, देश में कब तक जनतन्त्र जिन्दा रहता है।

अजयप्रताप––जनतन्त्र है ही कहाँ ? यहाँ तो जनतन्त्र के नाम पर मजाक होता है––बहुत महंगा मजाक। यूरोप की बात जाने दीजिये। वहाँ के लोग पढ़े-लिखे हैं, समझदार हैं, वे समानता, स्वतन्त्रता और जनतन्त्र का अर्थ समझते हैं। यहाँ तो काला अक्षर भैंस बराबर है। अपढ़-गँवारों को बराबरी का दर्जा और आजादी देने का मतलब है बन्दर के हाथ में छुरी थमा देना।

विजयप्रताप—दादा की यह बात कुछ हद तक ठीक है। बिना शिक्षा के सब सुधार व्यर्थ हैं।

अजयप्रताप––(**विजयप्रताप की बात से प्रसन्न होकर**) यहाँ की जनता तो भेड़ की तरह है, अन्धी होकर नेताओं के पीछे चलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती है ।

महेन्द्रपाल—कभी ऐसी बात थी, मगर अब जनता जाग गयी है । वह अपना भला-बुरा समझती है ।

अजयप्रताप—खाक समझती है ! जनता अपने अधिकारों को पहचानती ही नहीं, कुँवर साहब ! मिसाल के तौर पर 'वोट' के अधिकार को लीजिये । गाँव के लोगों के लिये चुनाव एक तमाशे की तरह हैं । शहरों में भी अपने वोट का सही इस्तेमाल करने वाले लोग उँगलियों पर गिने जा सकते हैं ।

महेन्द्रपाल—एक सवाल पूछूँ ?

अजयप्रताप—एक क्या, सौ पूछिये !

महेन्द्रपाल—आपकी यह कोठी कितने समय में गिरायी जा सकती है ?

अजयप्रताप—यही, एक दो दिन में !

महेन्द्रपाल—और फिर इसी तरह की कोठी तैयार होने में कितना समय लगेगा ?

अजयप्रताप—(हँसकर) सालों लग जायेंगे, साहब, सालों !

महेन्द्रपाल—ठीक है । इसी तरह यह समझ लीजिये कि पुरानी व्यवस्था की इमारत गिर तो बहुत थोड़े समय में गयी है, मगर नयी व्यवस्था का भवन बनने में समय लगेगा । काम हो रहा है, ईंट पर ईंट रक्खी जा रही है ।

अजयप्रताप—(हँसकर) आपने तो कमाल कर दिया, कुँवर साहब ! मैं तो समझा था, आप किसी और मंशा से सवाल कर रहे हैं ।

विजयप्रताप—(प्रशंसा के स्वर में) आपसे परिचित होना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ, कुँवर साहब !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल—धन्यवाद ! (मुस्कराकर) आप भी तो अजीब हस्ती हैं, मिस्टर !

[तीनों हँसते हैं]

अजयप्रताप—राजा साहब तो आपकी बातें सुनकर खूब हँसते होंगे।

महेन्द्रपाल—जी, हाँ ! उन्होंने समय की पुकार सुन ली है।

अजयप्रताप—वे हीरा हैं, हीरा ! मुझे तो छोटे भाई की तरह मानते हैं।

[अन्दर से माधुरी आती है]

माधुरी—(अजयप्रताप के पास बैठकर) किसके बारे में बातें हो रही हैं ?

अजयप्रताप—राजा साहब की तारीफ कर रहा था।

माधुरी—वे तो देवता हैं, देवता ! कुँवर साहब भी एकदम उन्हीं पर पड़े हैं।

[माधुरी मुस्कराकर महेन्द्रपाल की ओर देखती है। महेन्द्रपाल विजयप्रताप की ओर देखने लगता है।]

अजयप्रताप—कुँवर साहब, मैं कुछ देर पहले यह कह रहा था कि जमींदारी छीनकर सरकार ने हमारी रोटी छीन ली। और कोई काम हमसे हो नहीं सकता। खर्चे पहले की तरह ही अनाप-शनाप हैं। आमदनी का कोई जरिया नहीं। समझ में नहीं आता क्या करूँ ? आपके कर्ज का बोझा है सो अलग।

माधुरी—ऊँह, तुम भी क्या रोना लेकर बैठ गये ? कुँवर साहब कोई तगादा थोड़े ही कर रहे हैं।

अजयप्रताप—यह तो ठीक है, माला की माँ ! मगर हमें अदा करने का उपाय तो करना है। आखिर कब तक राजा साहब सब्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये बैठे रहेंगे ?

[महेन्द्रपाल और विजयप्रताप मौन रहते हैं]

माधुरी—राजा साहब के कर्ज से भारी बोझ तो बेटी के ब्याह का है। राजा साहब तो साल-दो-साल तक रुक भी सकते हैं, मगर बेटी को कब तक घर में बैठाये रहोगे ? (महेन्द्रपाल की ओर मुंह करके) मैं झूठ कह रही हूँ, कुँवर साहब ?

महेन्द्रपाल—आप ठीक कह रही हैं ! पहले बेटी का ब्याह, बाद में और कुछ (विजयप्रताप से) ठीक है न ?

विजयप्रताप—आप सोलह आने सच कह रहे हैं, कुँवर साहब !

माधुरी—(प्रसन्न होकर अजयप्रताप से) कितने समझदार और नेक हैं, कुँवर साहब ! (महेन्द्रपाल से) हम जल्द से जल्द माला के हाथ पीले करना चाहते हैं, कुँवर साहब ! आपको कोई···

महेन्द्रपाल—(बीच में ही) मुझे क्या एतराज हो सकता है ?

माधुरी—मैंने पण्डित से सायत निकलवायी है। अगले हफ्ते ही बहुत अच्छी लगन है।

महेन्द्रपाल—यह तो और भी ठीक रहा। (विजयप्रताप से) है न ?

विजयप्रताप—बिलकुल ठीक ! शुभ कार्य में देरी का क्या काम ?

[माधुरी हर्ष-विभोर होकर अजयप्रताप की ओर देखती है। अजयप्रताप भी प्रसन्न हैं।]

माधुरी—तो राजा साहब को तार दे दूँ···?

महेन्द्रपाल—उन्हें तार देने की क्या जरूरत है ? मियाँ-बीवी राजी, तो क्या करेगा काजी ?

[सब हँस पड़ते हैं]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजयप्रताप––आप वाकई बहुत नये विचारों के आदमी हैं। सही भी है, जब दोनों ने एक दूसरे को पसन्द कर लिया है तो हम बूढ़ों को बीच में पड़ने की क्या जरूरत है ?

[बाहर से सतीश आता है। वह साफ पेंट और बुशशर्ट पहने है। बाल भी ठीक से सँवारे गये हैं। उसे देखकर अजयप्रताप की भौंहें तन जाती हैं।]

अजयप्रताप––(कठोर स्वर में) तुमने फिर आने की जुर्रत कैसे की ?

सतीश––मुझे कुँवर साहब ने आमंत्रित किया है।

[अजयप्रताप महेन्द्रपाल की ओर देखते हैं]

महेन्द्रपाल––सतीश को मैंने बुलाया है, ठाकुर साहब ! (सतीश से) आओ, बैठो !

[सतीश महेन्द्रपाल के पास बैठ जाता है। अजयप्रताप और माधुरी के चेहरों पर असन्तोष की झलक है। विजयप्रताप के अधरों पर मन्द मुस्कान है। अजयप्रताप और माधुरी सतीश की ओर घूरते हैं और मौन बैठे रहते हैं।]

महेन्द्रपाल––हाँ, तो यह जानकर खुशी हुई कि आप मेरे विचारों की कद्र करते हैं, ठाकुर साहब ! (माधुरी से) अच्छा हो, मँगनी की रस्म अभी पूरी हो जाये।

माधुरी––(चौंककर) हाँ, हाँ, अभी लीजिये। (ऊँचे स्वर में) माला, बेटी माला ! यहां तो आ जरा !

[बाहर से छड़ी टेकते हुए नवाब यूसुफ आते हैं। उनकी वेश-भूषा प्रथम अंक की ही तरह है।]

अजयप्रताप––आइये, नवाब साहब, आइये ! अच्छे वक्त पर तशरीफ लाये।

नवाब यूसुफ––(क़ोच पर बैठकर) शुक्रिया, ठाकुर साहब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्रिया ! (महेन्द्रपाल से) राजा साहब का मिजाज तो ठीक है ?

महेन्द्रपाल––आपके तुफैल से सब ठीक है, नवाब साहब ! आप तो सालों से तशरीफ नहीं लाये। राजा साहब आपको अक्सर याद करते हैं।

नवाब यूसुफ––यह उनकी इज्जतअफजाई है, कुँवर साहब ! (अजयप्रताप से) हाँ, ठाकुर साहब, आप फरमा रहे थे कि मैं ठीक वक्त पर आया ! क्या शतरंज बिछने वाली है ?

अजयप्रताप––(हँसकर) माला की शादी तय हो गयी है। मँगनी की रस्म पूरी होने वाली है।

नवाब यूसुफ––मुबारक हो, ठाकुर साहब, मुबारक हो ! (माधुरी से) अब तो मुँह मीठा करायेंगी, भाभी साहिबा ?

माधुरी––(मुस्कराकर) मीठे के साथ-साथ नमकीन भी मिलेगी, नवाब साहब !

नवाब यूसुफ––शुक्रिया, भाभी साहिबा, शुक्रिया ! दर असल आज मुझे भूख भी कस कर लगी है।

[सब हँसते हैं। अन्दर से माला और शालिनी आती हैं। दोनों रेशमी वस्त्र पहने हैं। दोनों अजयप्रताप के कोच के पीछे खड़ी हो जाती हैं।]

माधुरी––कुँवर साहब, अब देर न कीजिये। नवाब साहब के पेट में चूहे कूद रहे होंगे।

[नवाब यूसुफ हँसने लगते हैं]

महेन्द्रपाल––अभी लीजिये ! (सतीश से) माला को अँगूठी पहना दो, सतीश !

[सतीश बुशशर्ट की जेब से अँगूठी निकालकर माला की ओर बढ़ता है]

अजयप्रताप––(उठकर गरजते हुए) यह क्या हिमाकत है ?

[सतीश माला को अँगूठी पहना देता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्रपाल––(उठकर) मँगनी की रस्म पूरी हो गयी, ठाकुर साहब !

माधुरी––(कोच से उठकर) यह क्या मजाक कर रहे हैं, कुँवर साहब ?

महेन्द्रपाल––इसमें मजाक की क्या बात है ? माला और सतीश की सगाई तय हो गयी ।

अजयप्रताप––(दहाड़कर) मेरी बेटी की शादी इस कंगले से होगी ? (सतीश से) इससे पहले कि मैं तेरा गला घोंट दूँ, दूर हो जा मेरी नजरों से !

महेन्द्रपाल––(आगे बढ़कर) क्रोध करने से कोई लाभ नहीं है, ठाकुर साहब ! माला और सतीश एक दूसरे को चाहते हैं। आप कह चुके हैं कि जब दोनों ने एक दूसरे को पसन्द कर लिया है तो हमें बीच में पड़ने की क्या जरूरत है ।

अजयप्रताप––मैं नहीं जानता था कि यह छोकरी मेरी इज्जत लेने पर उतारू है । अभागी, तू पैदा होते ही मर क्यों न गयी ?

माला––बाबूजी, मुझे मुँह खोलने पर मजबूर न कीजिये !

अजयप्रताप––मुझसे जुबान लड़ाती है ? तेरी यह हिम्मत ?

[मारने के लिये हाथ उठाते हैं]

विजयप्रताप––दादा···!

महेन्द्रपाल––(हाथ पकड़कर) ठाकुर साहब, सयानी औलाद पर हाथ उठाना ठीक नहीं। माला बालिग है और कानून के अनुसार वह जिससे चाहे शादी कर सकती है ।

अजयप्रताप––(झुँझलाकर) मेरे घर में मेरी इच्छा ही कानून है । (माला से) कलमुँही, डूब मर कहीं जाकर ! समझ लूँगा मेरे एक ही लड़की थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयप्रताप––(उठकर अजयप्रताप की ओर बढ़ता हुआ) दादा, माला अब बच्ची नहीं है। वह अपना भला-बुरा समझती है।

माधुरी––मैं जानती हूँ, यह आग तेरी ही लगायी हुई है। खुद तो वंश के नाम पर काला दाग लगा ही चुका है, चाहता है माला भी···

शालिनी––(बीच में ही) इन्होंने कुल पर बट्टा नहीं लगाया। (विजयप्रताप से चुनौती के स्वर में) कह क्यों नहीं देते कि तुम निर्दोष हो, किसी दूसरे को बचाने के लिये तुमने बदनामी का टीका अपने माथे पर लगा लिया है।

माधुरी––अरे यह क्या कहेगा? झूठ के भी कहीं जीभ होती है? (महेन्द्रपाल से) कुँवर साहब, हम आपके कर्जदार हैं, मगर इसका यह मतलब नहीं कि आप हमारी टोपी उछालें।

महेन्द्रपाल––आप मुझे गलत समझ रही हैं। जो कुछ हो रहा है इसी में आपकी बेटी का हित है।

माधुरी––अपनी बेटी का हित-अहित हम खूब समझते हैं।

महेन्द्रपाल––आपकी आँखों पर स्वार्थ का पर्दा पड़ा है। आप अपनी बेटी की भावनाओं और इच्छाओं का गला घोंट कर उसकी शादी मुझसे करना चाहती थीं! क्यों? इसीलिये न, कि आपको राजा साहब का···

माधुरी––(बीच में ही) अगर आपको हमारी माला पसन्द न थी तो शादी से मना कर देते। यह स्वाँग क्यों रचा? हमारी बेटी के लिये भले घर के लड़कों की कमी नहीं है।

विजयप्रताप––सतीश में क्या बुराई है?

[माधुरी विजयप्रताप की ओर घूरती है]

अजयप्रताप––सुन रहे हैं, नवाब साहब? विजय पूछता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश में क्या बुराई है ? इसे भी खानदान की इज्जत का कोई ख्याल नहीं ! महल और झोंपड़ी का नाता कभी हुआ है कि आज ही होगा ?

नवाब यूसुफ—(**उठकर**) ठाकुर साहब, समझ में नहीं आता क्या कहूँ ? लगता है, जमाना हमें पीछे छोड़ काफी आगे बढ़ गया है। बेहतर यही है कि हम आगे बढ़ने वालों की राह में काँटे न बिछायें।

अजयप्रताप—आप भी बहकी-बहकी बातें करने लगे, नवाब साहब ?

नवाब यूसुफ—हकीकत को कब तक नज़रन्दाज किया जा सकता है ? कल भाईजान की दुख्तर का वाकया देखा, आज आपकी बेटी का देख रहा हूँ। मेरी सलाह मानिये और खुशी-खुशी बेटी का हाथ सतीश के हाथ में दे दीजिये।

अजयप्रताप—एक भिखमंगे को जमाई बनाने से पहले मैं सीने में गोली मार लूँगा, नवाब साहब ! मैं ठाकुर हूँ, ठाकुर !

[**अजयप्रताप आवेश में आकर अन्दर वाले द्वार की ओर बढ़ते हैं**]

विजयप्रताप—(**मार्ग रोककर**) हठधर्मी ठीक नहीं, दादा !

नवाब यूसुफ—(**अजयप्रताप के निकट जाकर**) जोश में न आइये, ठाकुर साहब ! जरा ठण्डे दिल से इस मसले पर गौर कीजिये। (**सतीश को सिर से पाँव तक देखकर**) अच्छा खासा नौजवान है। रही ज़र-ज़मीन की बात, सो अगर माला बेटी की किस्मत होगी तो झोंपड़ी ही महल बन जायेगी।

अजयप्रताप—नवाब साहब, आप ठीक कहते थे। नालायक सन्तान से तो औलाद का न होना ही अच्छा है। (**कंठ रुँध जाता है**)

नवाब यूसुफ—ठाकुर साहब, वक्त के साथ हमें भी बदलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। हमारे तौर-तरीकों की दीवार खोखली हो गयी है। बूढ़े हाथ गिरती हुई दीवार को कब तक साधे रह सकते हैं? उसका गिर जाना ही बेहतर है। उसकी जगह इन नये हाथों को नयी दीवार बनने दीजिये। (घड़ी की ओर संकेत करके) उस घड़ी की तरफ देखिये। चौखटा सुइयों को कैद किये है मगर वह उनकी रवानी नहीं रोक सकता। इसी तरह हम भी जमाने की रफ़्तार नहीं रोक सकते।

ग्रजयप्रताप—(दुःखी स्वर में) नवाब साहब!

नवाब यूसुफ—समझदारी से काम लीजिये, ठाकुर साहब! जिद ठीक नहीं। नयी इन्सानियत के इन नये हाथों को तहतीब ग्रौर समाज के पतवार लेने दीजिये। इन्हें मशाल लेकर ग्रँधेरे में भटकने वालों को नयी रोशनी दिखाने दीजिये। मेरी तो यही राय है। ग्रागे ग्रापकी मर्जी! ग्रच्छा, ग्रब इजाजत चाहता हूँ। ग्रादाब ग्रर्ज़!

[नवाब यूसुफ छड़ी टेकते हुए बाहर जाते हैं]

विजयप्रताप—नवाब साहब ठीक कह रहे थे, दादा! समय के साथ ग्रादर्श ग्रौर सिद्धान्त भी बदलते रहते हैं।

माधुरी—तू चुप रह। बड़ा दादा का सगा बनकर ग्राया है।

विजयप्रताप—भाभी…

माधुरी—तू तो हमारा काल बन गया है, काल! ग्रगर तुझे फाँसी हो जाती तो ग्रच्छा होता।

शालिनी—(विजयप्रताप के पास जाकर) सुन रहे हो? कायरता की भी सीमा होती है।

माला—(ग्रागे बढ़कर) मैं जानती हूँ, चाचा जी कुछ नहीं कहेंगे। (ग्रजयप्रताप से) बाबूजी, ग्रापकी दृष्टि में मैं कलमुँही हूँ, ग्रभागिन हूँ, पापिन हूँ। क्यों? इसीलिए न कि मैं सतीश को चाहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ और सतीश गरीब है, अनाथ है। अगर उसके पास पैसा होता तो आपको कोई आपत्ति न होती। आपकी नज़र में पैसा सब कुछ है, चरित्र कुछ नहीं ?

माधुरी--(डाँटकर) माला...!

माला--(उसी मुद्रा में) आप कहते हैं कि मैं खानदान की इज्जत धूल में मिला रही हूँ। माँ जी कहती हैं कि चाचाजी ने कुल के नाम पर बट्टा लगाया। मगर मैं कहती हूँ कि न चाचाजी ने कोई पाप किया है और न मैं कर रही हूँ।

माधुरी--(कड़ककर) जुबान बहुत खुल गयी है तेरी ?

माला--इस ज़ुबान पर अब ताला नहीं लग सकता, माँ ! (माला हाँफने लगती है) बाबू जी, पापी हम नहीं हैं। अपने हृदय से पूछिये, पाप किसने किया है।

[माला लड़खड़ाती हुई अन्दर जाने के लिए द्वार की ओर बढ़ती है। शालिनी बढ़कर उसे सँभालती हुई अन्दर ले जाती है। महेन्द्रपाल का संकेत पाकर सतीश भी अन्दर चला जाता है।]

माधुरी—और चढ़ा लो बेटी को सिर पर ! सुन लिया ? भाई के लक्षण देख चुके, अब बेटी के भी देख लो।

अजयप्रताप—(भारी स्वर में) माला ठीक कहती है। पापी विजय और माला नहीं, मैं हूँ !

विजयप्रताप--(विरोध के स्वर में) दादा......!

अजयप्रताप--आज सत्य पर पड़े झूठ के पर्दे को उठाकर ही रहूँगा। (माधुरी से) माला की माँ, मुझे बदनामी से बचाने के लिए विजय ने सारा दोष अपने सिर ले लिया था। कई बार चाहा कि तुम्हें सच्ची बात बता दूँ, मगर बुज़दिली मुँह पर ताला लगा देती थी। (भीगे स्वर में) पापी और हत्यारा मैं हूँ। कुल के नाम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बट्टा विजय ने नहीं, मैंने लगाया है । मैं बहुत बड़ा पापी हूँ। (सिसकी दबाकर) मुझे भगवान भी माफ नहीं करेगा।

[माधुरी हतप्रभ-सी हो जाती है । उसके चेहरे पर वेदना के भाव उभरते हैं।]

माधुरी—(धीमे स्वर में) काश ! तुम यह पहले ही बता देते। (विजय से) विजय, तुम्हें दोषी जानकर बहुत भला-बुरा कहा है। माफ कर देना, भैया !

[माधुरी थकी-सी कोच पर बैठ जाती है]

अजयप्रताप—मेरे पाप का बोझ ढोकर तुमने बहुत कष्ट उठाये, विजय ! मैं······मैं······(गला अवरुद्ध हो जाता है)।

विजयप्रताप—बीती बातों को भूल जाना ही ठीक है, दादा !

महेन्द्रपाल—भूल करना मनुष्य की कमजोरी है, ठाकुर साहब, और उसे स्वीकार कर लेना उसकी शक्ति । अतीत को भुलाकर भविष्य की ओर देखिये । सच्चे मन से माला और सतीश को आशीर्वाद दीजिये।

अजयप्रताप—आप ठीक कहते हैं, कुँवर साहब ! भगवान दोनों को सुखी रक्खे, यही प्रार्थना है।

महेन्द्रपाल—अब आप इस सम्बन्ध से दुखी तो नहीं हैं ?

अजयप्रताप—मुझे लज्जित न कीजिये, कुँवर साहब ! आँखों पर पड़ा हुआ पर्दा उठ गया है। मैं खुश हूँ, बहुत खुश हूँ।

महेन्द्रपाल—(माधुरी से) लेकिन आप अभी तक अप्रसन्न हैं। घबराइये मत । आप जिस मंशा से माला की शादी करना चाहती थीं वह अब भी पूरी हो जायेगी । (विजयप्रताप की ओर गूढ़ दृष्टि डालकर) मैं समझता हूँ, मेरी बहन शालिनी बहुत जल्द ही इस घर में बहू बन कर आ जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[माधुरी और अजयप्रताप विजयप्रताप की ओर देखते हैं । वह मुस्करा कर सिर झुका लेता है । अजयप्रताप के मुख पर प्रसन्नता नाच उठती है ।]

महेन्द्रपाल—(माधुरी से) हमारी बहन काफी दहेज लायेगी और हो सकता है कि राजा साहब कर्ज का रुपया भी……

अजयप्रताप—(बीच में ही) हमें और लज्जित न कीजिये, कुँवर साहब ! कर्ज चुकाने के लिए यह कोठी ही काफी है ।

महेन्द्रपाल—मगर यह तो पूर्वजों की……

अजयप्रताप—तो क्या हुआ ? अभी तक झूठी मर्यादा और सड़ी-गली मान्यताओं को उसी तरह सीने से लगाये था जैसे मोहवश बँदरिया अपने मरे बच्चे को चिपकाये रहती है । अब आँखें खुल गयी हैं, कुँवर साहब !

महेन्द्रपाल—मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई । (रुककर मुस्कराते हुए) अब मैं भी आप सबकी शुभकामना चाहता हूँ । मैंने भी शादी करने का फैसला किया है ।

विजयप्रताप—किससे ?

महेन्द्रपाल—(ऊँचे स्वर में) बालो !

[बालो तत्काल प्रवेश करके महेन्द्रपाल के पास खड़ी हो जाती है]

महेन्द्रपाल—यह है मेरी भावी पत्नी ।

विजयप्रताप—(हँसकर) बधाई, कुँवर साहब ! जोड़ी अच्छी है ! (बालो से) अरे बालो, कौन-सा जादू कर दिया तूने कुँवर साहब पर ?

माधुरी—(उठकर विरोध के स्वर में) मगर……मगर……यह कैसे हो सकता है ? राजा साहब क्या कहेंगे ? (बालो से) क्यों री, कुँवर साहब पर डोरे डालते शर्म नहीं आयी ? जिस पत्तल में खाती है उसी में छेद कर दिया, डायन !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो—(अकड़कर) जरा ठीक से बात कीजिये। मैं राजा साहब की होने वाली बहू हूँ।

माधुरी—(हाथ नचाकर) अ हा हा! यह मुँह और मसूर की दाल! बाप तक का तो ठीक नहीं और सपना देखती है राजा साहब की बहू बनने का।

अजयप्रताप—क्यों हाथ धोकर पड़ी हो बेचारी के पीछे? हमें तो खुश होना चाहिए कि माला के साथ-साथ इसका भी······

माधुरी—(बीच में ही) तुम्हारा तो सिर फिर गया है। कहाँ कुँवर साहब और कहाँ बालो? राजा भोज और गँगुआ तेली का कैसा नाता······?

महेन्द्रपाल—मैं ऊँच-नीच, जाति-पाँति में विश्वास नहीं करता। मेरे लिए सब मनुष्य समान हैं।

माधुरी—लेकिन जरा सोचिये तो। जिसके बाप तक का······

बालो—(बीच में ही) मेरे बाप का पता आपको न हो, पर मुझे है। (महेन्द्रपाल से) कुँवर साब, मुझमें भी ठाकुर का खून है। अगर माला बीबी राजा साहब की बहू बन सकती थीं तो मैं भी बन सकती हूँ।

माधुरी—अपनी औकात न भूल! हमारे ही टुकड़ों पर पलकर हमारी बराबरी करती है!

अजयप्रताप—बालो ठीक कहती है, माला की माँ! उसकी रगों में भी ठाकुर का खून है।

माधुरी—(विस्मय से) यह क्या कह रहे हो?

अजयप्रताप—ठीक कह रहा हूँ। (महेन्द्रपाल से) कुँवर साहब, बालो मेरी ही बेटी है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[बालो 'बाबू जी' कहकर अजयप्रताप से चिपट जाती है । महेन्द्रपाल के अधरों पर मुस्कान है । विजयप्रताप सिर झुका लेता है । माधुरी 'हे भगवान' कहकर कोच पर धड़ाम से बैठ जाती है ।]

अजयप्रताप--सालों से तुझे बेटी कहकर सीने से लगाने के लिए तड़फ रहा था । आज आत्मा को शान्ति मिली है । बेटो, भगवान जानता है, मैंने माला और तुझमें कभी अन्तर नहीं माना । तेरी शादी माला से भी अधिक धूमधाम के साथ करूँगा । आज मैं खुश हूँ, बेटी, बहुत खुश हूँ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

SAMPLE STOCK VERIFICATION
1988
VERIFIED BY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रोचक नाट्य-साहित्य

विष-पान	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
उद्धार	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
शपथ	(सांस्कृतिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
छाया	(सामाजिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.००
शतरंज के खिलाड़ी	(ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
समर्पण	(सामाजिक)	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२.००
शक-विजय	(ऐतिहासिक)	उदयशंकर भट्ट	१.७५
उर्मिला	(ऐतिहासिक)	पृथ्वीनाथ शर्मा	१.००
सुभद्रा-परिणय	(पौराणिक)	वीरेन्द्रकुमार गुप्त	२.५०
शक्ति-पूजा	(पौराणिक)	वी० मुखर्जी 'गुंजन'	१.५०
शान्ति-दूत	(पौराणिक)	देवदत्त 'अटल'	१.५०
मानव प्रताप	(ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
यशस्वी भोज	(ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
हर्षवर्धन	(ऐतिहासिक)	वैकुण्ठनाथ दुग्गल	१.००
समुद्रगुप्त	(ऐतिहासिक)	वैकुण्ठनाथ दुग्गल	२.००
पग-ध्वनि		आचार्य चतुरसेन शास्त्री	१.५०
वितस्ता की लहरें	(ऐतिहासिक)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
बहू-बेटी	(पारिवारिक)	श्रीकृष्ण	०.७५
समाज के स्तम्भ	(अनूदित)	सीताचरण दीक्षित	२.५०
भूमि कन्या सीता	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
कला के लिए	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
अ-पूर्व बंगाल	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
कोरी करामात	(अनूदित)	भा० वि० वरेरकर	२.००
रेलगाड़ी के डिब्बे	(एकांकी)	अरुण, एम० ए०	२.००
बादलों के पार	(एकांकी)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.००
आदिम-युग और अन्य नाटक	(एकांकी)	उदयशंकर भट्ट	४.००
सफ़र की साथिन	(एकांकी)	रामशरण शर्मा	२.००
एकांकी समुच्चय	(एकांकी)	जयनाथ 'नलिन'	३.००
भगवान मनु तथा अन्य एकांकी	(एकांकी)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०
विश्वामित्र और दो भाव-नाट्य		उदयशंकर भट्ट	३.००
आनन्द का राजपथ		सीताचरण दीक्षित	२.२५
नए हाथ	(सामाजिक)	विनोद रस्तोगी	३.००
उधार का पति	(हास्य)	वनमाला भवालकर	१.००
अभिज्ञान शाकुन्तल	(अनूदित)	इन्दुशेखर	३.००

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar